सार-संसार

वर्ष : 17 पूर्णांक : 65 जनवरी-मार्च 12 अंक : 1

मुख्य संपादक
अमृत मेहता

हमारी वेबसाइट
www.saarsansaar.com
Emil : literature@saarsansaar.com

मूल्य :
एक प्रति : 20 रुपये
वार्षिक : 80 रुपये

Subscription
Single Copy : Rs. 20.00
Annual : Rs. 80.00

प्रकाशक	:	**अमृत मेहता** जे-3/सी, लाजपत नगर-III नई दिल्ली-110024
मुख्य संपादक	:	अमृत मेहता
प्रकाशन अवधि	:	त्रैमासिक
मुद्रक	:	कौशिक प्रिन्टर्स, दिल्ली
मूल्य	:	20 रुपये : (एक प्रति) 80 रुपये : (वार्षिक)

Published by
Amrit Mehta
at
J-3/C, Lajpat Nagar III
New Delhi - 110024

संपादक मंडल

इंदूमजलदान
माता सुंदरी कालेज, दिल्ली
एस.ए. रहमान
जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
रिज़वानुर रहमान
जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
देवेन्द्र सिंह रावत
जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
अखलाक अहमद 'आहन'
जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
मरीना पुलियानो
वीया कामालदोली, 26
50124 फ्लोरेंस, इटली
डागमार मारकोवा
भारतविद्या विभाग
प्राग यूनिवर्सिटी
प्राग (चेक गणराज्य)

अनुवादक-परिचय

अमृत मेहता
जे-3/सी, लाजपत नगर III
नई दिल्ली110024
शिप्रा चतुर्वेदी
2/215, विकास खंड,
गोमती नगर, लखनऊ226010
स्वाति यादव
724, सेक्टर 4
रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली110067
शारदा यादव
केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय,
रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली110067

चिट्ठी आई है...

आपके द्वार प्रेषित पत्रिका 'सार-संसार' का अप्रैल-जून 11 अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका के 16 वें वर्ष में प्रवेश करने पर हार्दिक बधाई। दफ्तर , लैला तथा एक और दलित उपन्यास पढ़कर अच्छा लगा। अनुवाद के द्वारा विभिन्न देशों के उपन्यासों से परिचय अपनी भाषा में होती है। कृपया लिफाफे पर पता हिन्दी में लिखवाने की व्यवस्था करें तथा 'केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद' नाम का अनुवाद न करें, और पार्लियामेंट स्ट्रीट अब सभी भाषाओं में संसद मार्ग हो गया है।

डॉ. निर्मल सिंहल, संपादक, जनभाषा संदेश, नई दिल्ली

आपकी त्रैमासिक पत्रिका "सार संसार" प्रथम बार देखकर बहुत ही प्रसन्नता हुई। हमारी शुभ तारिका के 39 वर्षों में सार संसार हमें देखने को नहीं मिली। हालांकि यह भी सोलह वर्षों से प्रकाशित हो रही है। खैर, अब इसे आपने हम तक पहुंचाया है, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। दुनियाभर के साहित्य की विशिष्ट कहानियों को आप सार संसार के माध्यम से हिन्दी लेखकों तक पहुंचा रहे है। कहानियों का चयन और उनका हिन्दी अनुवाद शुद्ध हिन्दी में इस पत्रिका में पढ़ने को मिला। इन कहानियों के माध्यम से दूसरे देशों की संस्कृति और लेखक की पहचान हिन्दी पाठकों को हो जाती है। ऐसी पत्रिका निकालने के लिये आप बधाई के पात्र हैं। हमारे संस्थान की भी एक सदस्या है जो अंग्रेजी कहानियों तथा अन्य रचनाओं का हिन्दी अनुवाद करती हैं। हमारे लिये भी करती हैं। आपकी पत्रिका का परिचय उन्हें भी दूंगी। हमारी पत्रिका शुभ तारिका आपको भिजवा रही हूं। आशा करती हूं कि सार संसार अब हमें नियमित मिलता रहेगा।

आपने संपादकीय में बुद्धिजीवी भ्रष्टाचार की बात उठाई है। भ्रष्टाचार तो आज के समय की ऐसी काजल की कोठरी है जिसकी रेख से बचना मुश्किल है। पुनः आपको तथा आपके सहयोगियों को, सार संसार के लेखकों को, मेरी बधाई एवं साधुवाद।

उर्मि कृष्ण, संपादक, शुभ तारिका, अम्बाला

सार-संसार का जुलाई-सितम्बर, 2011 का अंक प्राप्त हुआ। हिंदी पाठकों को जर्मन तथा अनेक अन्य विदेशी भाषाई साहित्य से परिचय कराने का आपका चिरनिरन्तर प्रयास सिर्फ प्रशंसनीय है कहूँ तो न्यायोचित नहीं होगा। इसकी प्रशंसा के लिए शब्द भी कम पड़ रहे हैं। इस प्रकार की पत्रिका अनवरत रूप से निकाल पाना भी अपने आप में एक भागीरथ प्रयास वाली बात ही कहलाएगी। जैसा कि आपने संपादकीय में लिखा कि पत्रिका ने अब तक 61 नए अनुवादकों को जन्म देकर अपनी हीरक जयंती को पार किया है तथा लेखक मार्टिन आर डीन पत्रिका में अनुदित होने वाले 200 वें लेखक हैं, ये बातें अपने आप में इस पत्रिका की सार्थकता को साबित करती हैं। आपकी इस महान उपलब्धि के लिए हमारी ओर से अनेक बाधाइयां। सार-संसार लगातार हमें उपलब्ध करने के लिए धन्यवाद।

आर चन्द्रशेखर, संपादक, जिज्ञासा, हैदराबाद

'आकंठ' पत्रिका के सम्पादक। श्री हरिशंकर अग्रवाल ने सार-संसार के कुछ पिछले अंक दिये। पत्रिका के शीर्षक एवं विषयवस्तु से ज्ञात हुआ कि विश्वसाहित्य की झलकियों को 'गागर में सागर' के मानिंद भर दिया है। सूक्ष्म में विराट के दर्शन होते हैं।

आप भी एक अनुभवी अनुवादक तैं। बड़ा श्रमसाध्य कर्म तै। अनुवाद खंड ने मुझे भी प्रेरित किया। मैंने भी अंग्रेजी से हिन्दी में अनेक कवियों को अनूदित किया है। आकंठ पत्रिका में भी एक नयी शुरुआत की है। पत्रिका में प्रकाशित हिन्दी कविताओं का अंग्रेजी रूपान्तरण किया है। अभी तक 6 अंकों का सम्पादक कर चुका हूँ।

एम एस पटेल, पिपरीया

'सार संसार' मिली। धन्यवाद। उसे हमारे विशाल वाचनालय में पाठकों के लाभार्थ भेज दि है।

भगवती प्रसाद देवसर, श्रीनाथ द्वारा

जोधपुर से प्राकृतिक चिकित्सा का स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के बाद वाराणसी लौटने पर आप द्वारा प्रेषित 'सार-संसार' का जुलाई-सितम्बर 2011 अंक प्राप्त हुआ, आभारी हूँ।

हिन्दी साहित्य को सुदृढ़ करने में अनूदित साहित्य का अवदान अतुलनीय है। आप इस कार्य को भलीभाँति कर रहे हैं, यह प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

'हिन्दी प्रचारक पत्रिका' में उक्त अंक की चर्चा की जाएगी। हमने मेलिंग लिस्ट में भी आपका पता दर्ज करवा दिया है।

विजय प्रकाश बेरी, संपादक, हिंदी प्रचारक पत्रिका, वाराणसी

आपकी भेजी हुई पत्रिका सार-संसार पढ़ी अनेक धन्यवाद। आपने लेखकों की भीड़ में से मुझे ढूढ निकाला। मैं हैरान हुई, प्रभावित हुई, प्रसन्न हुई। छोटी सी पत्रिका है, लेकिन इसमें सचमुच समस्त संसार का सार है। समुद्र पार के लोग क्या लिखते हैं, क्या सोचते हैं, यह जानना भी जरूरी है। कभी-कभी हम एक जैसा सोचते हैः कभी बिल्कुल अलग तरह का। बहुत ही सराहनीय प्रयास है। मुझे तो पता भी नहीं था कि सार-संसार जैसी पत्रिका इतने सालों से सक्रिय है।

कुछ रचनाऐं चौकांती है, उद्वेलित करती हैं। हम सोचते हैं क्या ऐसा भी होता है दुनिया में, वे लोग सार्थक हैं, जो अपने समाज की विकृतियों को सामने लाते हैं।

सत्यप्रिय शहर, हममें अपनी दुनिया के प्रति मोह जगाता है। जैसी भी है ठीक है, उतनी बुरी नहीं। गांधी पर लिखी कविता सुन्दर है। गांधी का सन्देश दूर दूर तक पहुंचा। अपने समय का एक अनोखा मनुष्य। सबसे अलग!

'एक्टी' बिल्कुल अलग किस्म की चीज है। स्वीनिया के कुत्तारखोर सोचने को मजबूर करती है। 'एक और दलित' अमानवीय व्यवस्था और समाज की तस्वीर पेश करता है। सभी

रचनाएं पठनीय हैं। अनुवाद में कहीं कहीं अटपटे शब्द खटकते हैं, वे जुवान पर नहीं चढ़ सकते!

फिर से धन्यवाद देती हूँ, और सार-संसार से जुड़ना चाहूँगी - आशा है भविष्य में भी पढ़ने के लिए भिजवाएंगे।

चमेली जुगरान, दिल्ली

सम्पादक की कलम से...

2012 का यह प्रथम अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मैं उन्हें नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। जनवरी-मार्च 2012 के इस अंक में तीन जर्मन रचनाएँ हैं, जीगफ्रीड लेंत्स की एक लंबी कहानी, दो उपन्यास अंश, एक तो ग्युंटर वलरफ्फ के हमारे धारावाहिक उपन्यास ''और एक दलित'' से, और दूसरा आन्द्रेआस केल्लेटाट के ''उस आदमी से उस आदमी तक'' से। दो स्लोवाक रचनाएँ हैं, एक कहानी याना बोदरानोवा की और एक उपन्यास अंश जोसेफ बानाश के उपन्यास ''तानाशाहों की जयजयकार'' से। इन के अलावा हमारा धारावाहिक ''बेलग्रेड में बमबारी और मार्शल ला के दिन'' दूशन वेलिच्कोविच द्वारा एक स्विस कहानी क्रिस्टीना बुख़रयुल्लर की है।

सामाजिक तथा बुद्धिजीवी भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में मैं अपने सम्पादकीय में अपने पाठकों के समक्ष एक साहित्यिक घोटाले का परदाफाश करना चाहूँगाः

भारतीय साहित्यकार को नोबेल पुरस्कार?

जिस दिन टीवी पर 2011 का साहित्य नोबेल पुरस्कार स्वीडी कवि टोमास ट्रांस्त्र्योमर को मिलने का समाचार प्रसारित हुआ, साथ के साथ नीचे एक पट्टी दौड़ रही थी, ''सचिदानंदन नोबेल की दौड़ में पिछड़ गए''। मनोनीत किये गए 18 उम्मीदवारों में वह एक थे। लेकिन सचिदानंदन?!!! टैगोर को यह पुरस्कार 1913 में मिला था। इस बीच प्रेमचंद को नहीं मिला; निराला, प्रसाद, सुमित्रानंदन पन्त, महादेवी वर्मा, मैथिली शरण गुप्त, अज्ञेय, हरिवंश राय बच्चन, मुक्तिबोध को भी नहीं मिला। अन्य भारतीय भाषाओं के गणमान्य लेखकों पर दृष्टिपात करें तो शरत चन्द्र चैटर्जी, बंकिमचन्द्र, बिमल मित्र, शेषेन्द्र शर्मा, अनन्तमूर्ति, रामचंद्र रथ, सीताकांत महापात्रा, श्री श्री, मंटो, कृष्णचंद्र, राजिंदर सिंह बेदी और अन्य अनेकों सुपात्र लेखकों को भी नोबेल से सम्मानित नहीं किया गया। भारतीय मिथकों की गहरी पैठ तथा उस गूढ़ ज्ञान को शब्दबद्ध कर पाने की क्षमता के कारण तेलुगु कवि स्वर्गीय शेषेन्द्र शर्मा सिर्फ अपने आधुनिक काव्यशास्त्र ''कविसेना मेनिफेस्टो'' के बूते पर ही नोबेल के लिए एक बहुत गंभीर प्रत्याशी हो सकते थे, परन्तु वह प्रसिद्धि पाने की दौड़ में कभी नहीं रहे थे। नाईपाल को नोबेल मिला, परन्तु न वह भारतीय हैं, न ही उन्होंने अपनी पुस्तकें किसी भारतीय भाषा में लिखी हैं। अन्य बड़े-बड़े महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाले हिन्दुस्तानी जैसे अरुंधती राय, किरण देसाई इत्यादि अंग्रेजी में लिखने वाले हैं अर्थात् नोबेल साहित्य पुरस्कारों की व्यवस्था में हिंदी जैसी विश्व की महत्वपूर्ण भाषा का तो कोई स्थान है ही नहीं, फिर मलयालम का स्थान वहाँ होने की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। परन्तु महाकवि टैगोर भी तो बंगला में लिखते थे! उन्हें कैसे मिला? मिला ऐसे कि उनकी

रचनाओं के अंग्रेजी अनुवाद नोबेल समिति को उपलब्ध करवाए गए थे। यह और बात है कि ये अनुवाद, जैसा कि अपेक्षित था, किसी अंग्रेजी मातृभाषी ने नहीं किये थे, क्योंकि तब कोई अँगरेज ऐसा नहीं था, जो बंगला साहित्य का अंग्रेजी में अनुवाद कर पाता। अतः अनुवाद गुरुदेव ने स्वयं किये; यह सर्वविदित है कि ये अनुवाद पूर्णरूपेण संतोषप्रद नहीं थे, परन्तु फिर भी गुरुदेव को नोबेल मिला, जिसके वह निस्संदेह योग्य भी थे। नोबेल समिति ने पुरस्कार प्रदान करते समय गुरुदेव द्वारा स्वयं अपनी कविताओं का अनुवाद करने का उल्लेख भी किया थाः "अपने स्वयं के अंग्रेजी शब्दों में उन्होंने अपने काव्यात्मक चिंतन को पश्चिम के साहित्य का हिस्सा बना दिया है।" कहा जा सकता है कि भारतीय साहित्य के साथ एक बार न्याय हुआ, जो 98 साल तक फिर नहीं हुआ, क्योंकि भारतीय भाषाएँ स्वयं में ओस्लो के परमपावन परिसरों में कोई अहमियत नहीं रखतीं। यहाँ यह जानना जरूरी बन जाता है कि असंतोषजनक अंग्रेजी अनुवादों के बावजूद गुरुदेव को नोबेल से सम्मानित कैसे कर दिया गया। पहले यह जान लें कि पुरस्कार पाने योग्य साहित्यकारों को मनोनीत कौन कर सकता है?

यह जानने के लिए हमें पहले नोबेल पुरस्कार विजेता का चयन करने की प्रणाली से परिचित होना होगा। इस सन्दर्भ में जानकारी Oldenburg की Carl von Ossietzky University के Prof. Rajinder Singh (राजिंदर सिंह) की शोध पर आधारित है।
ये लोग नोबेल के लिए साहित्यकारों को मनोनीत कर सकते हैंः

1. स्वीडी अकादमी तथा अन्य ऐसी अकादमियों, संस्थाओं तथा समितियों के सदस्य, जिन के उद्देश्य अकादमी के समान हैं,
2. यूनिवर्सिटीयों तथा कॉलेजों के साहित्य तथा भाषाविज्ञान के प्रोफेसर,
3. वे लेखक, जिनको पहले नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है तथा
4. हर देश में साहित्य लेखन की प्रतिनिधि संस्थाओं के अध्यक्ष।

यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि किसी भी देश का कोई भी साहित्यकार किसी भी कॉलेज के साहित्य अथवा भाषाविज्ञान के प्रोफेसर से सिफारिश करवा कर सिद्धांततः मनोनीत होने के सोपान तक पहुँच सकता है। तो सचिदानंदन तो पूरे चारों मापदंडों के तहत एक बहुत खुशनुमा स्थिति में हैं। कुछ तो बात समझ में आती है कि भारत में पिछड़ने वालों की दौड़ में यह सब से अगाड़ी क्यूँ समझे जा रहे हैं।

टैगोर का नाम मनोनीत होने में सबसे महत्वपूर्ण पहलू उनकी यूरोप तथा अमेरिका के नामचीन साहित्यकारों से निकटता भी थी, जिसका अनुमान इसी से हो जाता है कि उनकी "गीतांजलि" के अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका डब्ल्यू. बी. यीट्स ने लिखी थी। कवि तथा संगीतज्ञ के रूप में महाकवि टैगोर की महानता पर कभी कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगा सकता, परन्तु नोबेल प्रदान करते समय गुरुदेव की केवल भारत में एक महान साहित्यकार के रूप में ख्याति उन्हें पुरस्कार दिलवाने में सफल न होती।

इस सन्दर्भ में मानना पड़ेगा कि सचिदानंदन ने स्वयं को न केवल अंग्रेजी, बल्कि अन्य विदेशी भाषाओं में भी अनूदित करवा कर स्वयं को "दिल्ली तथा केरला में विश्व

विख्यात" बना लिया है, अन्य भारतीय भाषाओं में तो खैर उनकी रचनाओं के अनुवादों की भरमार है ही। तमिल, हिंदी, बंगला में भी वह अनूदित हो चुके हैं, इसके अलावा फ्रेंच, जर्मन, इतालवी इत्यादि में भी अनूदित हो चुके हैं। सोने पर सुहागा यह कि खुद इन्होंने नोबेल पुरस्कार प्राप्त कर चुके या नोबेल के नजदीक पहुंचे हुए अनेकों सुप्रसिद्ध जर्मन, इतालवी, स्पेनी, पॉलिश, रूसी, अरबी, इजरायली साहित्यकारों की रचनाओं का मलयालम में अनुवाद कर रखा है। इनकी विदेश-यात्राओं का कोई हिसाब नहीं है। विदेश तो उदय प्रकाश और अलका सरावगी भी बहुत जाते हैं, खासकर जर्मनी, लेकिन सिर्फ इस वजह से कि उन्हें वहाँ पसंद किया जाता है। सचिदानंदन को भी अब तक किया जाता होगा, लेकिन क्या सिर्फ उनके साहित्य के कारण? कुरूप या केशव देव या विजयन या बशीर को क्यों नहीं? नेटवर्किंग की विशेषज्ञता के लाभों से आजकल हर भारतीय परिचित है। "यदि यह नेटवर्किंग सरकारी बित्ते पर हो तो मामला और भी आसान हो जाता है। वैसे "नेटवर्किंग" को जर्मन में "जाइलशाफ्टन" बनाना कहते हैं, जिसका हिंदी में अनुवाद करें तो "गिरोह बनाना" बनता है। मैं यह मान कर चलता हूँ कि किसी भी लेखक का सही मूल्यांकन उसका मूल साहित्य पढ़ कर ही किया जा सकता है। मैंने सचिदानंदन की कुछ गिनी-चुनी रचनाओं के हिंदी तथा अंग्रेजी अनुवाद पढ़े हैं। शायद मलयालम जानने वाले उसमें नोबेल लायक कुछ खोज पायें। शायद नोबेल समिति के किसी सदस्य को अंग्रेजी या उनके मित्रों द्वारा किसी विदेशी भाषा में किया गया अनुवाद सच में पसंद आ भी गया हो। परन्तु भारत के कितने अन्य साहित्यकारों को सरकारी पद के बूते पर "नेटवर्किंग" का अवसर मिला होगा? सचिदानंदन 10 साल केन्द्रीय साहित्य अकादमी के सचिव भी तो रहे हैं।

बहुत नामी-गिरामी लोग रहे हैं इनके साथ। अकादमियों में रह कर आप किसी भी साहित्यकार के मूल्यांकन का अधिकार पा लेते हैं, बहुत कुछ दे सकते हैं, बहुत कुछ ले सकते हैं। आपके काम का अनुवाद करने की इच्छा रखने वालों की एक लंबी कतार लग जाती है। नेशनल बुक ट्रस्ट के भूतपूर्व अध्यक्ष सीताकांत मोहोपात्र का जितनी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है, उसकी तुलना शायद प्रेमचंद से ही की जा सकती है। विदेशी भाषाओं के कुछ विद्वान ऐसे हैं, जो शुरुआत ऐसे करते हैं कि खुद ही बड़ी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति की रचनाओं का अनुवाद विदेशी भाषाओं में कर दें अथवा अपने किसी ऐसे मित्र से करवा दें, जो मूलभाषा को जानता हो। विभिन्न विदेशी भाषाओं के विदेशी सांस्कृतिक केन्द्रों से जुड़े ये "विद्वान" अपने विदेशी मित्रों के बने दायरे में ऐसे अफसर-लेखकों का प्रवेश करवा देते हैं और फिर "अन्तर्राष्ट्रीय" बनने का मार्ग प्रशस्त होने में समय नहीं लगता। सचिदानंदन के संबंध इस सन्दर्भ में कुछ संदिग्ध व्यक्तियों से भी रहे हैं, जिनमें एक कुख्यात व्यक्ति प्रमोद तलगेरी हैं। जर्मन के इस भूतपूर्व प्रोफेसर के बारे में केन्द्रीय सतर्कता आयोग की टिपण्णी है कि यह शख्स गंभीर वित्तीय अपराधों में लिप्त रहा है और जिसके बारे में आयोग ने केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्रालय को निर्देश दिए हैं कि "उसे सरकार कि नाराजगी से अवगत करवाया जाए और यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन को कहा जाये कि भविष्य में उसे भारत में किसी भी यूनिवर्सिटी सिस्टम में नियुक्त न किया जाए।" हालांकि साहित्य अकादमी ने सूचना

अधिकार अधिनियम के अंतर्गत मांगी गयी सूचना में तलगेरी से कोई भी संबंध रखने से इंकार किया है, तथापि ''इंटरनेशनल मल्टीवेर्सिटी, पुणे'' की वेबसाइट में तलगेरी वर्षों से आज तक साहित्य अकादमी के सहयोग से एक पुस्तक निकालने का दावा करते रहे हैं और अब भी कर रहे हैं। इस पुस्तक के हश्र पर बाद में आयेंगे, मगर आज भी सचिदानंदन सेवा-निवृत होने के बाद, - अकादमी के सदस्य यह अब भी हैं - एक तथाकथित ''नेशनल ट्रांसलेशन मिशन'' में तलगेरी के सहयोगी हैं।

इस सहयोग की बात भी बाद में होगी। अकादमी में इनकी कार्यविधि से यह स्पष्ट होता है कि यह सिर्फ उन्हीं लोगों को अपने नजदीक लगने देते हैं, जिनसे एहसानों का आदान-प्रदान किया जा सके; जहाँ तक अनुवादों का प्रश्न है, या तो यह मुख्यतः खुद को पेश कर देते हैं, विशेषकर जहां तक विदेशी भाषाओं में या तो अनुवाद करना हो, वर्ना अपने मित्रों को मौका देना पसंद करते हैं। संदिग्ध व्यक्तियों से संगत रखना और स्वयं संदिग्ध होना दो अलहदा चीजें हैं, परन्तु यदि ऐसे संदिग्ध लोगों से मिल कर और अपने आप भी संदिग्ध कृत्य किये जाएँ तो बात अलहदा नहीं रहती। यदि सरकारी निधि का दुरूपयोग किया जाये और अपने पद का फायदा खुद तरक्की हासिल करने के लिए किया जाये तो यह सिर्फ नैतिक स्तर पर ही गलत नहीं होता, बल्कि भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत एक दंडनीय अपराध भी होता है।

मगर आगे जाने से पहले कुछ विषयांतरण। सुप्रसिद्ध स्विस लेखक फ्रांत्स होलर एक बार साहित्य-पाठ के लिए भारत-यात्रा पर आये थे और उन्होंने दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद जैसे महानगरों के अलावा करनाल, चंडीगढ़, अम्बाला, शिमला, पानीपत जैसे छोटे नगरों का दौरा भी किया था। स्विट्जरलैंड जा कर उन्होंने वहां की राजधानी बेर्न के प्रमुख समाचारपत्र ''बेर्नेर त्साइटुंग'' में अपनी यात्रा पर एक लेख लिखा था, जिसका शीर्षक था ''कातरीना भारत में''। भारत में वह न सिर्फ बुद्धिजीवियों से मिले थे, बल्कि आम पाठकवर्ग से भी उन्होंने विचारों का आदान-प्रदान किया था। अपने लेख में, जो बाद में उन्होंने अपने एक निबंध-संग्रह में भी प्रकाशित किया था, उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया था कि भारत में उनसे हर जगह यह प्रश्न क्यों पूछा जाता था कि क्या एक अच्छे लेखक को अच्छा मनुष्य भी होना चाहिए। वह आश्चर्यचकित इस लिए थे क्योंकि पाश्चात्य जगत में भले ही कोई लेखक हो या नेता, उसके व्यक्तिगत जीवन को उसके काम से अलग कर के देखा जाता है, लेकिन भारत में ऐसा नहीं है। विशेषकर इसलिए कि हमारे देश में लेखक जो लिखता है, उसमें कथानक के साथ-साथ एक दूसरा ट्रैक नैतिकता का पाठ पढ़ाने का भी चल रहा होता है। अतः नेताओं, अफसरों, पुलिस तथा पूरी व्यवस्था में विश्वास खो चुकी जनता अपने बुद्धिजीवियों, मुख्यतः लेखकों में अपने आदर्श ढूंढती है। अतः जो पाठक-वर्ग लेखकों के अन्य ''लेखकीय'' गुणों को नहीं जानता, वह उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखता है।

अब हम देखते हैं कि नोबेल-प्रत्याशी सचिदानंदन के कुर्सी पर बैठ कर किये गए सरकारी साहित्यिक कार्यकलापों में कहीं सिर्फ उनके नैतिक आचरण पर उंगली उठाई जा सकती है या इसमें कुछ दंडनीय भी है।

जब मैं यहाँ साहित्य अकादमी का नाम लिखूंगा तो उसका अर्थ सचिदानंदन होगा, क्योंकि जिस प्रसंग का मैं अब वर्णन करने जा रहा हूँ, वह श्री सचिदानंदन के कार्यकाल से चलता आ रहा है।

अकादमी के पास ऐसी कुछ अहम परियोजनाएं हैं, जिनके अंतर्गत विदेशी साहित्य का भारतीय भाषाओं में और भारतीय साहित्य का विदेशी भाषाओं में प्रकाशन किया जाता है। हैदराबाद में विदेशी भाषाओं के अध्ययन तथा साहित्य पर शोध करने के लिए भारत की एक सबसे सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी है, जिसका नाम है इंग्लिश एण्ड फॉरेन लेंगुऐज़्स यूनीवर्सिटी, जिसका नाम कुछ वर्ष पहले सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश एण्ड फॉरेन लेंगुऐजिस (सीफल) अर्थात केन्द्रीय अंग्रेजी एवम विदेशी भाषा संस्थान होता था। केन्द्रीय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने वहां भारत के अपने तरह के एकमात्र अनुवाद एवं भाष्य केन्द्र की स्थापना 90 के दशक के मध्य में की थी। 1997 में केन्द्र तो था, परन्तु केन्द्र में करने को कोई विशेष काम नहीं था, क्योंकि मूलतः यह शोध का एक केन्द्र था। शिक्षा के क्षेत्र में भी वाणिज्यीकरण हो जाने के साथ, जहाँ शिक्षण संस्थाओं से आजकल यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने लिए धन का स्वयं भी प्रबंध करें, एक नव-नियुक्त विभागाध्यक्ष ने सोचा कि यह एक उत्तम अवसर था कि संस्थान विदेशी भाषाओं के साहित्य का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करके स्वयं के लिए धन अर्जित करे। यह धन किसी व्यक्ति विशेष की जेब में नहीं जाना था, बल्कि संस्थान के माध्यम से सरकारी धन सरकार के पास ही आना था। अतः इस विभागाध्यक्ष ने अपने केन्द्र का परिचय देते हुए सचिदानंदन के नाम एक पत्र लिखा कि उनके संस्थान में आवश्यक साधन तथा सुविज्ञता उपलब्ध हैं, विशेषकर विदेशी भाषाओं के साहित्य के अनुवाद के मामले में, अतः यह केन्द्र साहित्य अकादमी के साथ इस क्षेत्र में सहयोग करना चाहेगा और कुछ बड़ी परियोजनाओं पर काम करना चाहेगा। 10 दिन बाद आये उत्तर में प्रो. सचिदानंदन ने सुझाव दिया कि उन्हें ठोस परियोजनाओं के बारे में लिखा जाये, साथ ही यह भी लिखा कि अकादमी का मूल उद्देश्य भारतीय साहित्य का भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद है, न कि विदेशी साहित्य के अनुवाद का, हालाँकि उनके पास विदेशी भाषाओं के चुनिन्दा उत्कृष्ट साहित्य को भारतीय भाषाओं में अनुवाद करवाने की एक परियोजना भी है, बात युक्तियुक्त थी। यह भारत की राष्ट्रीय अकादमी का काम नहीं है कि वह दूसरे देशों के साहित्य का प्रचार भारत में करे, अकादमी को मिलने वाला सरकारी धन तो आखिर हिंदुस्तानियों की जेब से जाता है, अतः भारतीय लेखकों का ही अधिकार इस पर बनता है। सचिदानंदन ने ठोस सुझाव मांगे थे, विशेषकर भारतीय साहित्य के विदेशी भाषाओं में अनुवाद के लिए। संस्थान में अपने सहयोगियों से गहन विचार-विमर्श के पश्चात् विभागाध्यक्ष ने सितम्बर में उन्हें ठोस सुझाव भेजे। उन्हें बताया कि संस्थान में विदेशी भाषाओं और साहित्य के अनेक ऐसे सुविज्ञ विद्वान हैं, जो किसी एक विदेशी भाषा और अपनी मातृभाषा में दक्ष हैं और फिर उनका विदेशी भाषाओं के देशज विद्वानों से भी निरंतर संपर्क बना रहता है और अनुवाद के हर चरण में उनसे सहयोग लिया जायेगा, ताकि लक्ष्य पाठ की भाषा सही मुहावरेदार बनी रहे। भेजी गयी ठोस परियोजनाओ में निर्मल वर्मा के एक उपन्यास को हिंदी से रूसी में,

जयवंत दाल्वी के एक उपन्यास को मराठी से रूसी में, शिवानी के एक उपन्यास का हिंदी से जर्मन में, ओ. वी. विजयन के एक उपन्यास का मलयालम से जर्मन में तथा तेलुगु की 25 कहानियों का भी रूसी में अनुवाद करने का प्रस्ताव भेजा गया। साथ ही उन्हें बताया गया कि एक सहयोगी प्राध्यापक तेलुगु लेखक पेड्डीबतला वेंकट सुब्बैया की कुछ कहानियों का फ्रेंच में अनुवाद करने के लिए चयन कर रहे थे; उनसे यह भी पूछा गया कि यदि उनका भारतीय साहित्य का अंग्रेजी में अनुवाद करवाने का इरादा हो तो 12 तेलुगु लेखकों का अंग्रेजी में भी अनुवाद किया जा सकता है। परियोजना एकदम ठोस थी। उपन्यासों तथा कथाओं के लेखकों के नाम तथा शीर्षक सब लिख कर भेजे गए थे। इसे करने में कई लोगों को काफी परिश्रम करना पड़ा था।

1997 में पत्र अकादमी को भेजा गया था। अकादमी के लिए यह एक सुनहरा अवसर था अर्हताप्राप्त विद्वानों से ऐसे अनुवाद करवाने का, जिनमें अपने साहित्य की शुचिता विदेशी भाषा में पूर्णरुपेण बरकरार रहती। क्या इस अवसर का लाभ अकादमी ने उठाया? यह प्रश्न विशेषकर इसलिए भी अनिवार्य बन जाता है कि आखिरकार अकादमी से मिलनेवाला धन अनुवादकों की जेब में न जा कर सरकारी खाते में ही जानेवाला था और अकादमी के सरकारी नौकरों को इस अवसर को दोनों हाथों से झपट लेना चाहिए था। स्पष्टतः सरकारी का सम्पृिक्तार्थ यहाँ सार्वजनिक से है और इन 'पब्लिक सेर्वेंटस' को सार्वजनिक हित में इस ओर एक सकारात्मक रवैया अपनाना चाहिए था, परन्तु हुआ क्या? चार माह तक अकादमी ने पत्र का उत्तर नहीं दिया, जबकि सहयोगियों ने एक माह में ही उन्हें कई परियोजनाएं बना कर भेज दी थीं। जनवरी, 1998 में अकादमी को एक स्मरण-पत्र भेजा गया। कुछ दिनों में सचिदानंदन ने उत्तर भेजा कि अकादमी पुनर्गठन की प्रक्रिया से गुजर रही थी और प्रस्ताव मार्च, 1998 में नई 'गवर्निंग कोंसिल' के समक्ष रखा जायेगा। 1998 में भी जब सन्नाटा छाया रहा तो जून में पुनः एक और स्मरणपत्र प्रेषित किया गया। 6 माह तक पुनः उत्तर नदारद। तब अकादमी से अंतिम उत्तर देने के लिए कहा गया, हालाँकि अकादमी से सहयोग की पेशकश करने वाले समझ चुके थे कि इन तिलों में तेल नहीं और सचिदानंदन मुफ्त में काम करने को राजी नहीं। उत्तर अपेक्षानुसार था, एक महीने बाद जनवरी, 1999 में भेजे गए जवाब में सचिदानंदन ने साफ 'न' भी नहीं कही, परन्तु अफसरशाही दावपेंचों का सहारा ले कर 'न' कर भी दी। उत्तर में से एक भाग इस प्रकार हैः

''आपको ज्ञात हो गया होगा कि विशेष प्रकार के अनुवाद को अंजाम देने के लिए हमने भारत के चार शहरों में अनुवाद केन्द्र खोले हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट के साथ मिलकर हमने 100 कालजयी पुस्तकों के अनुवाद की भी एक परियोजना आरम्भ की है। हमारा अनुवाद कार्य इन नियमित माध्यमों द्वारा और इन अनुवाद केन्द्रों द्वारा किया जायेगा। बहरहाल आप अपने विभाग के विशेषज्ञों के नाम और पते तथा उनकी मूल और लक्ष्य भाषाओं के बारे में हमें लिख कर भेज सकते हैं, ताकि आवश्यकता पड़ने पर हम उनकी सेवाओं का लाभ उठा सकें। जहाँ तक जर्मन और रूसी भाषा के अनुवादों का प्रश्न है, भारत से बाहर स्वीकार्य प्रकाशक तथा वितरक उपलब्ध हो जाने पर हम आपको सूचित करेंगे। इस

तरह के आदान-प्रदान के लिए हमारी कार्यकारी समिति का अनुमोदन आवश्यक होगा और यह भी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का एक हिस्सा होगा। पुस्तकों, भाषाओं तथा अनुवादों का चयन केवल साहित्य अकादमी द्वारा ही किया जायेगा।''

इतना विलम्ब क्यों? नयी 'गवर्निंग कौंसिल' से यदि अनुमोदन लेना था तो पहले फुर्ती दिखाने की क्या जरूरत थी? क्या यह उम्मीद लगायी गयी थी कि परियोजनाओं का नाम सुन कर केन्द्र के प्राध्यापक शशोपंज में पड़ जायेंगे? और फिर अकादमी के जवाब में कुछ शब्द और सूत्रीकरण अकादमी के संदिग्ध इरादों की तरफ इशारा करते हैं, जैसे ''भारत से बाहर स्वीकार्य प्रकाशक तथा वितरक उपलब्ध होना'', ''सांस्कृतिक आदान-प्रदान'', ''कार्यकारी समिति का अनुमोदन'', ''पुस्तकों, भाषाओं तथा अनुवादों का चयन केवल अकादमी द्वारा'' आदि इत्यादि इत्यादि... मतलब अकादमी परियोजनाएं तो लिये बैठी थी, मगर बिना कोई प्रकाशक तथा वितरक खोजे। ''सांस्कृतिक आदान प्रदान'' का अर्थ, जिस तरह इसका कार्यान्वन किया जा रहा है, आज हर भारतीय जानना चाहेगा। साहित्य का अनुवाद करने के लिए एक ऐसे देश के लेखकों-अनुवादकों को, जहाँ की आधी जनता भूखे पेट सोती है, सरकारी पैसे से विदेश की सैर की ऐसी क्या अनिवार्यता है कि उसके बिना काम नहीं चलता? और ऐसे कौन-कौन लोग हैं, जिन्होंने सरकारी धन का ऐसे कामों के लिए 'सदुपयोग' किया है? यह जानना भी दिलचस्प होगा कि कुल मिला कर स्वयं सचिदानंदन अब तक कितनी बार ऐसे शुभकर्मों हेतु विदेश जा चुके हैं। अगर अकादमी हर चीज में दखल रखने वाली थी तो अपने नेक इरादे पहले ही बता देती, ताकि यूनिवर्सिटी के कुछ नामचीन प्रोफेसर अपना वक्त खराब न करते और अपने आदर्शवाद को अपने घर छोड़ कर काम पर आते।

कुल मिला कर इस किस्से को आज 15 साल हो चुके हैं। भारत के बाहर प्रकाशक तथा वितरक मिल जाने पर अकादमी ने केन्द्र को जो सूचित करना था, वह आज तक नहीं किया। वास्तव में आज तक कोई नहीं मिला। तो पूरा मामला क्या हो सकता है? अनुमान (निश्चित तौर पर) यही लगाया जा सकता है कि आज तक अनुवाद कोई नहीं हुआ (अगर सचिदानंदन ने खुद ही कुछ कर लिए हों तो हमें पता नहीं), इसलिए कोई प्रकाशक नहीं मिला, वितरक नहीं मिला। वैसे गंभीरता से सोचें तो ऐसा कौन सा व्यापार है दुनिया में, जिस में कोई व्यापारी दूसरे से उसका माल तैयार हुए बिना ही खरीदने को तैयार हो जाता हो, वह भी किसी ऐसे से, जिसकी बाजार में कोई साख नहीं है। लेकिन ऐसा अनुमान लगाने में ज्यादा मगजपच्ची करने की जरूरत नहीं पड़ेगी कि अपनी रचनाओं का अनुवाद श्री सचिदानंदन ने जरुर किया करवाया होगा।

अब लौट कर उस संदिग्ध व्यक्ति प्रमोद तलगेरी से इनकी मित्रता तथा दुरभिसंधि पर एक दृष्टिपात करें। नब्बे के दशक में तलगेरी ने अकादमी के सहयोग से एक अनुवाद परियोजना आरम्भ की थीएक बहुत ही भव्य परियोजना, जिसका नाम था ''ट्रांस्लेटिंग इंडिया'', जिसमें ''इंडिया'' का अनुवाद करके दो पुस्तकें पुस्तकें नहींग्रन्थ कहिये इन्हें, प्रकाशित होनी थीं, 15 अगस्त, 1997 को इनका लोकार्पण होना था। एक पुस्तक हिंदी में

होनी थी, दूसरी मराठी में। 25 पाठ रखे गए थे इसमें, कई पाठ 40-50 पृष्ठों तक के। इन पुस्तकों की भूमिका अशोक वाजपेयी तथा अकादमी के भूतपूर्व अध्यक्ष अनंतमूर्ति तथा जर्मनी के प्रसिद्ध भारतविद् तथा माक्स म्युल्लर भवन के भूतपूर्व निदेशक हाइमो राऊ लिखने वाले थे। इसके लिए चुने गए जर्मन लेखक थे हेर्डर, माक्स म्युलर, हेगेल, फ्रीड्रिष एवम विल्हेल्म श्लेगल, शोपेनहावर, कार्ल मार्क्स, हूबर फिश्टे, पेटर श्लोटरदीय्क, लेओन फोएष्टवाग्नर, गुस्ताव मेरिंक, विल्हेल्म हाल्ब्फास, विल्ली हास, ग्युंटर ग्रास, डीटर रोटरमुंड, देत्लेफ कांतोव्सकी, इन्गेबोर्ग देर्वित्स, हाइनरिश वाइत्सजेकर, गोएटे, ब्रेष्ट, रिल्के, हाइने तथा जोसेफ विन्क्लर। अनुवादकों के नाम भी पूरे तैयार थे। हिंदी में जिन अनुवादकों को काम करना था, वे थेः महेश दत्त, विष्णु खरे, उज्ज्वल भट्टाचार्य, मधु सूदन जोशी, ज्योति सब्बरवाल, पवन सुराना, अमृत मेहता, जयंत वोहरा, सुरेश शर्मा, निर्मल गुप्ता, विजय छाबड़ा, गिरधर राठी (अकादमी में सचिदानंदन के मातहत) तथा केदारनाथ सिंह। अब मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि 15 अगस्त, 1997 की तारीख में ऐसा क्या परमपावन है, जो इस तिथि पर इस पुस्तक के लोकार्पण की सोची गयी। यह तारीख हम सब भारतीयों के लिए परम-पावन थी, भारत को स्वाधीनता मिलने की स्वर्ण-जयंती का दिवस था यह, जिसे ध्यान में रख कर यह दिन तय किया गया था। 27 जनवरी, 1997 को अकादमी ने तलगेरी के साथ मिल कर पुणे के फेर्गुसन कॉलेज में एक कार्यशाला का भी आयोजन किया था, जिसका उद्घाटन श्रीपद जोशी ने किया था, अरुण साधू ने आधार व्याख्यान दिया था, मराठी में पुस्तक प्रकाशित करने वाले अनिरुद्ध कुलकर्णी ने मराठी में अनुवाद से संबधित गतिविधियों की जानकारी दी थी, अशोक केलकर तथा दिलीप चित्रे, कारिन राउश तथा राइनर लोत्स ने भिन्न-भिन्न सत्रों की अध्यक्षता की थी।

जर्मन-हिंदी कार्यशाला 1997 में मार्च के अंतिम सप्ताह में जेएनयू में हुई थी। वैसे यह उल्लेखनीय है कि साहित्य अकादमी का बयां है कि उस ने सेण्टर फॉर लिटरेरी ट्रान्सलेशन के साथ मिल कर कभी कोई गोष्ठी, कार्यशाला वगैरह नहीं की (इन सब झूठों की जाँच सीबीआई द्वारा होनी चाहिए)। हिंदी ग्रन्थ का नाम भी रोमन लिपि में तय किया जा चुका थाः "chunni hui german lekhon men bharat" (इसका लिप्यान्तरण हुआ ''चुन्नी हुई जर्मन लेखों में भारत'')। न जाने आगे हिंदी अनुवादों का क्या हाल होने वाला था, अनुमान तो शीर्षक की बानगी से ही लगाया जा सकता है।

क्या हाल होने वाला था? यह कथन ताज्जुब में डालने वाला है। क्यों 15 अगस्त, 1997 को ये दो ग्रन्थ निकले नहीं? सच है कि एक भी नहीं निकला, जबकि भारत की अन्य कई भाषाओं में भी इस पुस्तक को प्रकाशित करने का प्रस्ताव था। न ये दो पुस्तकें निकलीं, न ये कभी निकलेंगी, भली ही प्रमोद तलगेरी ''इन्टरनेशनल मल्टीवेर्सिटी, पुणे'' की वेबसाइट में अभी तक डींग मार रहे हैं कि वह साहित्य अकादमी के सहयोग से इस परियोजना को अंजाम दे रहे हैंलोकार्पण की तिथि के 15 साल बाद, एक भी शब्द का अनुवाद किये-करवाए बिना। वैसे यह पुस्तकें निकलेंगी क्यों नहीं? क्योंकि साहित्य अकादमी ने ऐसी किसी परियोजना के अस्तित्व से ही इंकार कर दिया है। पूरे मामले से ही हाथ झाड़ लिया है।

इससे पहले कि आप हैरत में पड़ें कि मुझे यह सारी जानकारियां कहाँ से मिली तो मैं स्पष्ट कर दूं कि हैदराबाद के केन्द्रीय अंग्रेजी एवम विदेशी भाषा संस्थान के अनुवाद एवम भाष्य केन्द्र का अध्यक्ष मैं ही था, मेरी कुछ जानकारियां वहां से हैं, कुछ मैंने सूचना अधिकार अधिनियम 2005 के अंतर्गत प्रश्न पूछ कर हासिल की हैं। 2010 में अकादमी ने मुझे सूचना भेजी है कि उन्होंने तलगेरी के साथ या उसके सेण्टर फॉर लिटरेरी ट्रांसलेशन के साथ यह परियोजना कभी नहीं की, बल्कि गत 16 सालों में उन्होंने जर्मन पाठों के हिंदी अनुवादों की किसी पुस्तक की योजना ही नहीं बनायीं। उनके उत्तरों से यही मालूम पड़ता है जैसे वहां तलगेरी नाम के किसी आदमी को कोई जानता ही नहीं।

परन्तु जिस प्रोफेसर के लिए केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने मानव संसाधन मंत्रालय को लिखा है कि भारत सरकार को उनसे सख्त नाराजगी है, सचिदानंदन आज भी उसके साथ किसी तथाकथित ''नेशनल ट्रांसलेशन मिशन'' में सहयोगी है। बहरहाल मुद्दा यहाँ पर अटक जाता है कि कोई तो झूठ बोल रहा है, या अकादमी या तलगेरी। परन्तु कहीं न कहीं देश के धन का घोटाला हुआ है और यह तो हम देख ही चुके हैं कि संदिग्ध पार्टियां दोनों ही हैं।

इन तलगेरी के साथ सचिदानंदन एक और कार्यशाला के घोटाले में भी लिप्त रहे हैं। यह कार्यशाला माक्स म्युलर भवन में हुई थी, जिस पर अकादमी ने जनवरी सन 2001 में 1,92,314 रुपये खर्च किये थे। यह कार्यशाला ग्युंटर ग्रास की मुझ द्वारा हिंदी में अनूदित पुस्तक ''माइन यारहुन्डर्ट'' के हिंदी अनुवाद पर होनी थी। हैरानी की बात है कि अकादमी एक ऐसे व्यक्ति को यह सम्मान दे रही थी, जो न तो उनके अनुयाइयों में था और न ही किसी छलनी भाषा से विदेशी साहित्य का अनुवाद करता था। ज्यादा हैरत का मुद्दा यह था कि मैंने कार्यशाला के लिए काम करने और हिस्सा लेने से कड़े शब्दों में मनाही कर दी थी और मुझे हाथ-पैर जोड़ कर इसके लिए मनाया गया था। परन्तु ऐन मौके पर अकादमी ने मेरे अनुवाद को किसी ''जर्मन-हिंदी विद्वान'' से अस्वीकृत करवा कर मुझे कार्यशाला से निकाल बाहर कर दिया। न मुझे कोई वजह बताई गयी, न ही ''विद्वान'' का नाम बताया गया। खैर, मैं जर्मन-भाषी देशों में इस विषय पर अलग से जर्मन में एक लेख प्रकाशित कर के यह सिद्ध कर चुका हूँ कि यह अकादमी की एक साजिश थी। परन्तु भंडा जो फूटा तो ऐसे फूटा कि 2010 में सूचना अधिकार अधिनियम के अंतर्गत अकादमी को मुझे ''झूठी'' सूचना देनी पड़ी कि इस कार्यशाला का उद्देश्य था जर्मन के विशेषज्ञों के सहयोग से ग्युंटर ग्रास की कविता का भारत की विभिन्न भाषाओं में प्रतिष्ठित भारतीय कवियों से अनुवाद करवाना। षड्यंत्र का पर्दाफाश यहीं पर हो जाता है। ''माइन यारहुंडर्ट'' अर्थात ''मेरी शताब्दी'' (इस हिंदी पुस्तक की बाद में हिंदी के अनेकों प्रतिष्ठित आलोचकों/लेखकों द्वारा सराहना की गयी थी) कविता की पुस्तक नहीं थी, बल्कि एक निबंध-संग्रह था, एक तरह की डायरी थी। और फिर मैं कब से हिंदी का प्रतिष्ठित कवि बन गया, घुटने टेक कर जिसे कार्यशाला के लिए आमंत्रित किया गया? लेकिन सूचना का बम इसमें यह फटा कि बाद में हिंदी, बंगाली तथा मलयालम में छपने वाली यह पुस्तक कभी प्रकाशित ही नहीं हुई और होगी भी नहीं। एक तमाशा किया गया

था व्यवस्था के अनुरूप आचरण न करने वाले एक अनुवादक का वर्चस्व मिटाने के लिए, जिसमें भारतीय साहित्य जगत की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ भी शामिल हुईं।

कार्यशाला में भाग लेने वाले व्यक्तियों का नाम पूछने पर ये नाम सामने आयेः दिलीप चित्रे, आलोकरंजन दासगुप्ता, विष्णु खरे, कुंवर नारायण, के सचिदानंदन (चारों अनुवादक के रूप में), रत्ना बासु, श्यामल दासगुप्ता, हंस हार्डर, वी. के. अन्नाकुट्टी फिंडाइस, राजेंद्र डेंगले, बारबरा लोत्स, राइनर लोत्स, लोथार लुत्से, जयश्री जोशी, प्रमोद तलगेरी, गिरधर राठी, अनिल भट्टी तथा उज्जवल भट्टाचार्य।

लेकिन जिस काम के लिए ये लोग एकत्र हुए, वो तो नहीं हुआ। इस तरह सिर्फ मेरे साथ ही मक्कारी नहीं की गयी, भारत के साथ, भारतीय भाषाओं के साथ भी की गयी। जैसे पहले साबित किया जा चुका है, एक बार नहीं, बार-बार।

एक बार पुनः हम लौट कर हम भारतीय भाषाओं के साहित्य के विदेशी भाषाओं में अनुवाद के मुद्दे पर चलते हैं। इस वर्ष एक और पत्र में मैंने सूचना अधिकार अधिनियम के अंतर्गत कुछ और सूचनाएँ मांगी थीं, जो इस प्रकार हैंः

1. गत 15 वर्षों में विदेशीभाषी साहित्य के कितने अनुवाद अकादमी ने प्रकाशित किये हैं? मूल तथा अनूदित पुस्तकों के नाम अनुवादकों के नामों के साथ उपलब्ध करवाए जाएँ।
2. क्या इन पुस्तकों का अनुवाद मूल भाषा से किया गया था, या किसी छलनी भाषा से? ऐसी पुस्तकों की सूची उपलब्ध करवाई जाये।
3. अनुवादकों को कितनी राशि दी गयी थी और गत 15 वर्षों में इस मद पर क्या खर्च आया है?
4. शब्दाना अनुवाद केन्द्रों का इस संदर्भ में क्या योगदान रहा है? जब से ये केन्द्र खुले हैं, इन्होंने कितनी पुस्तकों का प्रकाशन किया है। 31-12-2010 तक इन केन्द्रों द्वारा अलग-अलग प्रकाशित की गयी पुस्तकों की एक सूची भेजी जाये।
5. इन केन्द्रों में गत 15 वर्षों में कितनी गोष्ठियां हुई हैं और उन पर कितना धन व्यय हुआ है? इन गोष्ठियों में भाग लेने वाले व्यक्तियों की एक सूची भी भेजी जाये।
6. विदेशी भाषाओं से सीधे अनूदित पुस्तकों का मूल्यांकन क्या विशेषज्ञों से करवाया जाता है? यदि हाँ, तो विभिन्न स्रोत विदेशी भाषाओं के नामों की सूची भेजी जाये। इन विशेषज्ञों को चुनने का मापदंड क्या है? क्या आपने ऐसे विशेषज्ञों की कोई सूची बना रखी है? यदि हाँ, तो कृपया सूची भेजें।
7. उस विशेषज्ञ का नाम बताएं, जिस ने 2001 में ग्युंटर ग्रास की हिंदी में अनूदित पुस्तक ''त्सुंगे त्साइगन'' का मूल्यांकन किया था?

7वें प्रश्न में मैंने भूलवश पुस्तक का नाम गलत लिख दिया था। यह नाम ''माइन यारहुन्डर्ट'' होना चाहिये था। वास्तव में दूसरी पुस्तक भी ग्रास की है, लेकिन उसका अनुवाद विष्णु खरे ने किया था। यदि अकादमी के पास कुछ छुपाने को नहीं था तो शायद वह दोनों पुस्तकों की जांच करने वाले विशेषज्ञों के नाम लिख सकती थी, परन्तु 6ठे और 7वें प्रश्न का उत्तर दिया ही नहीं गया। अन्य प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैंः

पहले और तीसरे प्रश्न के उत्तर का घालमेल बना कर अधूरा जवाब दिया गया है। 18 पुस्तकों के नाम हैं, किस भाषा से किस भाषा में हैं, इसका कोई विवरण नहीं है, अनुवादकों के नाम नदारद हैं, मूल भाषा और छलनी भाषा का कोई जिक्र नहीं है, सिर्फ यह सूचना और यह भी कि 6,77,165 रुपये इनके अनुवाद पर खर्च किये गए हैं।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में सिर्फ 3 पुस्तकों के नाम दिए गए हैं, जवाब अंग्रेजी पुस्तकों का लेखा-जोखा रखने वाले विभाग ने लिखा है (मैंने विदेशी भाषा साहित्य के बारे में पूछा था)। इन 3 पुस्तकों में मूल स्पेनी की एक पुस्तक का अनुवाद अंग्रेजी में करवाया गया है (एक विडम्बना है, अंग्रेजों की जगह भारतीय यह काम कर रहे हैं) फ्रेंच की एक पुस्तक का अनुवाद न जाने किस भाषा में करवाया गया है, और सार्क देशों की कविता का अनुवाद सचिदानंदन ने खुद किया है, किस भाषा में, यह नहीं लिखा, परन्तु सोचें तो अंग्रेजी के अलावा और किस भाषा में करेंगे?

मतलब अधूरी सूचना है, अन्य विदेशी भाषाओं तथा उनके अनुवादकों के बारे में चुप्पी साधी गयी है।

चौथे प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि शब्दाना ट्रांसलेशन सेण्टर बेंगलुरु ने 1997 से लेकर 2010 तक, अर्थात 14 वर्षों में 23 अनूदित पुस्तकें प्रकाशित की हैं और 20 पुस्तकों पर सिर्फ अनुवाद का व्यय 5 लाख से अधिक है, छपाई तथा अन्य व्यय अलग, 3 पुस्तकों का कोई हिसाब ही नहीं है, किसी-किसी पुस्तक पर तो 85,000 रुपये तक खर्च हुए हैं। कहीं 8-10 हजार में ही काम निपट गया है। मूल भाषाओं में 8 पुस्तकें कन्नड़ की हैं, 2 तमिल की, 2 मलयालम की, 1 उर्दू की, 1 हिंदी की, 1 असमिया की, 1 ओडिशी की, 1 बंगला की, 2 मराठी की और 2 तेलुगु की हैं। लक्ष्य भाषाओं में 5 अंग्रेजी की, 3 मलयालम की, 5 तेलुगु की, 3 तमिल की, 2 मलयालम की, 1 हिंदी की और 1 मराठी की है। विदेशी भाषा का कहीं नामो-निशाँ नहीं है, जबकि 1997 में मुझे झूठ बोला गया था कि साहित्य अकादमी ने विशेष प्रकार के अनुवादों के लिए चार केन्द्र खोले हैं और यह बात भारतीय साहित्य के विदेशी भाषाओं में अनुवाद के सन्दर्भ में कही गयी थी। तो यह है हमारे देश की राष्ट्रीय साहित्य अकादमी, जिसमें नोबेल-प्रत्याशी सचिदानंदन की अगुआई में इस तरह के घोटाले हुए हैं।

पांचवें प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि अकादमी के बेंगलुरु स्थित शब्दाना अनुवाद केन्द्र ने 1997 से 2010 तक बंगलुरु, ऊटकमंड तथा शिमोगा में 5 गोष्ठियां करवाई हैं, जिन पर व्यय लगभग पौने सात लाख आया है। नाम सिर्फ भाग लेने वालों के लिख भेजे गए हैं।

अकादमी के पास छुपाने को बहुत कुछ है। सूचनाओं में असत्य का सहारा बहुत बार लिया गया है। सूचना देने में आनाकानी की गयी है। बहुत बचकाने बहाने लगाये गए हैं, जैसे कि उन्हें मेरा पत्र मिला ही नहीं, जबकि अकादमी में उसकी पावती के सबूत हैं।

यह सारा तमाशा 2जी घोटाले से कम नहीं है। श्री सचिदानंदन ने अपने क्षेत्र के उत्कृष्ट विद्वानों की निःशुल्क सेवाओं को अस्वीकार कर के, जबकि अस्वीकरण की कोई मुनासिब वजह नहीं थी, विशेष प्रकार के अनुवादों के लिए अनुवाद केन्द्र खुलवाएं हैं, जो

उनके अपने कथन के अनुसार भारतीय साहित्य का विदेशी भाषाओं में अनुवाद करते, न केवल अपने पद का दुरूपयोग किया है, बल्कि देश के एक विख्यात संस्थान तथा उसमें कार्यरत विद्वानों का अपमान किया है, उनका समय खराब किया है, सौंपे गए धन का उपयोग निजी हितों को बढ़ावा देने के लिए किया है, अपने निजी हितों के लिए देश के साहित्य तथा साहित्यकारों के हितों की बलि चढ़ा दी है। एक सरकारी अकादमी को अपनी जागीर समझ कर रेवड़ीयाँ बांटी हैं। 1997 से लेकर आज तक वह किसी भी भारतीय भाषा से एक भी पुस्तक का किसी विदेशी भाषा में अनुवाद नहीं करवा सके। लेकिन स्वयं खूब अनुवाद किये हैं और करवाए हैं। जो कुछ साहित्य अकादमी में हुआ है और हो रहा है, राष्ट्रीय हित में उसकी जांच सीबीआई द्वारा होनी चाहिए। बुद्धिजीवी भ्रष्टाचार पर आखिर कब लगाम लगेगी? पूरे घोटाले की गहराई में जाएँ तो इसका सीधा दुष्प्रभाव किस पर पड़ता है? भारतीय साहित्यकारों पर। लेकिन वे क्या कभी बोलेंगे? क्षुद्र निहित स्वार्थों के लिए हमारे अधिकांश साहित्यकार व्यवस्था के दास बने हुए हैं, जो इन ''अधिकांश'' की श्रेणी में नहीं आते, उनसे आज तक मेरा परिचय नहीं हुआ।

अंत में मैं एक बार फिर उस प्रश्न पर आऊँगा, जो भारत में फ्रांत्स होलर से बार-बार पूछा गया थाक्या एक अच्छे लेखक को एक अच्छा मनुष्य भी होना चाहिए? यदि कभी सचिदानंदन को संयोगवश नोबेल पुरस्कार मिल भी जाता है तो क्या हम भारतीय स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करेंगे? खासकर इसलिए भी कि न तो भारत यूरोप है और न ही सचिदानन्दन स्टीफेन हॉकिंग।

जर्मन कथा

परीक्षा

ज़ीगफ्रीड लेंत्स **अनुवादः शिप्रा चतुर्वेदी**

देखो, वो चान स्तास्नी नई भूमिगत रेल की स्वचालित सीढ़ियों पर चढ़ा, सतत नीचे उतरते हुए अपनी पत्नी व पूर्व सहकर्मी की ओर मुड़ा, जो कि हरा स्वेटर पहने खिड़की पर खड़ी है, उसे हाथ हिलाया, जो न केवल प्रत्युत्तर देती है बल्कि दाहिने अंगूठे की हथेली पर मारती है और हाथ हिलाती है, जो नीचे से ऐसे लगता है मानो वह खिड़की खटखटा रही हो। वह जानता है उसका तात्पर्य क्या है। नाटा, गठीला, काले नीले बालों, कैलयक[1]आँखों वाला पुरुष जानता है कि वह उसे उसकी मौखिक परीक्षा के लिए क्या देना चाहती है, जिसकी ओर अभी काले वस्त्रों वाला, बगल में फाइल दबाए, हाथ में सिर्फ सिगरेट व एक खाली नोट पैड लिए बढ़ रहा है। वह मुस्कराया, आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ा। अंततः वह संतुष्ट दिखाई दिया। हवा में सपाट हाथों से इशारा किया जैसे किसी पियक्कड़ ने किया हो, जिसका सिर पहले से ही घसक गया है। शांत रहो, तुम्हें पता है, सब कुछ ठीक होगा। सिर्फ शांत रहो। सो यह शुरू हो गया है।

वह खिड़की से दूर हटना चाहती है, क्योंकि उसे पता है उसका अभिवादन स्वीकार भी किया जाएगा और उसका जवाब भी दिया जाएगा। वहाँ स्पेशल कोच के बाहर जाते हुए प्लेटफार्म पर, बिजली के खम्भे के नीचे, जिनको फ्लोरेसंट लैंप से प्रतिस्थापित किया जाना है, दो लड़के उघड़े बदन खड़े हैं, हाथ हिलाते हैं, लाल सफेद कपड़े से ढके प्लेटफार्म पर कूदने का इशारा करते हैं। डामर पर गर्मी बढ़ती जा रही है। आओ, हम लोग खिड़की के नीचे पास जाते हैं, अगर जरूरत पड़ी तो तुम्हें गिरने से रोक लेंगे। उसने बड़ी लापरवाही से उत्तर दिया, पीछे हटी, धूप के मारे आँखे बन्द कर लीं, जो घरों की उजली दीवारों से परावर्तित होकर आ रही थी। क्या वह तुर्क था?

नमस्ते माँ, हाँ चान पहले ही जा चुका है, अब शुरू होता है, आओ, मुझे थैला दो, तुम बिल्कुल यहीं से शुरू कर सकती हो, बैठक में, पहले थोड़ा सुस्ता लो, माँ पोस्टरों के बगल से आगे बढ़ती है, अपना हैट उतारती है किताबों की अलमारियों में से एक पर रखती है, जो कि अंशतः व खुद तराशे हुए सफेद पेंट किए हुए बोर्ड की बनी है। वह कपड़े की बनी गुड़िया पर अपना हाथ फेरती है जो कि एक एडमिरल की वर्दी पहने है। क्या यह तुमने बनाई है जेन्टा? यह मैंने चान को जन्मदिन पर भेंट की थी। वहाँ छोटी गोल मेज किताबों और धार्मिक आस्थाओं से भरी फाइलों से ढकी है, चाय के धब्बेदार प्याले, जिनके किनारों पर भूरे हो गए नींबू के टुकड़े पड़े हैं। हम लोगों ने चान को एक बार फिर से सुना, कल दोपहर, कल शाम;

---

1. कैलयकबौद्ध मंगोल, पश्चिमी सोवियत संघ में रहने वाले।

चार्ल्स ने कहा चान परीक्षा सबसे ऊंची श्रेणी में पास करना चाहता है हर हाल में, बिना किसी कठिनाई के। आज शाम सब कुछ सम्पन्न हो जाएगा।

माँ ने अति सावधानीपूर्वक रिकार्ड प्लेयर को पोंछा जो कि सख्त नारियल की चटाई पर रखा हुआ था, चटाई पूरे कमरे में फैली हुई थी और पर्दे से पृथक किए हुए एक छोटे कमरे तक फैली हुई थी। दीवान के बगल में स्वयं बनाई हुई साइड टेबल पर रंग बिरंगे कंचों से भरा हुआ आडम्बरपूर्ण टॉफी का जार रखा था। एक अलार्म घड़ी एक खुली हुई किताब को रोके हुए थी। जेन्टा ने सिगरेट दबाई, बिस्तर लपेटा, बिस्तर के खाने में रखा और बिस्टर पर चादर बिछाई। क्या तुमने सारी सिगरेटे पी डालीं? चार्ल्स यहाँ था और हाइनर, हमने सारी रात रट्टा लगाया है। आज से सब कुछ बदल जाएगा।

तंग हरे स्वेटर में कंधों के नीचे नमदा भरा है। पैंट में कूल्हों पर कुछ टाँके उधड़े हुए हैं। माँ यह देखती है, जबकि जेन्टा होठों में सिगरेट दबाए, संयत मुद्रा में बिस्तर पर काम करती है। नंगे पाँव, क्योंकि उसे खुरदरे नारियल से कोई परेशानी नहीं। तुम विश्वास करो या न करो, चार महीने से मैं ब्यूटी पार्लर नहीं गई। तुम लोग यह कहाँ से लाए, माँ ने पूछा, लटकी हुई एक अलमारी पर, खिलौनों के बीच, खुद इकट्ठे किए गए शंबुक और छोटी पीतल की घंटियाँ हैं, तीन रंगों वाली, प्रभावी रूप से रची हुई कलाकृति हैं। धार्मिक परिवार, छोटी आँखों वाला जोसेफ, चौड़े गालों वाली मारिया, जो बाल यीशु के वचनों से प्रभावित दिख रही है। जो अपने माता-पिता को कुछ पढ़कर सुना रहा है और चान से मिलता जुलता प्रतीत होता है। शांत पैनी दृष्टि, कोमल मुख, जो उस दृष्टि का विरोधाभास है। ओह, चान के प्यारे चाचा यहाँ आए थे, वो पहले इसी से जिए हैं, तुम्हें पता है, सुवाल्की में, और अब वह फिर इसी से जी रहे हैं। अस्सी से ज्यादा उन्होंने हैम्बर्ग में बेचे हैं। पारिश्रमिक, उसने कहा, यह कलाकृति हमारा पारिश्रमिक हो सकती है, क्योंकि उसने चान को मॉडल की तरह चुना है।

माँ ने भूरे लाल पर्दे को सरकायायह अब जेन्टा का कमरा है, एक मजबूत अलमारी, जो कमरे के किसी भी कोने में ठीक लगती है। खिड़की और अलमारी के बीच फंसा हुआ दीवान, झूलती हुई, मछलियां, जो आशाहीन एक दूसरे के पीछे हैं, ट्रांजिस्टर, दीवार पर मार्सल मार्से, जिसने अभी-अभी एक तितली को जीवन दान दिया है। वह एक प्रकार से कमरे का मुआयना कर रही है और न तो सहमति न असहमति जताती है। यह कोई उत्सुकता भी नहीं है, जो इस लम्बी, गौरवर्णी, चित्तियों वाली स्त्री को अलमारियों व दीवान के पास से घुमा रही है। जरूरत पड़े तो संभावित बदलावों को पहचानने की इच्छा, सिर्फ अपने लिए, पर यहाँ एक बीच का कमरा है।

मैं तुम लोगों के लिए फूल ले आई हूँ जेन्टा, अलमारी के पास खड़े होकर उसने कहा। यह अलमारी कभी उसकी माँ की हुआ करती थी और जेन्टा, जो सिर पर से हरा स्वेटर पहनती हुई नंगे पाँव इधर आती है, हमारे पास केवल एक फूलदान है माँ, शायद गुसलखाने में। मेरे पास एक बिस्तर सा कार्यक्रम है, नाई के पास, मेड़ा रिजर्व करने के लिए, और शाम के लिए खरीदारी, अगर और लोग भी आते हैं। और नहाना है। क्या तुम यह कर सकोगी?

जेन्टा ने स्कर्ट पहनी, ब्लाउज पहना, ऊँची एड़ी के जूते ट्राइ किए, शीशे के सामने खड़े होकर तेजी से बाल काढ़े। ऐसा करते हुए उसने सिर तिरछा रखा। नहीं माँ, मुझे अफसोस नहीं है कि मैने पढ़ाई छोड़ दी है। यह काफी है कि चान परीक्षा दे रहा है। हम दोनों के लिए इतना काफी है। तुम जानती हो वो अपने देशवासियों की तरह है जो हर काम बहुत सोच समझकर करते हैं। वे नकचढ़े नहीं हैं, जब वे अगले साल के लिए तैयारी करते हैं और जब वो कहते हैं, पहले यह, फिर कुछ और। इसी क्रमानुसार वे काम करते हैं।

वह एक झटके के साथ कमरे में गई, सिगरेट ऐश ट्रे से गिर गई है, खुद बनाई हुई साइड टेबल पर सूरज की रोशनी ने स्थायी दाग बना दिए हैं। जेन्टा इतनी नाराज है कि वह सिगरेट रसोई में ले जाती है और पानी की धार के नीचे रखती है, कालापन, कागज काला हो गया, कालापन फिल्टर तक आ गया, गीली सिगरेट भरे हुए कूड़ेदान में, जेन्टा अपनी माँ की तरफ मुड़ी, जो उसका थैला ला रही है। जिसने थैला रसोई की मेज पर रखा, अपनी हथेलियाँ माँ की बाहों पर रखीं, दबायीं, जोर से दबायीं, मानो चौड़े कंधों को सिकोड़ देना चाहती हो। माफ करना, इस पर इतना कुछ निर्भर करता है। सब कुछ इसी पर निर्भर करता है। यह सुई की नोक के समान है, यदि इंसान अपने आपको सिकोड़ सके तो इससे निकलना आसान हो जाता यह एक प्रकार से मेरा भी इम्तहान है। मैं समझती हूँ, माँ ने कहा, और मेरी फिक्र न करो। मैं अपनी देखभाल खुद कर सकती हूँ, तुम्हारे यहाँ इन चार महीनों में कुछ बदलाव नहीं आया है। माँ, अपने पीने के लिए कुछ बना लो। हाँ, हाँ।

वहाँ कपड़े का थैला है, वहाँ बोर्ड पर धूप का चश्मा है, अभी सिर्फ एक और फीता, मखमल का एक फीता बालों को बांधने के लिए। आइना क्या कहता है?

जेन्टा ने बेरंग मॉइस्चराइजर ट्यूब में से निकाला, हथेलियों के बीच में रगड़ा और ठीक से माथे और गालों पर मला, ठोडी को आगे बढ़ाया, मुँह बनाया, पिरान्हा मछली जैसा, निचले होंठ से ऊपरी होंठ को दबाया, कुछ लालिमा की कमी है, सो उसने होठों को दबाया, गोल किया, पेंसिल को मुँह के किनारे से बीच की ओर चलाया, होठों को एक दूसरे पर फेरा, दाँतों को खोल सावधानीपूर्वक रुमाल होठों के बीच दबाया, जिसकी वजह से नैपकिन पर निशान पड़ गया। अब नाक के पास से पसीने की बूँदें, गर्दन को मलना है, क्या यह सच है माँ कि 25° से ज्यादा की गर्मी है! तो मै चलती हूँ, बाय।

सीढ़ियों पर कितनी ठंडक है, ठंडक लिनोलियम से चढ़ रही है, जो कि नमी को रोकता प्रतीत होता है। अपने नीचे, सीढ़ियों पर, रेलिंग पर उसे एक हाथ दिखा, नीली बाँह, ताली बजाते हुए, ऊपर, और ऊपर लैंडिग पार करती हुई, और वह एक कंधा, जिसमें चमड़े की पट्टियां हैं। रुकिए, पाउस्टियान जी, मैं आ रही हूँ।

श्रीमती स्तास्नी, आज आपके लिए सिर्फ एक पोस्टकार्ड है। और कुछ नहीं? यही है। कल, पाउस्टियान जी, आप कल देखिएगा। जन्मदिन? परीक्षाः मेरे पति की आज मौखिक परीक्षा है। हार्दिक शुभकामनाएं, शायद यह अभी-अभी शुरू हुआ है। ओह।

सो चान के प्यारे चाचा परीक्षा के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करते हैं। उन्होंने चाकू के नीचे लकड़ी का टुकड़ा रखा, शायद यह परीक्षार्थी के लिए कुछ कलाकृति गढ़ना चाहते हैं, शायद यह एक भेंट हो, जो कि वह गठिया के दर्द की वजह से खुद नहीं ला सकते थे, सो डाक पर भरोसा किया। उसने कार्ड को थैले में रखा, कूदी, थैला घुमाते हुए हाथों पर, सीढ़ियों से नीचे, प्रवेश द्वार पर बदमिजाज काक-भगौड़े-से मिली जो अपनी दुपहिया रेहड़ी घर में घुसा रहा था, और इस बार भी उसने अभिवादन का प्रत्युत्तर नहीं दिया, अभिवादन सिर्फ विस्मयपूर्वक स्वीकार कर लिया, जिससे जेन्टा को कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि पिछले चौदह महीनों में वह इसकी आदी हो गई है, अपने अनगिनत पड़ोसियों द्वारा अभिवादन न किए जाने की। वह धूप में बाहर निकली, आँखे बन्द कीं, चार्ल्स का प्रश्न सुनाया कि एक आवाज, जो चार्ल्स की होनी चाहिए थी। वीलांड [1] के मानवतावाद के बारे में क्या पता है? और तभी एक झोंका सा महसूस किया उसने, जैसे ही ट्राम की गर्म हवा उसके पास से गुजरी और पटरियों का कूड़ा उड़ा लाई। कार्यक्रम।

जेन्टा ने मुख्य सड़क पार की। वहाँ पर चहल-पहल कुछ ज्यादा ही थी आगे की ओर झुके हुए, तेजी से घुसते कुछ शरीर, सधी हुई पदचाप, कमर के नीचे से गिरते हुए, तेज सुरक्षित कदम, सधा हुआ विराम, एक बोझ से मुक्त होने के लिए। एक और कदम, फुटपाथ पर पहुँचने के लिए फर्नीचर-मास्क्वार्डट, चाय-म्युलर, फल-प्राइसलरः ये जो चीजें बेचते हैं उनके नीचे अपने नाम लिख लेते हैं। यदि कोई सिर्फ चिकन बेचता हो और केंकड़ा उसका नाम हो?

'त्सुअर कारवेल', रेस्ट्रां का नाम, एक साधारण सी सीढ़ियाँ नीचे तलधर की ओर जाती हुई। जेन्टा ने दरवाजा खोला, भूरा नमदे का पर्दा किनारे की ओर खिसकायाः सो चान यहाँ उसके साथ मनाना चाहता है, इन छोटे ठंडे से कमरों में से एक में, जिनकी दीवारें प्रसिद्ध रसोइयों की तस्वीरों से ढकी हैं, जिनके लिए साहित्यिक रचना ''टाइल'' तीव्र प्रगति का प्रतीक थी, अंतिम पड़ाव। हर मेज पर बिजली की घंटी रखी थी। आप क्या चाहते हैं?

एक अधेड़ वेटर, भूरी आँखें, मांसल चेहरा, ध्यान दिलाता है कि रेस्ट्रां 12.30 पर ही खुलेगा, उसने यह अभी-अभी पढ़ा है, वह पूर्णतयः पुष्टि करना चाहती है कि उसके पति ने रेस्ट्रां मालिक के साथ क्या-क्या तय किया था, दो लोगों के लिए एक मेज, स्तास्नी के नाम से। एक मिनट। वेटर ने एक नोट बुक उठाई, मेज पर खोली, उस पर झुका व धीरे-धीरे पढ़ने लगाः वह आर्थोपीडिक जूते पहने था। जेन्टा की आँखों के आगे लाल बिन्दु तैरने लगे-वह एक चक्र सा बनाने लगे। स्तास्नी, आपने कहा? हां, इस नाम से बुकिंग है। हम लोग अपने लिए कुछ चाहते हैं। बिल्कुल ठीक। चार नम्बर, वेटर ने निर्विकार भाव से इशारा किया। उसे उसकी निगाहें सहन करने का यत्न करना पड़ा। उसका यह अभिप्राय नहीं था, पर फिर भी

---

1. क्रिस्टोफ मार्टिन वीलान्ड (1733-1813) जर्मन साहित्यकार

उसने कहा यह एक छोटा सा परीक्षा उत्सव है। चार नं. बुक है, वेटर ने कहा और ऑफिस पार करते हुए खिड़की विहीन गलियारे में उसके पीछे-पीछे चला, जिसमें से अभी-अभी उसका मालिक निकला था उसने पूछा कि क्या सब कुछ संतोषजनक है? वेटर ने बताया और जेन्टा को देखा और अन्त में पूछ ही लियाचिकित्साशास्त्र की परीक्षा? जर्मन भाषा व साहित्य, जेन्टा ने कहा। अच्छा।

वह सड़क की ओर की सीढ़ियों पर चढ़ी, धूप उसके चेहरे पर पड़ रही थी। ब्यूषनर[1] की रचनाओं से प्राकृतिक विज्ञान से संबंधित क्या बता सकते हो? क्या उसे बुलाया जाएगा? बैठो जेन्टा, जैकबूट पहने पुरुष ने कहा। वह टूरिस्ट ऑफिस में गायब हो गया। और शेफर्ड कुतिया, जहाँ उसे बांधा गया था, वहीं बैठी और जोर से साँस भरते हुए स्टेज कर्मचारियों को काम करते हुए देखती रही, जो बगल के प्रवेश-द्वार से थियेटर की सजावट का सामान लॉरी तक ला रहे थे। थियेटर यात्रा पर निकल रहा है। शायद सजावटी सामान सिर्फ उधार लिया जाएगा। यह किस नाटक से संबंधित होंगे, ये सफेद छोटा सा फर्नीचर, यह हल्का सा जंगल, जो जर्मन जंगल कतई नहीं था?

जेन्टा ने रुमाल से ऊपरी होंठ से पसीना पोंछा। जाते-जाते लटके हुए थैले में से, गोला बनाया हुआ थैला निकाला, शो-विन्डो पर चाक से लिखे हुए कुछ सस्ते भाव पढ़े, बुल्गेरियन रसभरी, मुर्गे-मुर्गियां, नए आलू। वह खड़ी रही और जताया कि खड़े रहने के लिए कितने अप्रत्याशित कारण होते हैः भयभीत वह घूमी, दाहिना पाँव उठाया, ऐढ़ी को देखा, पैर को सामने की ओर फैलाया, जरा सी गोल घूमी, फिर वो आगे बढ़ी और दुकान में। नमस्कार मिसेज स्तास्नी।

दोनों ने यह कहा-फाइनकॉस्ट[2] ग्रयुत्सनर व फाइनकॉस्ट-पुत्र। तुरंत ही वे चिकने चाकू पर सॉसेज व पनीर की कतली पेश करेंगे, पर सबसे पहले परीक्षा में भाग लेने की घोषणा, और इसका मतलब, दोनों मानो दिल से उम्मीद करते हैं कि मौसम उनकी छुट्टियाँ बर्बाद न कर दे, जिस पर जेन्टा ने कहा वह अपने पति के साथ कभी भी छुट्टियाँ मनाने नहीं गई, उनका अभिप्राय स्वाभाविक रूप से आने वाली छुट्टियों के मौसम से था। कागज कहाँ है? वह जानती है कि उसने सब कुछ लिख रखा है और कागज थैले में है, पर कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे सब याद है। हाइनर व चार्ल्स सिर्फ बियर पिएंगे, चान को सबसे ज्यादह कार्न [3] के साथ स्प्रुडेल[4] पसन्द हैएक बोतल डबल कार्न प्लीज।

शैंपेन के बिना शायद चलेगा ही नहीं, हम कहते हैः तीन बोतल शैंपेन। नहीं, कोई पारिवारिक उत्सव नहीं है, मेरे पति परीक्षा दे रहे हैं। धन्यवाद, लेकिन अभी इम्तहान पास नहीं किया है। प्रिय श्रीमती स्तास्नी, हम आपको इस परीक्षा उत्सव की अच्छी खासी व्यवस्था कर देंगे, ऐसा वाक्य उसके पास तैयार ही होता है और क्योंकि अब वह यह जानता है कि कुल

---

1. गेआर्ग ब्यूषनर जर्मन साहित्यकार
2. फाइनकॉस्ट-विशिष्ट भोज्य पदार्थ बेचने वाली दुकान
3. एक प्रकार का पेय
4. खनिज जल (गैस सहित)

मिलाकर आठ लोग होंगे जो चान स्तास्नी के साथ अच्छी तरह से मनाएंगे, वह उन्हें सलाह देने देता है। जैसे कुछ नमकीन बीच-बीच में मुँह में डालना अच्छा लगता है या यहाँ देखिएये गिलास में खीरे।

जेन्टा ने सिर हिलाया, यह? बहुत ज्यादह नहीं होना चाहिए, समझे आप, और यह बहुत देर तक नहीं चलेगा, शायद डेढ़ घंटे। उसने मछली-सलाद की प्यालियों, मेयोनेज के साथ, फिटी हुई क्रीम के साथ, जिनमें टुकड़ों की तरह टंगड़ी कबाब थे, पर नजर डाली। वहाँ मुर्गे भरे मुड़े तुड़े सेलोफोम के थैले पड़े हैं। सुअर के मांस के पीले टुकड़े चमक रहे हैं।

यहाँ पर रसे में हेरिंग मछली का अचार, मांस नरम लग रहा है, किनारे पर घुलता हुआ प्रतीत होता है। कटा हुआ सुअर का गोश्त निगाहें आकर्षित करता है भुने हुए लंगोचे अपनी ओर निगाहें खींचते हैं। शायद थोड़ा पनीर? बिल्कुल।

जेन्टा की निगाहें खोई सी हैं। ऐसा चान कहता है, जब उसकी पलकें मुंदी होती हैं, जब मुँह खुला होता है और वह अपनी नुकीली उंगलियाँ अपनी गर्दन पर रखती है। एक अस्पष्ट दबाव, एक रहस्यमय आश्चर्य उसे सुस्पष्ट बनाता है। जेन्टा इस दबाव को अपनी गहरी साँस से संयत करने की चेष्टा करती है और इस खट्टे से स्वाद से उबरने के लिए अपने होंठो को बन्द करती है। क्या कहा? उसे प्रश्न समझ में नहीं आया। यह सोच रही थी कि चान ने अपने हठीलेपन में इस रात के लिए होटल बुक कर दिया हैवह उससे यह कह नहीं पाईऔर यह कि छोटे से परीक्षा उत्सव के बाद वह दोस्तों को अकेला छोड़ देगी और होटल में चली जाएगी। एक पैकेट नमकीन का भी। आखिर पिछले दिनों उसने यह महसूस किया है वह इस बात से कितनी खुश थी, सिर्फ इसीलिए नहीं, बल्कि इसलिए कि परीक्षा ख़त्म हो जाएगी। जो (परीक्षा) हमेशा उसके (चान) सामने रहती थी। शायद छोटी-छोटी व्याकरण की गलतियों के कारण, जो वह अब तक करता था।

फाइनकॉस्ट पुत्र सीधे कढ़े हुए चमकीले बाल, दो उंगलियों के पोरों पर प्लास्टर, चीजे सम्हाल कर रखता हुआ, उत्सुकतापूर्वक जेन्टा से आँखें मिलाता है, उसे अलमारियों व केबिनेट की तरफ ले जाता हैः मिक्स अचार और? या शिमला मिर्च? शायद जैतून, वो हमेशा ही अच्छे रहते हैं धन्यवाद। जैतून, यह भाषा इसने कहाँ से पाई है? क्या जेन्टा वापसी में ये सभी चीजें साथ ले जाना चाहेगी-इस प्रश्न के जवाब में जेन्टा ने कंधे आगे को उचकाए और कहा, ठीक है, ठीक है, श्रीमती स्तास्नी, मिलते हैं। वह उसे जाते हुए देखता रहा, मानो वो सोच रहा हो कि उसे किस चीज के लिए माफी मांगनी चाहिए।

सड़क पर तेजी से, अभी बत्ती हरी है, जेन्टा अकेली, खड़ी हुई गाड़ियों को पार करती हुई, जो गर्मी से तपीं थीं। उसने महसूस किया लोग उसे कैसे देख रहे हैं, अपना रास्ता बदला, कूदी, अपनी इच्छानुसार निगाहें बदली नहीं जा सकतीं। वह विंडस्क्रीन में मुस्कराई। जो पूर्णतया अस्पष्ट था वो अब सामने है, लाल बत्ती में फुटपाथ पर कूद गई। शुरू के तीन महीने उन्होंने साथ-साथ पढ़ाई की थी, फिर चान ने शुरुआत की थी, हम में से एक को पढ़ाई छोड़ देनी चाहिए, और जैसे ही उसने यह कहा, जेन्टा को समझ में आ गया, उसका अभिप्राय किससे है। और यहाँ, दुकान के सामने, जहाँ फोटो फ्रेम की जाती है, शीशे तैयार किए जाते

हैं, खिड़की के सामने जहाँ विभिन्न प्रकार के चेहरों के फ्रेम व दृश्य हैं, उसे याद आता है पहली बार घर वापस आने पर औपचारिक स्वागत से वह कितना खुश हुआ था। वह चाहता था कि उसका इंतजार किया जाए, उसे पूछा जाए, स्वागत किया जाए और वह उसका आदर कर सकी थी, उसे (चान को) कितनी खुशी हुई थी अपनी अनुपस्थिति का कारण बताने पर। आर्ट गैलरी के पास एक ब्यूटी पार्लर है, दोनों दुकानों पर एक ही नाम है-शायद भाई हैं, शायद उनके लिए यह संभव हो सका, हाथ में हाथ मिला कर काम करना, जेन्टा ने सोचा, और अंदर घुसते ही एक नाखुश आवाज ने उसे दरवाजा खुला छोड़ देने को कहा, वह काउंटर पर इंतजार कर रही है, ऊपर कैविनों की आवाजों को सुनती है, जिनमें बत्तियां जल रही हैं, जेन्टा का अपॉइन्टमेंट हैं। यह उसे उस लड़की को बताना होगा, जो शीघ्र ही भदरंगे सफेद लबादे में एक केविन से बाहर आई और कहा, हम सिर्फ अपॉइन्टेड लोगों को ही अटेंड करते हैं। सिर्फ धोना है, सहेजना है और कुछ छोटा करना है, बैठिए।

जेन्टा शीशे में जवान ब्यूटीशियन (प्रसाधिका) को काम करते हुए देखती है। वह चौड़े गले वाली, लाल स्त्री के बालों को अनमने ढंग से कंघा कर रही है, लटें बना रही है, उसका धैर्य प्रशंसनीय है, जिससे वह अपनी ग्राहक को शीशे में देखने का आग्रह करके खुद को आँकती देखती है। भदरंगे लबादे के नीचे ब्यूटीशियन ने सिर्फ ब्रेसियर व निकर पहन रखा है। यह ऐसा क्यों कर रही है, जेन्टा ने सोचा, वह क्यों अपने भूरे घने बालों में रूपहली लटें ब्लीच कर रही है। अब शीशे में उनकी निगाहें चार होती हैं, एक छोटा सा आंकलन, प्रश्न और आपसी आंकलन और फिर ब्यूटीशियन दराज में हाथ डालती हैः क्या आपको कोई पत्रिका चाहिए?

जेन्टा पत्रिका के पन्ने पलटती है और ब्यूटीशियन पैर फैलाए उसके पीछे काम कर रही है। उसके बाल काढ़ने में, बालों को क्लिप करने में वह किनारे से अपना छोटा, कोमल पेट उसकी कोहनी पर दबाती है। दोनों ही एक दूसरे से बात नहीं करना चाहतीं। ज्यादा इस बात पर निर्भर करता था लगातार चुप्पी से अपनी सतर्कता जताना, इन्हें पता था, आपसी निराकरण महसूस होने देना चाहते थे, पर बहुत खुले रूप से नहीं। थकावट के कारण, परफ्यूम की लगातार खुशबू से सरोबार, जेन्टा ने आँखे मूँद लीं, अंधेरे में लाल बिंदु राख के धब्बों की तरह तैरने लगेः इस पत्रिका का तात्पर्य क्या है! बिस्तर में बैठ कर टीवी देखना विवाहित जिंदगी को खुशनुमा बनाता है। आपको थोड़ा और झुकना होगा, ठीक वाश बेसिन के ऊपर, धन्यवाद। अमरीकी वैज्ञानिकों ने साबित किया है कि बिस्तर में बैठकर साथ-साथ टीवी देखने से खतरे में पड़ गई विवाहित जिंदगी फिर से खुशनुमा हो सकती है। ब्यूटीशियन ने जेन्टा के बालों को वाश बेसिन में डालकर निर्विकार भाव से कहाआँखे बन्द कर लीजिए। अब वो मेरी गर्दन को देख रही है, जेन्टा ने सोचा और पेट में एक गर्म दबाव सा महसूस किया, मानो उसने गरम कॉफी का घूँट जल्दी से गटक लिया हो, वह निश्चिंत नहीं हो सकती।

भूरे रंग का पर्दा, जो उसके कमरे को बड़े कमरे से अलग करता है, पूरा बन्द नहीं है, वह पिछले सप्ताह की तस्वीर देखती है। जैसा उसके बिस्तर से दिखता है, चान छोटी गोल

मेज के पास, लैंप के प्रकाश के गोले में सिर्फ आधा, पढ़ता हुआ, सिगरेट पीता हुआ, बार-बार कुछ वाक्य लिखता हुआ, जिनमें से, वह जानती थी कि अक्षरशः उतारे हुए हैंः जो मैंने उसे लिखकर दिए थे। मुझे याद रहेगा, चान ने अपने तरीके से सफाई दी, वह इस बात से सहमत थे कि वह (जेन्टा) उससे पूछे तब तक, जब तक कि वह थक न जाए, और जैसे ही उसने निश्चय किया कि वह थक गई है वह उसे उसके कमरे में लाया, उसके बिस्तर पर बैठ कर एक सिगरेट पी, साँस ली और वापस काम पर, कि वह उस समय जौ की ब्रांडी और सोडायुक्त खनिज जल पी सकता है, जैसा कि वैज्ञानिकों ने पाया है कि वैरायटी शो और प्रणय फिल्म खतरे में पड़ गई शादियों को जोड़ने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त हैं; इसके अलावा एक विजयी गणना बिस्तर में टीवी देखते जोड़ों की जन्म दर पर।

अब आप सीधी हो सकती हैं। एक गर्म तौलिया जेन्टा के चेहरे पर, कपड़े के पार वह ब्यूटीशियन की उंगलियों को महसूस कर सकती है, जो उसकी ठोड़ी पर, गालों पर चल रही हैं, फिर ब्यूटीशियन उसके बालों को तौलिये में लेकर सुखाती है। वे लोग उसे भौतिक और प्राचीन जर्मन से बचाएं, या मैं उसके लिए उत्तर दे सकती अगर वे आबलाउट सीरीज[1] से शुरुआत करे। अब बॉस आ गई, उसने पीछे के कमरे में बैंठकर नाश्ता कर लिया था और इसके पहले कि वह अपनी ग्राहक को फिर से ढूँढ ले, जो कि हेयर ड्रायर के नीचे बैठी है, वह हर केबिन के सामने से गुजरती है संभावित बदलावों को सुनिश्चित करने के लिएः हाँ, नमस्ते, श्रीमती स्तास्नी।

जेन्टा ने जवाब दिया जबकि युवा ब्यूटीशियन अनमने भाव से उस पर काम करती रही, और अचानक दिन के रिजल्ट पर। नहीं, खत्म शायद अभी नहीं हुआ होगा, शायद बीच में होगा, क्या कहा? मुझे पता नहीं कि परीक्षा समाप्त हो गई या नहीं। फिर भी हार्दिक शुभकामनाएं, बॉस ने कहा और जेन्टा ने तुरन्त कहा, धन्यवाद।

चान के प्यारे चाचा ने क्या सुनाया था? सनेत्तिम परीक्षा, जो किसी ने अमरीकी पश्चिमी किनारे पर दी थी, वह एक जेल में हुई थी, एक अधेड़ दोहरा हत्यारा, जिसने उन्नीस वर्ष की अवस्था में अपने माता-पिता को मौत के घाट उतार दिया था, क्योंकि उन्होंने उसे निशाचर पक्षियों के व्यवहार पर रिसर्च करने के लिए अनुमति नहीं दी थी, उसने कैलिफोर्निया युनिवर्सिटी की परीक्षा समिति के सामने विशिष्ट सुरक्षा व्यवस्था में पक्षी विज्ञान की मुख्य परीक्षा दी थी। उसने सर्वोच्च सम्मान के साथ परीक्षा पास की थी और चेष्टा की कि परीक्षकों को किसी प्रकार का असमंजस न हो। परीक्षा की अगली रात उसने फाँसी लगा ली थी।

जेन्टा ने आँखे बन्द कीं। ध्यान दिए बिना ब्यूटीशियन की बातें सुनीं, जो वह बाल सँवारते हुए करती जा रही थी, अपने सिर पर अनजानी उंगलियों का सुखद दबाव महसूस किया। एक संकोची लड़का कुछ बेच रहा है-पोस्टकार्ड। वहाँ दुकान में एक लड़का खड़ा है, हल्के बाल, व पियक्कड़ों जैसी आँखें, व्यू कार्ड बेच रहा है। जरूरत नहीं है, ब्यूटीशियन ने कहा, पर उसने जेन्टा की उदारता को भाप लिया था और इंतजार कर रहा था। मुझे छः कार्ड

---

1. जर्मन व्याकरण में स्वरों के बदलाव की नियम प्रणाली

दे दो, जेन्टा ने कहा, ये फालतू हैं, यह उसे पता है, शायद कहीं से चुराए हुए, पर जरूरत पड़ने पर इनका इस्तेमाल किया जा सकता है, सोः छः कार्ड, जिन पर अगर जरूरत पड़ी तो परीक्षा पास करने की खबर दी जा सकती है,

ब्यूटीशियन कुछ रुखी लगी, मानों ये खरीदारी उसकी खिलाफत के मतलब से की गई हो, एक जबरदस्ती की खरीदारी, एक चुनौती, वह शीशे में एक बार भी नहीं देखती है। कृपया अब हेयर ड्रायर के नीचे। बाद में जेन्टा ने कार्ड थैले में डाले, ब्यूटीशियन को टिप दी, जो निर्विकार भाव से जरूरत पड़ने पर मुस्कराहट से भुनाई जाएगी। पैसे बॉस को काउंटर पर देने हैं, तो शायद परीक्षा उत्सव का माहौलश्रीमती स्तास्नी? जल्दी ही, पर मुझे अभी कुछ और तैयारियां करनी हैं।

सड़क पर आने के पहले जेन्टा ने बालों को पीछे किया और अपनी रोजमर्रा की अवस्था में ले आई, नथुनों से पसीना पोंछा, घर पर वैसे भी वो अपने बाल ठीक करेगी ही, सड़क पर गर्म हवा चल रही है, खिड़की के चंदोबे से एक जोर की आवाज आती है। उसकी स्कर्ट ऊपर उठी और दोनों पैरों में बीच में फंस गई। अपने आपको ढको, नन्ही एक परिचित आवाज सुनाई दी, अपने आपको ढकी, वरना व्हेल मछली तुम्हें उठा ले जाएगी। ओह चार्ल्स।

और चार्ल्स, सपाट सीना, दाढ़ी, एक भीमकाय शरीर, जो पूरी दुनिया का बोझ ढोता सा प्रतीत होता है, उसे तरबूज खाने का आग्रह करता है, जो उसने अभी-अभी सब्जी मंडी से खरीदा है। एक यही चीज, मुझे स्फूर्ति देती है और निक्कल फ्रेम के चश्मे के पीछे से निगाहें उसकी ओर, और आगे बढ़ा। नहीं, धन्यवाद, तुमको पसीना आ रहा है। इस अक्षांश (जगह) में इम्तहान फरवरी में देना चाहिए, जैसे मै देता हूं। पर चिंता मत करो; असल में सब इस पर निर्भर करता हैः अर्थहीन प्रश्नों के अच्छे उत्तर देना और अपना चान ये कर लेगा, मैने तुम लोगों को पहले ही कहा था।

चार्ल्स लटके हुए कंधों से उसके पास बढ़ा, तरबूज की फाँक में दाँत गड़ाए, जेन्टा को याद दिलाया कि उन दोनों को सुनते समय ये एक बार भी संभव नहीं हुआ था कि चान को गड़बड़ाया जा सके। देखना, इसी वर्ष वह इम्तहान पास कर लेगा। जेन्टा अपने आपको दुकान की छाया में सिकोड़ने का प्रयत्न करती है। क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है? यह बीयर घर ले जाने में तुम मेरी मदद कर सकते हो, जो बाद में तुम पियोगे। क्या यह जरूरी है?

अतः फाइनकॉस्ट ग्रयुत्स्तन के पास, जिसने सब कुछ कागज के डिब्बों में भर रखा है, जो परीक्षा उत्सव को उत्सव बना सकता हैं, जेन्टा के लिए सिर्फ एक थैला बचता है, जो उसे कभी इतना भारी नहीं लगा, जितना कि आज, कंधे में कुछ दर्द है, कुहनी में, और थैले की पकड़ उसके हाथ की खाल में जलन पैदा कर रही थी, इतनी जल्दी नहीं चार्ल्स, जेन्टा ने कहा, वह एक साइकिल स्टैंड पर झुकी, निचले होंठ से अपने चेहरे पर फूँक मारी और फिर से शुरू, साथ-साथ वे सड़क पार करते हैं, घर के अंदर घुसते ही वह एक सीढ़ी पर बैठ जाती है और चार्ल्स से डिब्बा रखने के लिए कहती है। चूंकि डिब्बे अभी उसके हाथ में ही थे वह उन्हें ऊपर ले गया और दरवाजे पर छोड़ आया, उसने कहा कि तुम्हारा

मिजाज लगता है ठीक नहीं है। उसने कहाः क्या यह थैला ऊपर पहुँचा दूँ? उसने सिर हिलाया सीढ़ियों पर ऊपर बढ़ी, चार्ल्स को मुस्कराकर अभिवादन किया और एक गाल पर चुंबन दिया। धन्यवाद, फिर मिलते हैं। वह खड़ा रहा, जेन्टा को देखता रहा, वो ऊपर जाती रही जब तक कि वह ऊपरी लैंडिंग पर नहीं पहुंच गई, अब उन लोगों ने एक बार और अभिवादन किया। उसे चाबी को ताले में दो बार घुमाना पड़ा, इसका मतलब माँ जा चुकी है। रसोई में मेज पर एक कागज पड़ा है, वह दीवान पर लेट जाती है, सिगरेट सुलगाती है, उस पेपर को फिर से पढ़ती है और सिगरेट के धुएँ को देखती है जो धीरे-धीरे लुप्त हो जाता है, लेटे-लेटे जेन्टा ने स्कर्ट को उतारा, पैरों से ऊपर उठाया, एक सधी हुई उछाल, और स्कर्ट आ पड़ी लैदर पफ पर। एक आवाज, जैसे हवा जोर से एक ट्यूब में से निकलती है। जेन्टा ने सुना, गला खंखारा, खांसी और खड़ी हो गई।

जेन्टा गुसलघर में गई, कपड़े उतारे, शावर से एक नीली सफेद टोपी उतारी, जिस पर चान को बहुत हंसी आती थी और बाद में भी जब-जब वो यह कैप पहनती थी तब वो बहुत हंसता था, मानो उसने उसे इस कैप में पहली बार देखा हो, जानती हो, कैसी दिखती हो? जैसे सील मछली, जिसने हुसार[1] जैसे कपड़े पहन रखे हों। उसने बालों को सावधानी पूर्वक टोपी में घुसाया, फव्वारा चलाया और पानी की तेज आड़ी तिरछी धार के नीचे टाइल्स की दीवार को चमकते हुए देखा। पानी, जो कि चारों ओर छितरा रहा है, सिगरेट साबुनदानी के किनारे से गिर गई है, पानी उसे नाली की ओर बहा ले जा रहा है, कागज घुल जाता है और तम्बाकू के रेशों को धो देती है। जेन्टा धार के नीचे खड़ी हो जाती है और अपनी बाँहें उठाती है। क्या वह तुर्क था? गाउन में वह दरवाजे की तरफ बढ़ती है, दरवाजा खोलती हैः पांवपोश पर एक गुलदस्ता रखा है, चान के लिए एक पत्र भी लगा हुआ है।

अब समय हो गया हैः अलमारी में लगे बड़े आइने के सामने कपड़े पहनती है, सिगरेट पीते हुए, विचार करते हुए, कहाँ उसने सबसे पहले एक लड़की का विवरण पढ़ा था, जो आइने के सामने खड़ी होकर कपड़े पहनती थी, उसे लगता था वो किसी अनजान की नकल कर रही हो, उसने बाल काढ़े और बालों को एक नए हेयर बैंड से बांधा मानो वे हल्के हरे रंग की तंग, कमर तक की ड्रेस में दुविधा, असहमति, शंका और सहमति के बीच झूलती हुई अपने आप की ओर बढ़ रही हो, उपन्यास में भी लड़की ने अपने पूर्व अध्यापक के ख़िलाफ कोर्ट में पेशी पर जाने के पहले ऐसे ही किया था, मुझे कुछ खाना चाहिए, शायद एक सेब, अगर मेरा मेक अप खराब न कर दे, उसने ट्रांजिस्टर ऑन किया, अप, अप, अवे की चंद लाइनें सुनीं, ट्रांजिस्टर में ले गई, ताकि थैले का सामान निकाल सके।

उसने अपने आप को संयत किया, हाथ में दो बोतलें लिए घुसी, हॉल में, ताले को देखती है, समझ जाती हैः कि चाबी बहुत सावधानी पूर्वक अंदर घुसाई गई हैः यह चान ही होगा।

वह रसोई में जाती है, संगीत को और तेज कर देती है। उसने उसे नहीं सुना। उसे बहुत चकित होना चाहिए। हाँ, चान, क्या है? हाँ और ना? तुम कुछ कहते क्यों नहीं?

1. हंगेरियन घुड़सवार

चान आ गया, बिना नजरें मिलाए उसके पास से गुजरा, बगल में जैकेट दबाए, फाइल को रसोई की मेज पर डाल दिया, कहो तो क्या है? वह कुछ भी नहीं बता रहा, चेहरे से भी कुछ अंदाजा नहीं लगता, गहरी कैलमक आँखों में कुछ भी परिलक्षित नहीं हो रहा है। यह शांति वह कैसे बनाए रखता है? जैसे वो अलमारी खोलता है, दो गिलास निकालता है, उसके मौन का क्या तात्पर्य है, सोडा युक्त खनिज जल जौ की ब्रांडी से भरते हुए वह जिस चुप्पी का साथ नहीं छोड़ रहा, पास, चान, नहीं, तो तुम सचमुच पास हो गए, उसने जेन्टा के हाथ में एक गिलास थमाया, पीछे हटा, उसके गिलास से अपना गिलास टकराया, तेज रोशनी के सामने खड़े होकर और पियक्कड़ जैसी साँस ली, तो उसके नाम, जो अब बीत चुका है, पास, उसने फिर से पूछा और उसने जवाब दियाः सम्मान के साथ!

चान पीछे की ओर सिर टिकाए, आँखें बंद किए पीता है, जेन्टा गिलास को होठों तक लाती है, देखती है, कैसे गिलास काँप रहा है, बिना पिए ही, जल्दी से उसे रख देती है। तो अब तुम मुझे बधाई दे सकती हो, चान ने कहा, और उसने (जेन्टा) उस हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति को भींच लिया, मानो वह छोड़ना ही नहीं चाहती हो, एक प्रकार से उसे आलिंगन करते हुए, जो इस स्थिति को ढीला नहीं कर रहा। ऐसा लगता है कि वह उस सामने से दबा देगा। वह उसे रसोई की मेज पर दबा देती है, वह उसका चुंबन लेती है। चान अपना गिलास उससे दूर सरका देता है मैं खुश हूँ चान, मैं खुश हूँ। तुम्हारे लिए फूल पहले से ही आ गए हैं। वह उसकी उंगलियाँ अपनी गर्दन में गड़ाता है, उसको आगे की ओर खींचता है और अब वह मुस्कराता है। उत्सव के लिए सब तैयारी है। सब, जेन्टा ने कहा, तो आओ, सबसे पहले तुमको सुनना चाहिए, सब कुछ कैसे हुआ?

वह हवा निकले हुए एक लेदर पफ पर छोटी गोल मेज के सामने बैठे हैं, वे गिलास खाली कर चुके हैं, फिर से भर लिए हैं। वे एक दूसरे का हाथ थामे हुए हैं, ऐसा लगता है जैसे किसी चीज का सामना करने को तैयार। तुम्हें जोगर से मिलन चाहिए था, वह मेरे लिए कुछ भी आसान नहीं करना चाहता था, उसने तुरंत अपने प्रिय विषय से शुरूआत की, जर्मन आलोचक लेसिंग? जेन्टा ने पूछा, श्लेगेल [1], चान ने कहा, मतलब लोसिंग[2] न तुम्हें पता है लेसिंग द्वारा श्लेगेल का विवरण।

तुम्हें पता है लेसिंग द्वारा श्लेगेल का विवरण ।

उस विषय पर मैं उससे बात कर सका, क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है?

जेन्टा ने अपनी सिगरेट बुझा दी, अचानक खड़ी हुई, खुली हुई खिड़की की तरफ बढ़ी और अपने हाथों को उसके पेट के नीचे दबाया, जेन्टा? हाँ, उसने कहा, हाँ, उसकी आँखों में आँसू थे, मानो उसने अपना चेहरा ठंडी हवा में रख दिया हो, कुछ नहीं चान, मुझे कुछ सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। कुछ पी लो, उसने उसकी ओर अपना गिलास बढ़ाया, उसने एक घूंट पिया, बैठी, और उसे प्रश्नसूचक दृष्टि से देखाः और बारोक साहित्य? उस पर वो आया ही नहीं, पर अंदाजा लगाओ, जब मैंने जोगर को संतुष्ट कर दिया था उसके बाद वो

1. श्लेगेल जर्मन साहित्यकार 1967-1845
2. लौंसग जर्मन साहित्यकार 1729-1781

बूढ़ा प्योरशे मुझे कहाँ घसीटना चाहता था। क्लासिक में, मुझे जर्मन क्लासिक साहित्य का आदर्श वर्णन करना था और मैंने श्टुर्म उंट द्रांग[1] से शुरुआत की। प्रकृति और भावनात्मक उद्वेग, और कैसे यह सब पार हुआ, मुझे कतई पता नहीं था कि प्योरशे सिर्फ वो शब्द सुनना चाहता था, जो तुमने तब उसके लेक्चर में लिखे थे, पर मैं वहां तक पहुँचा ही नहीं, मैं सिर्फ इंद्रिय लोलुप प्रवृत्तियों और समझदारी के बीच तालमेल को सौंदर्य की तरह..., पर यह नहीं था। और अचानक मुझे याद आया, जो तुमने मुझे फव्वारे के नीचे बताया था, जब तुम मुझे साबुन लगा रही थीं, याद है? सीधा करना, आकार देना और मानवीकरण। तुम पीली हो रही हो, जेन्टा।

जेन्टा उठ खड़ी हुई, टॉयलेट की तरफ भागी, दरवाजे को अंदर से बंद किया, घुटनों के बल बैठी, बांहों को बेसिन के किनारे पर रखा और उल्टी कर दी, अचानक सिर में पीछे दर्द, घुटनों के बल, आँखों से तेजी से आँसू बह निकले, दबाव कुछ कम हुआ, वह अंधेरे में खड़ी हुई और बत्ती जलाई। छोटे से सिंक पर आइने में उसने देखा और महसूस किया कि उसे फिर से उल्टी करनी होगी, चक्कर इतनी जोर से आ रहे हैं कि उसने एक हाथ से सिंक को पकड़कर रखा है और दूसरे हाथ से चेहरा धो रही है। जेन्टा, चान ने पुकारा, क्या हुआ? उसने उत्तर नहीं दिया, कुल्ला किया दरवाजा खोला।

चान उसे सहारा देकर धीरे-धीरे दीवान के पास लाता है। उसे लिटाया और उसके पाँव ऊपर बिस्तर पर किए। मुझे अफसोस है, चान मुझे बेहद अफसोस है। सिर्फ लेटी रहो, उसने कहा, कुछ मिनट, फिर सब ठीक हो जाएगा। यह फिर से होगा, चान, मुझे महसूस हो रहा है। क्या मतलब? मेरी तबियत ठीक नहीं है।

चान सिगरेट पीते हुए दीवान के सामने खड़ा हुआ, एक हाथ में एक गिलास, उसने देखा, कैसे ठंड से उसकी त्वचा खुरदरी हो गई है, उसकी कष्टमय साँसों को सुना। तुम हमारे लिए बीमार नहीं पड़ सकती। खास तौर से आज, तुम खेल बिगाड़ नहीं हो सकती, मुझे बहुत अफसोस है चान। वह दीवान के किनारे पर बैठा, गिलास रखा, एक हाथ उसके काँपते कंधों पर रखा और उसके चेहरे से अपरिचित भाव को पहचानने का प्रयास। एक भाव खराब सहजता का था, जीत लेने का और वह सहज रूप से चला जेन्टा के चेहरे को इंगित करते हुए, मानो वो इस भाव को मिटा देना चाहता हो।

वे जल्दी आयेंगे, जेन्टा, मुझे अफसोस है चान, पर नहीं हो पाएगा, मैं नहीं आ सकती, तो क्या मैं सब निरस्त कर दूं? तुम देख ही रहे हो, चानः मैं नहीं आ सकती, वह उसकी तरफ मुड़ी, चुपचाप उसे देखा और कुछ देर बाद वह खड़ा हुआ, रसोई से जैकेट उठाई, दरवाजे की ओर बढ़ा, उसे अभिवादन किया और बाहर निकल गया।

---

1. 1770-85 का समय जो क्लिंगर के नाटक के नाम पर जाना जाता है, साहित्य में बदलाव का समय

स्लोवाकी कथा

‘लगभग दशर्नातीत’

याना बोदरानोवा **अनुवाद : शारदा यादव**

कुछ लोग न तो जीवन के लिए बने होते हैं और न ही मृत्यु के लिए। उनके अंदर इनमें से किसी एक के लिए भी शक्ति नहीं होती। वे जीने के लिए काफी ताकत लगाते हैं और मरने के लिए भी, हालाँकि वे मरना नहीं चाहते। मुझे भी ऐसे कुछ लोग याद हैं। उदाहरण के लिए र। मैंने बहुत पहले अपनी एक कहानी में उसका जिक्र किया था, कुछ-कुछ छिपे रूप में हो सकता है मेरे लेखन में उसका जिक्र फिर कभी आए।

एक साल छात्रावास में मैं और र पड़ौसी थे और हम दोनों एक ही बॉथरूम का इस्तेमाल करते थे। मुझे उसका दुबला चेहरा, बिल्ली जैसी आँखें और लाल घुंघराले बाल आज भी याद हैं। समय-समय पर उसके पिताजी जो औषध विक्रेता थे, दक्षिणी स्लोवाकिया के किसी गाँव से उससे मिलने आते थे। मैं जानती थी कि र की माँ का देहांत उसके जन्म के कुछ समय बाद हो गया था। उसकी माँ को स्नायु रोग था, जो कि र को भी अपनी माँ से विरासत में मिला था। र चाहकर भी किसी से प्यार नहीं कर पाती थी। उसे बहुत घबराहट होने लगती थी। यह स्वयं र ने मुझे बताया, जब वह मैक्स को साथ लेकर छात्रावास में आई थी। वह अर्थशास्त्र का विद्यार्थी था और स्विटजरलैंड का रहने वाला था। मैंने उनके लिए चाय बनाई। इसी बीच मैक्स से क्रांति के विषय पर चर्चा होने लगी। मैक्स विश्व क्रांति पर जोर दे रहा था, जिससे व्यापारियों की वर्तमान व्यवस्था बदल जाएगी। इससे एक नए संसार का उदय होगा और वह संसार भ्रष्ट नहीं होगा, सबके लिए होगा। मैक्स ने अच्छी तरह से ‘दास कापिटाल’[1] पढ़ी थी। उसे माओ व चेगुएवारा बहुत पसंद थे। उसने हमें अमेरिका में वियतनामी युद्ध के विरुद्ध हुए प्रदर्शनों, विषाक्त चावल-खेतों, अमरीकी सैनिकों के उत्साह में गिरावट तथा मादकद्रव्यों के सेवन के बारे में भी बताया। उसने हमें विएतकोन्ग[2] के विषय में भी बताया कि उन्हें पकड़ना असंभव था। यह एक अलग तरह का युद्ध था। वह बड़ी खुशी से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की क्रांति के विषय में बता रहा था, जो न्यूयार्क से रोम, मैड्रिड, लंदन, बर्लिन, टोक्यो व पेरिस तक फैली हुई थी। विद्यार्थियों ने मार्ग में अवरोधक खड़े कर दिए गए और व्यापारियों की कारों को रोकने की कोशिश की। तेरह मई को उसने स्वयं पेरिस में डेनफेरत शेखेरेउ नामक स्थान पर विद्यार्थियों के प्रदर्शन में भाग लिया। हजारों विद्यार्थी वहाँ इंतजार कर रहे थ े कि आगे क्या होगा। उनके नेता ठीक से निर्णय नहीं ले सके।

---

1. मार्क्स ने जिस पुस्तक में मार्क्सवाद का प्रतिपादन किया था।
2. अमरीकियों से वियतनाम को मुक्ति दिलाने के लिए लड़ने वाले विद्रोही

माओवादी प्रदर्शन को रोकना नहीं चाहते थे। अराजकतावादी संपन्न जिलों पर आक्रमण करना चाहते थे, ट्राटस्की के अनुयायी कुछ और ही चाहते थे। कम्युनिस्टों का विचार था कि अब उन्हें वहाँ से हट जाना चाहिए, क्योंकि छात्रों और मजदूरों ने अपनी ताकत अच्छी तरह से दिखा दी है।

मैक्स बोला, "अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ग का एक आदर्श है, वह हर चीज जो पुरानी है, उसको जिमी हेन्ड्रिक्स[1] के गिटार की भाँति नष्ट करना चाहते हैं।" र पूरा समय चुपचाप बैठी रही। सुबह उसने मुझे बताया कि वह मैक्स के साथ होटल गई थी। इस बार भी वह मैक्स के प्यार को देखकर घबरा गई, अपनी बीमारी के कारण रोने लगी और वापस छात्रावास आ गई। मुझे र पर बहुत तरस आया।

र मनोचिकित्सक से मिलने गई। डॉक्टर ने उसे अपने हर सपने को लिखने को कहा। एक बार उसे ऐसा सपना आया कि वह अपनी माँ के शरीर को नहला रही है। माँ का शरीर चेहरे के बिना था। नहलाने के पश्चात् वह अपनी माँ के शरीर को तार से बाँधना चाहती थी। जैसे ही उसने तार निकालना चाहा उसकी आँख खुल गई और सपना टूट गया।

र ने अनेक बार आत्महत्या करने की कोशिश की। एक बार हमने उसे छोटी बच्ची की भाँति गहरी नींद में बिस्तर पर सोते हुए देखा। उसके कपड़ों को देखकर ऐसा लग रहा था जैस वह सैर के लिए जा रही है। उसने हरे रंग के कपड़े पहने हुए थे, जिस पर छोटे-छोटे काले व लाल रंग के फूल बने हुए थे। उसके बिस्तर के आसपास की चीजें बिखरी पड़ी थीं, जिनमें दवाइयां व एक गिलास भी था। जब उसके पिताजी उसे हंगरी के किसी सेनेटोरियम में छोड़ने जा रहे थे तब उसने कहा कि आपने मुझे बचा लिया। र हमेशा अपने आप में खोई-खोई सी रहती थी मानों कोई धूप से बचना चाह रहा हो। वह शायद ही कभी अपनी उदासी से उबर सकेगी।

मैं हमेशा र की यादों में खोई रहती हूँ, पर ये यादें कभी भी जिंदगी के लिए सच्ची, गहरी, बिल्कुल ठीक और पूरी नहीं उतरती हैं। लेखन भी इसी तरह से है, अपनी ही सीमाओं में रहता है। र ने मेरा साथ छोड़ दिया। उसका जिक्र करना मेरे सामर्थ्य से परे है। लेकिन मैं दुबारा से उसका जिक्र करूँगी, क्योंकि मैं दुबारा अपनी युवावस्था व अन्य चीजों की तरफ, जिन्होंने मुझ पर छाप छोड़ी है, लौटूँगी तो र का जिक्र अवश्य ही आएगा।

र अपनी पढ़ाई हमेशा के लिए छोड़कर चली गई। उसके जाने के बाद ज मेरी जिंदगी में आया। फिलीस्तीन का रहने वाला, चिकित्साशास्त्र का विद्यार्थी। वह सफेद घोड़े पर बैठा कोई राजकुमार नहीं था, बल्कि एक बंजारा था, रेगिस्तान वासी, भौंहें चढ़ाए हुए और ऐसा लगता था कि वह पत्थर और रेत का बना हुआ है। मैक्स की भाँति ही वह भी एक क्रांतिकारी था। वह आवेशपूर्ण तरीके से अपनी नफरत इजराइल के प्रति प्रकट करता था। मेरी समझ में उसकी यह बात बिल्कुल नहीं आती थी। जर्मनी में हिटलर ने जो यहूदियों के साथ किया था उसी वजह से यहूदियों के लिए मेरे मन में सहानुभूति थी और मैं सोचती थी कि कहीं उनके

---

1. सुप्रसिद्ध अमरीकी गायक

साथ दुबारा से वैसा न हो जाए। "मेरा देश, यहाँ तक कि मेरा अपना परिवार भी तंबू में रहता है। हमारी अपनी कोई जमीन नहीं है, हम ही केवल एक निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। एक दिन भयानक युद्ध होगा। खंडहरों में पड़े हुए जख्मी लोगों की, धूल-मिट्टी और रेगिस्तान में मरते हुए लोगों की मैं एक डॉक्टर की भांति चिकित्सा करूँगा।" वह बड़ी करुणा से यह कहता। हम रात को हल्बोका नामक गली से, होरस्की पार्क छात्रावास तक सैर करते थे। कभी-कभी जब वह आकाश में तारों को और पूर्णिमा के चाँद को देखता तो मुस्करा उठता, उसकी सारी नफरत खत्म हो जाती तथा वह मुझे अपनी ओर खींच लेता। मुझे नहीं मालूम कि वह अब कहाँ है, जिंदा भी है या नहीं। मेरी मेज पर एक अखबार खुला पड़ा है और मेरी नजर एक अपहृत इजराइली सैनिक गुइलाद शालित की तस्वीर पर पड़ी। वह सैनिक की अपेक्षा एक शर्माता हुआ विद्यार्थी लग रहा है। उसके परिवार वाले बंदी बनाने वालों से उसकी जिंदगी की भीख माँग रहे हैं। उसके जख्मों की मरहम-पट्टी करने की प्रार्थना कर रहे हैं। इजराइल उसकी रिहाई की मांग कर रहा है। प्रधानमंत्री इहुद ओलमेर्त ने गाजा पट्टी में एक विस्तृत अभियान के लिए आदेश दिया है।" कोई भी इसका उल्लंघन नहीं करेगा, साथ में यह घोषणा भी कर दी कि टैंक और सैनिक जल्दी ही गाजा पट्टी में आने वाले हैं। दोनों तरफ से होने वाली गोलाबारी, खून-खराबा और हिंसा की कल्पना करना भी कठिन है। बस ज की यह पक्की धारणा कि सारा विश्व संवेदनाहीन है और मानसिक रूप से ध्वस्त है, बनी रह गई थी। लेकिन जब मैं मात्र बीस साल की थी तो मेरे और ज के बीच एक गंभीर खेल शुरू हुआ, जिसका अंत दुखद था। हम दोनों ही ये बात जानते थे, लेकिन हमने ऐसा दिखाया कि हम इस बात से अनजान हैं। खेल में आग की सी गंध थी, इसने मेरे शरीर में परिवर्तन कर दिया। मेरे चौथे वर्ष की परीक्षा नजदीक थी। मुझे ऐसा लगा कि मैं परीक्षा की तैयारी ही नहीं कर पा रही हूँ। उसने मुझे एक फिलस्तीनी लड़की से मिलवाया। इस अल्पसंख्यक समुदाय के लोग आपस में बराबर मिलते रहते थे। उनकी सभा में सीरियाई व कुर्द लोग भी आते थे। वे लोग आपस में विचार-विमर्श करते तो ऐसा लगता था कि वे अपने खोए हुए देश को प्राप्त करने के लिए शपथ उठा रहे हैं। उसके बाद सब मिलकर एक बड़े समूह में नृत्य करते थे। लड़कियाँ अपने हाथ सिर के ऊपर की ओर मोड़ती थी तो ऐसा लगता जैसे वे भगवान से प्रार्थना कर रही हैं। लेकिन अरब लड़कियाँ ज्यादा अच्छी तरह से नृत्य करतीं। वे राजहंस की नरम गर्दन की तरह बाँहे मोड़ती। उनके नृत्य में उनकी अंगुलियों व हाथों की शोभा देखते ही बनती थी।

जर्मन धारावाहिक उपन्यास

और एक दलित

ग्युंटर वल्लरफ्फ अनुवाद : अमृत मेहता

डुइजबुर्ग के भीतरी हिस्से में धूप निकली हुई है, लेकिन यहाँ एक धूसर, धुंधली रोशनी है, कारख़ाने से निकलते बादलों के पीछे सूरज के होने का अनुमान तो लगाया जा सकता है, लेकिन वह बादलों को भेद नहीं पा रहा। मैं आडलर पर सड़क की दूसरी तरफ से लगातार नजर रखे हुए हूं और महसूस कर रहा हूं कि वह वहाँ से कितना नाखुश है। डीजलश्त्रासे और उसके आसपास का इलाका उसके लिए कचरे का ढेर और नरक का द्वार है। असली नरक तो उसके लिए उन बाड़ों और दीवारों के भीतर है, जिस के बाहर श्युस्सन के सुरक्षाकर्मी खड़े हैं। वहाँ हवा और भी अधिक असहनीय है और ऊपर से काम का शोर।

फैक्ट्री में वह हमारे पास कभी भूला-भटका भी नहीं आया था, इससे उसके नाजुक दिल पर बहुत बड़ा बोझ पड़ जाता और फिर उसे बुरे-बुरे सपने भी आते। अपने डिजाइनर सूट में आडलर इस माहौल में असंगत और अश्लील लग रहा है, पोस्टरों पर उन सुथरे आदमियों की तरह अवास्तविक, जिन्हें इस इलाके में लम्बे समय तक कोई नहीं बदलता, क्योंकि यहाँ उपभोक्ता माल के लिए विज्ञापन करने का ज्यादा फायदा नहीं है, यहां तो बस बीयर और सिगरेट ही बिकते हैं।

हमारा "अंतिम प्रस्ताव" छः तुर्क दोस्तों का है, जिन्हें मैंने सब कुछ समझा दिया है। मुझे आश्चर्य हुआ देखकर कि वे काम और उसके उद्देश्य तथा आडलर के इरादों के बारे में सुनकर इतने हैरत में नहीं पड़े जितना मैं पहली बार पड़ा था। वे इस सच्चाई के साथ बरसों से जी रहे हैं और काफी कुछ अनुभव कर चुके हैं। उन्हें भी मैं नहीं बताता कि मैं जर्मन हूं, ताकि हमारे बीच दूरी न बनी रहे। इस चीज को आडलर भी महसूस कर लेता और वह शक में पड़ जाता। समानान्तर जाती सड़क पर मैं अपने ग्रुप को डीजलश्त्रासे वाले अपने फ्लैट में ले कर जा रहा हूं, और आडलर हमें नहीं देख रहा। फिर मैं आडलर को ले आता हूं। वह चाहता था कि "लोग", यही कहता है वह उन्हें, उसे सड़क पर आकर मिलें, पर मैं कहता हूं, "अच्छा नक्को होना, बहोत खतरनाक, बोले तो कइयों कने पिछान वास्ते पेपर नक्को होता।" इसके साथ में कहानी के अंत का मार्ग प्रशस्त कर रहा हूं, लेकिन इस बारे में बाद में।

"अगर बहुत जरूरी है तो चलता हूं," कुछ कर आडलर मेरे साथ 10, डीजलश्त्रासे को चल पड़ता है। जीने में पेशाब की जोर की बदबू है। टायलेट सभी फ्लैटों के बाहर सीढ़ियों के नीचे हैं। एक निकासनली बंद है। आडलर मेरे साथ जल्दी-जल्दी सीढ़ियां चढ़ता है और पहले बिचले तल्ले में मैं अपने पीछे दरवाजा बंद करता हूं और अपने दोस्तों को पेश करता हूं, जो काम के लिए राजी हैं।

"हलो," अंदर आकर वह कहता है, सरसरी नजर से उन्हें पढ़ता है और गिनता है, "दो, चार, छः, ठीक है। तो ध्यान से सुनो। तुम लोग सब जर्मन जानते हो!"

"हां, जिआदातर जानता," मैं झूठ बोलता हूं (इससे मुझे उससे एक छोटा सा भाषण दिलवाने में सफलता मिल जाती है, जिससे वह उनके लिए अधिक पारदर्शी बन जाता है।)

"हमारी ओबरहाउजन में मशीनें वगैरह फिट करने वाली एक कंपनी है," वह अपना परिचय देता है, "और हमें व्यूअरगास्सेन के ऐटमी बिजलीघर में मरम्मत करने का ठेका मिला है। काम दो दिन चलेगा और इसके लिए पांच या छः आदमी चाहिएं। हमें इसके लिए अच्छा पैसा मिलेगा और तुम्हें भी अच्छे पैसे मिलेंगे। तो अगर कोई सवाल हो तो बेझिझक पूछो। मैं तुरंत सारे सवालों का जवाब दूंगा।

बातचीत में वह ईमानदार और रहमदिल होने का आभास दे रहा है, और जिसका उससे कभी वास्ता न पड़ा हो, वह उसके बस में आ जायेगा। उससे और भी ज्यादा निकलवाने के लिए मैंने अपने तुर्क दोस्तों को समझा रखा था कि वे सवाल तुर्की में पूछें। मैं (अली) जिसे तुर्की न के बराबर आती है उनका तर्जुमा मनमर्जी से करूँगा, मतलब मैं आडलर से वही सवाल पूछूंगा जो मुझे उस समय जरूरी लगेंगे।

उसका ध्यान इस तरफ अब तक कभी नहीं गया कि मैं (अली) अपने तुर्क सहयोगियों से तुर्की में कभी बात नहीं करता, और कि मेरी जर्मन किसी विदेशी की प्राकृतिक विदेशी-जर्मन नहीं है, कि मैं कभी-कभी अजीब-अजीब शब्दों का प्रयोग करता हूं, बस आखिरी हिस्सा खा जाता हूं, 'टकराया' को 'टकरा' बोल देता हूं, 'मिलता है' को 'मिलता' बोल देता हूं। इस तरह की अजीब भाषा बोल कर मैं कई बार उससे अधिक भेद भरी बातें निकलवा लेता हूं। उसे कुछ पता नहीं चलता, क्योंकि "उसके विदेशी" उसके लिए मवेशियों से बढ़ कर कुछ नहीं हैं। जब तक वे उसके लिए सब्र से काम करते हैं और खटते हैं, तब तक उसे उनसे कोई परेशानी नहीं हैं। बल्कि वह उन थोड़े से लोगों में है, जो सचमुच उनकी कीमत समझता है। सिर्फ जब वे उससे अपनी लम्बे समय से फंसी पगार मांगते हैं तो वह उन्हें कुली-कबाड़ी, बदमाश, खच्चर और हरामखोर कहता है। "तुर्क दोस्त जानना मांगता," मैं उसे पूछता हूं, "उधर कू कैसे जाना।"

आडलर हमारे लिए यात्रा-टिकट ऐसे ख़रीद कर देता है जैसे विज्ञापन करने वाले मुफ्त बस-यात्रा का प्रबंध करते हैं, जिसमें कॉफी और केक भी मुफ्त मिलते हैं। "सब मुफ्त है," वह कहता है, "तीन बजे तुम्हें एक बस डुइजबुर्ग के मुख्य रेलवे-स्टेशन पर लेने आयेगी और दो दिन बाद तुम्हें बस से वापस भी ले आया जायेगा। रहना मुफ्त है, खाना-पीना मुफ्त है, सब कुछ मुफ्त है।" (फिर से वह अपनी मनपसंद घिसीपिटी धुन पर आ जाता है। .... *घर से दूर, भगौड़ा हूं मैं, सौ आदमी, उनसे जुड़ा हूं मैं।)*

"इधर दोस्त थोड़ा शक्की होता," मैं आडलर से कहता हूं, "शायद बोलता वो, कायकू 500 मार्क - इतना थोड़ा काम वास्ते इतना सारा पैसा कायकू?" तब आडलर लम्बे डग भरता है, "हां, ध्यान से सुनो। बात ऐसे है। तुम लोग जर्मनी को जानते हो। हमारे यहां तरह-तरह के बिजलीघर हैं। जहां हम अब काम करेंगे, वो भी बिजलीघर है। इस वक्त वह बिजली

सप्लाई नहीं कर रहा, बल्कि उसमें आम मरम्मत का काम चल रहा है। और उसमें कुछ चीजों की मरम्मत करनी तय की गई है। और उसे कम से कम समय में पूरा करना है, क्योंकि अगले हफ्ते से बिजली की सप्लाई फिर शुरू करनी है। तो ऐसा है, मसलन अख़बार वालों को पता नहीं चलना चाहिए कि ऐटमी बिजलीघर में कोई छोटा नुक्स निकल आया है, मतलब की फिर ग्रीन पार्टी[1] वाले आ जाते हैं, वगैरह वगैरह वगैरह। और फिर बिजलीघर को ठप्प कर दिया जाता है, है न!" और फिर स्वर में प्रकट भय के साथ, "ऐसे-ऐसे कुछ राजनीतिक दल हैं जर्मनी में ...... काम ऐसे हैं, जिन्हें अब पूरा करना है, ताकि बिजलीघर अगले हफ्ते बिजली सप्लाई कर सके। इसलिए वो *अच्छा पैसा* देते हैं, और तुम लोगों को भी इसलिए *अच्छे पैसे* मिलने चाहिए।"

"मि. आडलर," मैं (अली) उसे फिर कुरेदता हूं, "एक बोलता कि जर्मन जब देखो धोका करता।"

आडलर थूक निगलता है, कुछ देर चुप रहता है, जवाब सोचता है, और फिर पहली बार बेवकूफ होने की एक्टिंग करता है, "क्या कहा तुमने?"

"यह बोला कि जर्मन हमेशा धोका करता।"

"लेकिन मैंने क्या इन्हें धोखा दिया है?" आडलर प्रतिप्रश्न करता है।

इसकी मक्कारियां गिनवाने का यह सही मौका नहीं था, जैसे कि उसने अभी मेरे 2000 मार्क रखे हुए हैं, कुछ कामों के लिए कुछ लोगों की पगार मार ली उसने, आयकर और पेंशन बीमा आदि का कुछ हिस्सा वह अपनी जेब में रख लेता था, 'वगैरह वगैरह वगैरह!'

"अपने आप बोलो आप कि तुर्क को क्या देता," मैं स्थिति की अप्रियता को चालाकी से छिपाता हूं। एक संकेतशब्द, जो उसे भी पसन्द है। आडलर पोज बना कर बैठ जाता है, अपने नये ड्राइवर से सिगरेट सुलगवाता है और खुद को सही-सही से उन दलितों और गरीबों के मसीहा के रूप में पेश कर सकता है, जिसका उस द्वारा और उस जैसों द्वारा शोषण किया गया, जो जहां भी संभव हो, अपने लोगों की सेहत और उनके जीवन निर्वाह की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता है।

"जब से मैंने अपना खुद का काम शुरू किया है, तबसे मैं तुर्कों के साथ काम कर रहा हूं। और अब तक मेरे तुर्क सहयोगियों ने कभी मुझे मझधार में नहीं छोड़ा वगैरह-वगैरह। उनके साथ मेरा अच्छा गुजारा हुआ है, जो मैं जर्मन सहयोगियों के बारे में नहीं कह सकता, और मैं इस सहयोग को आगे बढ़ाना चाहता हूं, मैं, आगे भी तुर्कों के साथ काम करता रहूंगा और उन्हें काम देता रहूंगा।"

इसे वह "सहयोग" कहता है, जिसमें वह कमाता है और दूसरे खटते रहते हैं, जब तक गिर नहीं जाते और सड़ नहीं जाते। "सहयोगी" शब्द स्वयं में "सामाजिक भागेदारी" की ऐसी सकारात्मकता लिये हुए कि कुचले हुए, उत्पीड़ितों के कलेजे में ठंड पहुँचाता है।

"कुछ तुर्कों को तुर्की भी भगाता," उसे मैं मुद्दे पर लाने की कोशिश करता हूं।

---

1. जर्मनी की पर्यावरणवादी पार्टी

"नहीं, इसकी जरूरत नहीं है," वह दरियादिली से कहता है, "इसलिए मैं जर्मनों को लेता ही नहीं, ईमानदारी से कहूं तो जर्मन बोलते बहुत हैं। यहां से जाते हैं तो इसे सुना उसे सुना। और तुम लोग, तुर्क सहयोगियों के बारे में मैं जानता हूं, वे चोंच बंद रखते हैं। समझ रहे हो न? इस वजह से मैं जर्मन लेता ही नहीं। भूल जाओ जर्मनों को तो!"

"यह आरोप," मैं एक तुर्क की तरफ इशारा करता हूं, "यह तहखाने में रहता है।"

आडलर हाथ के इशारे से मुझे बोलने से रोकता है, "ठीक है ठीक है, ओ.के., कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे कुछ पता नहीं।"

"शायद मदद तो कर सकता," मैं कुछ गहरा कुरेदता हूं।

और फिर वह युद्धोतर काल के अधिकांश उद्योगपतियों की तरह अपनी छवि परिष्कृत करता है, "मदद, क्यों नहीं। गरीबों की मदद के लिए मैं खुशी से तैयार हूं। मैं शुरू से सोशल डेमोक्रेट रहा हूं, मतलब एस. पी. डी. पार्टी का सदस्य। मैं मजदूरों का हिमायती हूं। मसलन हम चाहते हैं कि लोगों की मदद करें, वे अब चार पैसे कमायें, और फिर जब वे तुर्की वापस जायें, तुम लोगों के पास 500 मार्क या कुछ तो है ..... चार पैसे तुम्हारे पास भी हैं न ......"

मैं (अली) एक और तुर्क की तरफ इशारा करता हूं, जिसका नाम सिनान है, "यह पूछता कि ख़तरनाक होता काम।"

धारावाहिक सर्ब उपन्यास

बेलग्रेड में बमबारी और मार्शल लॉ के दिन

सच्ची कहानियां

दूशान वेलिच्कोविच **अनुवाद : प्रतिभा शर्मा**

एक दन्तचिकित्सक, एक कैदी, मेरे दोस्त का दोस्त और एक अल्बानी औरत

एक दिन किसी ने मेरे सम्पादकीय कार्यालय की खिड़की खटखटाई। खटखट होने से काफी पहले हवाई बमबारी का सायरन बज चुका था।

"मैं हूं डॉ. स्तोयानोविच। आपके साथ वाले घर में रहने वाला पड़ोसी," एक वृद्ध व्यक्ति था यह। पड़ोसी, क्या आप मुझे 100 दीनार उधार देंगे? कल सुबह-सुबह ही मैं आपके पैसे लौटा दूंगा। मुझे टैक्सी के लिए चाहिएं। बमबारी शुरू होने से पहले मुझे एक मरीज को देखने जाना है।"

जेबें टटोलने के बाद सिर्फ 50 दीनार मुझे मिले। वह बोला, "इतने काफी होंगे।"

फिर वह कभी नहीं आया। बाद में मुझे पता चला कि आसपास कोई डॉ. स्तोयानोविच नहीं रहता था। इस तरह से बेवकूफ बनाये जाने पर मुझे बहुत गुस्सा आया।

कुछ दिन बाद एक आदमी मेरे संपादकीय कार्यालय में आया। साथ डबलरोटी लाया था। उसने मुझसे पूछा, "मि. वेलिच्कोविच, आपके कीमती वक्त में से आप मुझे दस मिनट दे सकेंगे?"

"जरूर, "मैंने जवाब दिया।

"आप इस डबलरोटी को देख रहे हैं। मेरे पास आख़िरी बचे अढ़ाई दीनार इस पर ख़र्च हो गये हैं। ख़ुदा का शुक्र है कि पुलिस ने मेरे लिए एक नौकरी ढूंढ निकाली है। लेकिन मेरे पास अगर स्वास्थ्य प्रमाणपत्र नहीं होगा तो मैं कुछ नहीं कर सकता। आप मुझे कुछ पैसे दे दीजिये। मैं कसम खाता हूं कि पगार मिलते ही मैं आपके पैसे वापस कर दूंगा। मैं बिल्कुल कंगाल बन चुका हूं और बड़ी नाजुक हालत में हूं।

मैंने तुरन्त फैसला किया कि इतनी आसानी से तो मैं नहीं मानूंगा। "पुलिस ने आपके लिए नौकरी नहीं ढूंढी?"

"ऐसे है," वह बोला, "मैं अभी-अभी जेल से छूटा हूं। आपने सुना होगा कि राष्ट्रपति ने बहुत से बंदियों को क्षमादान दिया है।"

"नहीं, मैंने नहीं सुना, "मैंने कहा, हालांकि मुझे याद आ रहा था कि बंदियों के जेल से छूटने के बारे में मैंने कुछ सुना तो था।

"आप तो जानते हैं कि यह सुरक्षा का प्रश्न है," वह स्पष्टीकरण देता है। "ऊपर से बम गिर रहे हों तो हम जेल में ऐसे ही नहीं बैठे रह सकते। ख़तरनाक है यह। और फौज को हमारी जरूरत है।"

"आप जेल कैसे गये थे?"

मुस्करा कर वह कहता है, "मैंने अपनी बीवी और उसके आशिक का ख़ून कर दिया था।"

एक पल के लिए मैंने सोचा कि उसका यकीन करना बेहतर रहेगा और कि मैं उसे पैसे दे ही दूं और ख़तरे से दूर रहूं। लेकिन मैंने अंत तक डटे रहने का निश्चय किया। गंभीर स्वर में मैंने कहा, "मेरे ख़्याल से अगर पुलिस ने आपके लिए नौकरी ढूंढी है तो उसे आपको पैसे भी देने चाहिए। उनके लिए यह कोई बड़ी रकम नहीं है। तो हम अभी उन्हें फोन कर लेते हैं और मैं उन्हें यकीन दिलाने की कोशिश करूंगा।"

वह दुविधा में पड़ गया और चला गया।

बाद में मुझे अफसोस हुआ कि मैंने उसे पैसे नहीं दिए। आख़िर उसने कहानी तो बढ़िया बनाई थी।

अगले दिन मेरे एक दोस्त का दोस्त मुझे सड़क पर मिला। वास्तव में वह मुझे देखकर बात करने के लिए रुक गया और उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं सिगरेटें ख़रीदना चाहूंगा।

हुआ यह था कि मेरे दोस्त के दोस्त की नौकरी छूट गई थी। उन दिनों वह सिगरेटों, पेट्रोल और सोने का धंधा कर रहा था। वह बोला कि बेलग्रेड में सोने का भाव गिर गया था। शहर का काला बाजार सोने की चीजों से भरा पड़ा था। सोने के दांत भी बिक रहे थे। दोस्त का दोस्त मुझे बता रहा था कि पूरी सुबह वह दांत उखाड़ने के काम में लगा रहा है। इस सोने का बहुत बड़ा हिस्सा कोसोवो से आ रहा था। पता नहीं कौन-कौन सी कौमों का था।

कुछ दिन बाद एक औरत, जिसने एक बार मुझसे मिलने का समय लेकर उसे कैंसल कर दिया था, आखिर मुझे मिलने आई। वह हन्ना आरेंट की नवप्रकाशित पुस्तक "द ओरिजिंस ऑव टोटैलिटेरियनिज्म ख़रीदना चाहती थी। उस समय वह पुस्तक सिर्फ *अलेग्जांद्रिया* के दफ्तर में उपलब्ध थी।

वह कहने लगी कि पुस्तक को ख़रीदने के लिए पैसे जुटाने में उसे कुछ समय लगेगा। फिर जब मैंने उसे पुस्तक दे ही दी तो वह बोली, "हमारे साथ जो कुछ हो रहा है वह कोई इत्तफाक नहीं है, हन्ना आरेंट ने इस पुस्तक में हर चीज का वर्णन किया हैं।"

मैंने जवाब दिया, "क्या मतलब?"

जवाब देने की बजाय उसने मुझे अपनी जिन्दगी की कहानी सुनाई।

"मेरा पति अल्बानी था और कुछ साल पहले वह मारा गया था। शायद आपको याद हो? सब कुछ अख़बारों में निकला था। वह एक भला पढ़ा-लिखा आदमी था, युगोस्लाविया का भूतपूर्व राजदूत। पुलिस की जांच का कोई नतीजा नहीं निकला। फिर से किसी पर जुर्म की जिम्मेदारी नहीं थी। कुछ दिन पहले ग्रोचका में मेरे फार्महाउस में चोरी हुई थी। मैंने सुना है कि जिन आदमियों ने चोरी की थी, वह गांव में एक-एक से पूछ रहे थे कि अल्बानी औरत कहां रहती है। और मैं एक बड़े इज्जतदार, पुराने सर्ब परिवार से हूं। तो यह है हन्ना आरेंट।"

मैं नहीं सोच रहा था कि यकीन करूं या न करूं। मैं ख़ामोश रहा। शायद मुझे पुस्तक उसे भेंट में दे देनी चाहिए थी।

पैसा

जो पैसा मैंने बचा कर रखा था वह जल्दी-जल्दी ख़त्म हो रहा है। परिवार को जीवित रहने को कुछ तो चाहिए, अतः हम सोच रहे हैं कि क्या करना चाहिए। इन दिनों इस देश में कोई पैसा तो नहीं कमा सकता, पर शायद हम कोई चीज बेच सकते हैं।

कार के बेचने का ख़्याल तो हम दिमाग से निकाल देते हैं। अगर हमें यहां से भागना पड़ा तो इसकी जरूरत पड़ेगी, और हमने अगर इसे अब बेच दिया तो भविष्य में दूसरी ख़रीद नहीं पायेंगे।

शायद एक दो कलापूर्ण चित्र बेच दें। लेकिन आजकल क्या ऐसी चीजों की मांग भी है? मेरे पास सल्वाडोर डाली[1] का एक योगचित्र है। शायद उसे कोई ख़रीद ले? हमारे छोटे से संग्रह में वही एक अमूल्य वस्तु है।

शायद नहीं भी। शायद यह नकली हो। साल्वाडोर डाली पैसों के लिए दूसरों के बनाये चित्रों पर हस्ताक्षर करने में नहीं हिचकता था। वैसे तो हम सबको योगचित्र पसंद भी है। ये दो पोस्टकार्ड हैं, एक का ऐसे परिष्कार किया गया है कि दूर से देखने पर इस पर एक मास्क पहना आदमी नजर आता है। इस के ऊपर केवल एक शब्द लिखा है : बाबालो

शायद हम ग्लावुर्तिच द्वारा बनाया हाइडेग्गर[2] का चित्र बेच सकते हैं? मगर बेलग्रेड में एक ऐसे क्रोट द्वारा बनाया गया चित्र कितने में बिकेगा, जिसका जन्म मोंटेनेग्रो में हुआ था, और जो युगोस्लाविया के छिन्न-भिन्न हो जाने के बाद क्रोशिया भाग गया था। वैसे भी मेरे लिए यह चित्र बहुत अनमोल है और मैं इसे बेच नहीं सकता।

मेरे पास रादोवन क्रागूली का बनाया एक बड़ा चित्र भी है। युगोस्लाव मूल का क्रागूली पेरिस में रहता है। लेकिन यह मुझे तोहफे में मिला है और तोहफे बेचे नहीं जाते।

1. सुप्रसिद्ध स्पेनी चित्रकार
2. सुप्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक

साइकिल! नहीं, सब इस पर एकमत हैं कि साइकिल नहीं बेचनी। जब हम अब पेट्रोल अपने बहुत ही जरूरी कामों के लिए बचा रहे हैं तो साइकिल के बगैर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

तो हम कुछ भी न बेचने का फैसला लेते हैं। विचार-विमर्श के बाद मैं अपने बेटों को उस चीज के बारे में बताता हूं, जो मैंने विएना के निकट एक छोटे बंगले में देखी थी, जहां मुझे मेरा एक आस्ट्रियाई दोस्त ले कर गया था। यह एक बहुत भारी-भरकम प्यानो था। जब मैंने पूछा था कि इसे कौन बजाता है तो बंगले के मालिक ने कहा, "कोई नहीं।" मेरे पिता ने 1945 में एक विएनी औरत से वह एक किलो मक्खन के बदले में ख़रीद लिया था।

जर्मन उपन्यासअंश

जैसी करनी वैसी भरनी

आन्द्रेयास केल्लेटाट **अनुवाद : अमृत मेहता**

मेरा पिता और दूसरे लोग नवंबर 1938 में स्पष्टतः गूंगे बन चुके थे, एक साल बाद कूनो उतना ही बातूनी बन चुका था। 19 नवम्बर 1939 को उसने अपनी डायरी में लिखा कि वह राजनीति से बच कर ही रहता है और ज्यादा बात नहीं करता, लेकिन फिर भी आजकल जो बड़ी-बड़ी ऐतिहासिक घटनायें घट रही हैं, उनके बारे में कुछ न कुछ तो लिखना ही पड़ेगा। ऐसी ही एक ही ऐतिहासिक घटना 8 नवम्बर 1939 की शाम को म्यूनिख़ में घटी थी, जिसमें एक बम- हमले में हिटलर के कई पुराने सहयोगी मारे गये थे और बहुत से ज़ख़्मी हो गये थे। जर्मनों को, मेरे पिता ने लिखा था, थर्ड राइष के इन शहीदों के सम्मान में झंडे नीचे कर देने चाहिएं। लेकिन विधि का विधान है कि हमारा फ्यूचर [1] हमारे लिए बच गया है, और इस दिल दहलाने वाली जलालत भरी करतूत में जनता के लिए सिर्फ यही खुशी का निमित्त बचा है।

कुछ दिनों बाद कूनो सोत्तकोव्स्की जानता था कि अपराधी कौन था; अपराधी गेओर्ग एलस्टर था। इस अपराध को सौंपने वाली, 23 नवंबर, 1939 को उसने लिखा, बेशक ब्रिटिश गुप्तचर सेवा थी, *सीक्रेट सर्विस,* और इस लज्जाजनक कृत्य का इंतजाम ओट्टो श्त्रास्सर ने किया था। इस नाम के बाद कूनो ने तीन विस्मयबोधक चिह्न लगाये। फिर उसने लिखा, जैसा कि ग्योब्लस[2] ने अपना हाथ उसे दे दिया हो, कि जर्मन गुप्तचर संस्था गेस्टापो ने बड़े शानदार ढंग से इस जुर्म का कम से कम समय में और एकदम सही-सही भेद भी पा लिया था, जिसकी वजह से सारे दूसरे देशों ने गेस्टापो की बहुत तारीफ भी की थी। किसी भी इंसान द्वारा सोचे जा सकने वाले इस सबसे जघन्य अपराध की कीमत भी करने वाले को चुकानी पड़ेगी। यह कीमत क्या होगी, यह गेओर्ग एलस्टर था कौन, और अपनी गिरफ्तारी के बाद वह गया कहां, क्यों उस पर कोई ऐसा मुकद्दमा नहीं चला, जिनकी जानकारी प्रेस में बढ़ा-चढ़ा कर दी जाती हैइन सबके बारे में लगता है कि कूनो ने कहीं नहीं पूछा, कम से कम अपनी डायरियों और ख़तों में तो नहीं। शायद आत्मसुरक्षा के लिए उसने स्वयं को सेंसर करने का सहारा लिया है क्या? उस समय की तरह, जब उसका पिता उसकी डायरियों और उसके ग्डांस्क से लिखे पत्रों की खोज-खबर रखा करता था? खैर छोड़ो इसे ....

यह लिखने के बाद कूनो एलस्टर, श्त्रास्सर और सीक्रेट सर्विस से सीधा फिनलैण्ड जा पहुंचा था। 18 अक्तूबर 1939 को उसने अपनी डायरी में अख़बार की एक छोटी सी कतरन चिपकाई थी, जिसमें हेलसिंकी में बंकर बनाने, और गृहमंत्री केक्कोनेन द्वारा बड़े शहरों वीपूरी, ताम्पेरे और तुर्कु को ख़ाली करवाने, और नगरवासियों को अपनी-अपनी दुछत्तियों से

---

1. यह शब्द हिटलर के लिए प्रयुक्त किया जाता था, जिसका अर्थ है नेता।
2. हिटलर का प्रचार मंत्री

सामान निकाल कर पानी तैयार रखने के आह्वान, फिन्नी स्कूलों और यूनिवर्सिटियों के बंद हो जाने और म्यूजियमों से कलाकृतियों को उठा कर सुरक्षित जगहों पर पहुँचाने की रिपोर्टें थीं। इन सब का क्या मतलब था ?, 18 अक्तूबर को उसने अपनी डायरी में प्रश्न किया था। जवाब उसने दिसम्बर के प्रारंभिक दिनों में लिखा था : फिनलैण्ड और रूस में युद्ध छिड़ गया था। 35 लाख फिन्नियों का साढ़े 14 करोड़ रूसियों से युद्ध था, जिसमें हार निश्चित थी। लेकिन फिन्नी अपनी आजादी खोना नहीं चाहते थे, जिसे वह, कूनो ने लिखा था, समझ सकता है, लेकिन आज के अनुभवों के बाद यह सोच उसे ख़तरनाक लगती है। उसे छोटे फिनलैंड पर सचमुच तरस आता है। उत्तरी प्रदेश के शानदार इंसानों पर, हजारों झीलों वाले और सफेद रातों वाले देश पर तरस आ रहा है उसे।

हिटलर तथा हिम्मलर[1] और उनके साथ ही जर्मनी के युद्धोत्तर-इतिहासकारों को भी विश्वास था कि अस्थायी मजदूर गेओर्ग एलस्टर जर्मन जनता को हिटलर तथा फ़ासीवाद से मुक्त करवाने की योजना अकेले बना या कार्यान्वित नहीं कर सकता था। एलस्टर श्रफ [2] बेर्ग तो था नहीं आख़िर। वह एक अनपढ़ कारीगर था, और एक अस्थायी मजदूर। हिटलर की हत्या करने से उसे क्या मिल जाता ? और भारी सुरक्षा प्राप्त बुर्गरब्रोए व पब के तहखाने में वह षड्यन्त्रकारियों तथा सहायकों के सहायकों की मदद के बिना इस काम को कैसे अंजाम दे सकता था? जिसमें हिटलर मर जाता, अगर वह पहले थोड़ी देर के लिए जबान पर लगाम न देता, सिर्फ इसी एक बार, अगर यह बड़बोला 13 मिनट रुक गया होता।

लेकिन ख़राब मौसम की वजह से फ्यूरर हवाई-यात्रा नहीं करना चाहता था और उसी रात बर्लिन लौटना भी चाहता था, ट्रेन से। इसीलिए उसने अपनी जीत- और - लहू की बकवास अचानक रोक दी थी और समय से पहले तीन बार *"विजय हमारी है"* का नारा लगा कर अपने हत्यारे दोस्तों से विदा लेकर म्यूनिख गया था। गेओर्ग एलस्टर द्वारा एक हफ्ते की मेहनत से बनाया और वक्ता-मंच के एकदम पीछे लगे एक खम्भे में रखा गया घातक विस्फोटक फटने से तेरह मिनट पहले। नहीं तो वह उसे शहीदों के स्वर्ग या फिर पाताल तो पहुंचा कर ही रहता। एलस्टर उसे पाताल या नरक पहुंचा कर ज्यादा ख़ुश होता। क्योंकि हिटलर एक नंबर का झूठा है। क्योंकि हिटलर ने जर्मन मजदूरों की हालत जरा नहीं सुधारी। 1929 में एक बढ़ई को एक घंटा काम करने का एक राइषसुमार्क[3] मिलता था, अब वह घट कर 69 फेनिष [4] हो गये हैं। अब उसे अपनी मर्जी से नौकरी बदलने की इजाजत भी नहीं है, और अब वह अपने बच्चों का मालिक भी नहीं रहा, मालिक तो हिटलर यूगेंड[5] हैं। हिटलर,

---

1. हिटलर प्रशासन में तीसरा सबसे ताकतवर आदमी। "शुत्सश्टाफ्ल" (हिटलर तथा नाजी पार्टी के अन्य उच्चाधिकारियों की सुरक्षा हेतु गठित संगठन) का प्रमुख।
2. जर्मन थलसेना में कर्नल, जिसने 20.7.44 को हिटलर की हत्या का प्रयास किया था।
3. जर्मनी की युद्धपूर्व की मुद्रा।
4. राइषसुमार्क के एक से कम के सिक्के।
5. नाजियों का युवा-दस्ता।

ग्योरिंग[1] और गोएबल्स को तो मौत पड़नी चाहिए, क्योंकि वे जंग को बढ़ाये जा रहे हैं, और पश्चिमी देश इसे रोक नहीं रहे। 1937 से गेओर्ग एलस्टर को यह साफ नजर आना शुरू हो गया था कि म्यूनिख़ समझौते के बाद भी हिटलर सीधे-सीधे युद्ध की तैयारी कर रहा है, और सिर्फ उसकी मौत ही जर्मनी को इस महाकाल से बचा सकती है।

8 नवंबर 1939 को हिटलर इन साढ़े तेरह मिनट की वजह से बच निकला है। यह ईश्वर का विधान था, मेरे पिता का विश्वास था। हिटलर ने अपने प्रिय अनुयायी राइनहार्ट हेडरिष को किसी भी तरह से एलस्टर का मुंह खुलवाने का काम सौंपा। उस पर वशीकरण का तरीका इस्तेमाल कीजिये, उसे नशीली दवाएं दीजिये; *हर उस तरीके का, चीज का, इस्तेमाल कीजिये, जिसे हमारा आधुनिक विज्ञान आजमा चुका है। मैं जानना चाहता हूं कि उकसाने वाले कौन हैं। मैं जानना चाहता हूं कि इसके पीछे कौन है।* गेस्टापो तक ने उससे पूछताछ करके दो सौ पृष्ठ की रिपोर्ट हत्या की कोशिश की वजहों की लिखी है, उसकी एकदम पेशेवर कार्यविधि की भी। इस बीच इस गुप्त रिपोर्ट को पढ़ा भी जा सकता है।

एलस्टर ने सब कुछ अकेले किया था। वह पत्थर की एक खान पर काम कर रहा था और विस्फोटक पदार्थों का प्रबंध उसने वहीं से किया था। म्युनिख़ में उसने एक फ्लैट किराये पर ले लिया था, और वहां उसने मियादी पलीता तैयार किया था। उसे बनाने में कोई समस्या इसलिए नहीं आई क्योंकि बीस के दशक के अंतिम वर्षों में वह घड़ियां बनाने की एक फैक्ट्री में काम कर चुका था, और उसकी तरफ किसी का ध्यान इसलिए आकर्षित नहीं हुआ कि आसपास जो रह रहे थे उन्हें उसने कह रखा था कि वह आविष्कारक है। सितम्बर से वह हर शाम उस शराबखाने में जाया करता था। हरेक की तरह वह भी जानता था कि बड़े-बड़े तमगों वाले नाजी हर साल 9 नवंबर की पूर्वसंध्या को हिटलर के साथ विजय के उत्सव पर ठाठ-बाठ से खाया-पिया करते थे, मुसोलिनी[2] की नकल की उस यादगार के तौर पर, जब उन्होंने 9 नवंबर 1923 को फील्ड-मार्शल-वीथि में प्रयाण किया था, उन 16 शहीदों की याद में, जो वहां मारे गये थे।

ब्युर्गब्रोए शराबखाने में हर शाम गेओर्ग एलस्टर मामूली सा खाना खाता था, 60 फेनिष का खाना, और वहां झाड़ू रखने वाले कमरे में छुप जाता था। रात को जब शराबख़ाना बंद होता था तो वह खम्भे पर अपने काम पर लग जाता था, तीस दिन इस काम में लगा रहा वह। उसने इस खम्भे में एक छेद किया था, एक ख़ास जगह को खोखली बनाता रहा था, इतनी खोखली कि वह अंततः उसकी विस्फोट-मशीन रखने के लिए पर्याप्त बड़ी हो। रात 9:20 पर धमाका हुआ, एकदम उसी समय, जो गेओर्ग एलस्टर

1. नाजी गुप्तचर संस्था 'गेस्टापो' का संस्थापक।
2. भूतपूर्व इतालवी फासीवाद तानाशाह

चाहता था, यह थी उच्चकोटि की जर्मन कारीगरी। दस लोग मरे थे, लेकिन हिटलर बच गया था, वारदात की जगह से जा चुका था, जाने के समय से तेरह मिनट पहले। हिटलर में प्रतिशोध की भावना बहुत थी। साढ़े पांच साल बाद भी उसे म्यूनिख़ का बम-कारीगर याद था और 5 अप्रैल 1945 को उसने बर्लिन के राख का ढेर बने खंडहरों के नीचे बने अपने सुरक्षा-बंकर में, जहां ईश्वर के विधान ने उसे कुछ और समय जी लेने का अवसर दिया था, अपने शुत्सश्टाफ्ल के अफसर एंर्स्ट काल्टेनब्रुन्नर को वीर गेओर्ग एलस्टर की हत्या का आदेश दिया। हिटलर ने तब तक उसे विभिन्न यातना-शिविरों में जीवित रखा हुआ था। फ्यूरर के हत्या के आदेश को 9 अप्रैल 1945 को रात में लगभग 11 बजे डाख़ाऊ में कार्यान्वित किया गया, एलस्टर की गुद्दी पर गोली मार कर, अमरीकी सेना द्वारा हिटलर के इस वृहत जर्मन यातना-शिविर को फासिस्टों से मुक्ति दिलाने से तीन सप्ताह पहले।

किसी गेओर्ग एलस्टर का अजन्मा बेटा होना क्या मेरे लिए अच्छा होता? मूर्खतापूर्ण प्रश्न! लेकिन एलस्टर कैसे जान गया कि हिटलर का गुप्त इरादा क्या था, जो मेरा पिता नहीं जान सका। बेवकूफ तो नहीं था वह! मैं उसकी डायरियों में 20 जुलाई के बाद की तारीख़ खोजने के लिए तमाम पत्र पलटता हूं। 1944 के पहले आठ महीनों में कोई रेखाचित्र नहीं है, इस साल की डायरी फ्रांस चली गई थी, सेंट ल्यो में खो गई थी, 11 जुलाई को हमले के दौरान। तब तक तो कूनो तकरीबन ख़ुद ही खो चुका होगा और कुछ समय कुछ नहीं लिख पाया था। जब तक कि इन्होंने उसे फौजी अस्पताल में बाद के कारनामों के लिए सिलाई कर के साबुत नहीं बना दिया था। जनवरी से अगस्त 1944 उसके जीवन का एकमात्र अध्याय है, जिसमें उसने डायरी नहीं रखी थी।

चूंकि कूनो सोत्तोव्स्की को वर्षगांठों की भनक थी, क्योंकि वह एक ऐसा आदमी था, जिसके लिए साल का हर दिन वर्षगांठ होता था, सिर्फ 20 मई ही नहीं, जो उसका 1941 का क्रेटा दिवस[1] था, मैंने उसकी डायरी में 1945 के वर्ष की खोज भी की। आवरण-पृष्ठ पर ख़ास तौर से *युद्ध की डायरी* लिखा है, और मेरे पिता ने अपनी इस 7वीं युद्ध की डायरी में 29 जून 1945 से लिखना शुरू किया है, मोदेना, इटली के एक अमरीकी बंदी-शिविर में, यूरोप को फासीवाद से मुक्ति मिलने के लगभग दो माह बाद। 20 जुलाई 1945 को वह इस डायरी में सचमुच वह लिखता है, जो बारह महीने पहले भेड़िये की मांद में घटा था, इस बीच उसके न रहे देश प्यारे पूर्व प्रशिया के बारे में। लेकिन उसके लिखे को पढ़ कर मेरा चेहरा शर्म से लाल हो जाता है। दसवीं बार पढ़ते हुए भी कै होने लगती है। क्या अब भी मैं इसे अपना बाप समझूं? कूनो सोत्रोव्स्की, बडे-बड़े हिलते कानों वाला बपतिस्मा-दाता का बेटा, हान्नषेन माश्कट से जिसका प्रेम असफल रहा था।

1. जर्मन थलसेना में जनरल फील्ड-मार्शल

दुनिया को क्या आज से एक साल पहले की 20 जुलाई अब भी याद है? 20 जुलाई 1945 को उसका संस्करण इस तरह शुरू होता है। जैसे नियति ने अपने ठंडे और खुरदरे हाथ से बृहत जर्मन साम्राज्य पर झपटा मारा हो? जैसे हम अब भी उसके पंजों से बच गये लगते हों? बुरा हुआ यह, मेरा पिता 20 जुलाई 1945 को लिखता है। क्योंकि ईश्वर के विधान में हमारी बरबादी पहले से ही लिखी हुई थी। बस जरा सी यह बुझती लौ टिमटिमायी थी, सारे दुःख-दर्दों की अवधि बढ़ गई थी। हिटलर जैसे किसी चमत्कार से हम लोगों के लिए बच तो गया था, वह लिखता है, लेकिन वह जहर, जो हत्यारों ने फैलाया था, किसी को भी पूरा बरबाद नहीं कर सका था, और इससे फटाफट सत्यानाश हो गया। वह नहीं जानता था कि 20 जुलाई 1945 को इन चीजों पर विश्व का क्या मत था, लेकिन वह कल्पना नहीं कर सकता कि अब तक लोग षड्यंत्रकारियों को शहीद मान रहे हैं कहीं न कहीं। ये लोग जलील और गद्दार हैं। वह लिखता है। जो कुछ वे चाहते, सोचते या जानते थे, उसका कोई महत्त्व नहीं था। क्योंकि उनका फर्ज सिर्फ एक था : हुक्म मानना। ईमानदार लोग इस दुनिया में धीरे-धीरे ख़त्म तो जरूर हो रहें हैं और शायद बूढ़े वित्सलेबेन[1] को ऊपर स्वर्ग भेज दिया जाये, परन्तु इसका कोई महत्त्व नहीं है। उसकी किस्मत में बरबाद होना और ख़त्म होना लिखा था। *लेकिन, हम, मेरा पिता लिखता है, वफ़ादार थे और अंत तक वफ़ादार रहे थे।* अब उसे अपनी आत्मा को मार कर तो नहीं रखना है, यहां भी नहीं, मोदेना के बंदी-शिविर के इन गलत हालात में भी नहीं। गर्वपूर्वक अंजाम दिये गये अपने कर्तव्य पर वह गर्व कर सकता है, सब दुख सहन करने की शक्ति उसे सिर्फ इसी से मिलती है, बल्कि इस धरती पर यह उसकी खुशी का एकमात्र कारण हैः पूरे किये गये कर्तव्य पर गर्व कर सकना। आदर्शों से पेट तो नहीं भरता, अक्सर कहा जाता है, परन्तु कयामत के दिन वह एक छके हुए गद्दार के रूप में थरथराते हुए अपने ख़ुदा के सामने खड़े होने की बजाय कारावास में आधा पेट खाने के कारण शिथिल हुए अंगों को लेकर खड़ा होना पसंद करेगा। विश्व-इतिहास अवश्य प्रगति के पथ पर है, और घृणा तथा षड्यंत्र भविष्य में भी कौमों को अंधा बनायेंगे। लेकिन जब तक यह धरती है, वफादारी और ईमानदारी की इज्जत होगी और सद्गुण फले-फूलेंगे। वह जानता है कि विश्व-राजनीति दिल से नहीं चलाई जाती। लेकिन हृदयहीन जर्मन, इसकी भी वह कल्पना नहीं कर सकता, यह भी केवल एक इच्छाजनित धारणा है। अगर जर्मन "अबे मोची, वही कर जो तुझे करना आता है" वाले पुराने मुहावरे पर चलते तो शायद सुखी और संतुष्ट होते। जर्मनों को अब दो युगों तक इसका प्रायश्चित करना होगा। लेकिन क्या यह एक कलंक है, मेरा पिता 20 जुलाई 1945 को अपनी 7वीं डायरी में पूछता है। नहीं, कलंक नहीं यह। कलंक सिर्फ यही है कि इतने सारे लोग अपना गौरव भूल गये, और सर झुका दिया कुत्तों की तरह और विजेता के सामने धूल में लोटने लगे।

---

1. इस दिन जर्मन सेना ने ग्रीस के क्रेटा द्वीप पर अंग्रेजों पर विजय पायी थी, और 1945 तक इस द्वीप पर कब्जा बनाये रखा था।

मुड़ कर पीछे देखूं तो शायद 40 साल पहले मेरा अपने बाप पर चिल्लाना तब सही था, जब वह फिर एक बार अपने प्यारे पूर्व प्रशियाई देश को खो बैठने का रोना रो रहा थाऔर वह भी येगरमाइस्टर[1] के तीसरे अधिये के सामने बैठा वार्सा [2] में घुटने टेकने को शाप दे रहा था, इस बेईमान बिकाऊ, इस, हरामी गद्दार, इस जो मेरा जन्मदाता इस दिन कहने से नहीं चूका नार्वी मिस्टर फ्राम [3] को। तब मैं उस पर चिल्लाया था, और इस वाक्य को मैं आज भी वापस नहीं लूंगा : *बोया तुम लोगों ने, और काटा हमने।*

---

1. जड़ीबूटी युक्त मीठी जर्मन ब्रांडी।
2. पोलैंड की राजधानी।
3. 1969 से 1974 तक पश्चिमी जर्मनी के चांसलर रहे विल्ली ब्रांट का जन्म नार्वे में हुआ था। उनका नाम था हेर्बर्ट फ्रांम। वे पूर्वी गुट के देशों से शत्रुता मिटाना चाहते थे और अपने प्रधानमंत्री-काल के दौरान उन्होंने 1970 में वार्सा में नाजियों द्वारा/जर्मनों द्वारा युद्ध में पोलैंड वासियों पर अत्याचार करने के लिए घुटनों पर गिरकर उनसे क्षमा मांगी थी।

स्विस कथा

जीवन साथी

क्रिस्टीना बूख़्म्युल्लर **अनुवादः अमृत मेहता**

रॉबर्ट को याद नहीं था कि कभी किसी ने उसे लाड़-प्यार दिया हो, उसे लगता था कि वह उससे अछूता ही रहा था। मां अजनबी थी; पिता की मृत्यु हो गई, जब वह अभी पढ़ाई ही कर रहा था।

उसे क्या बनना है, यह उसके भाग्य में पहले से ही लिखा था। वह जौहरी बनेगा और अमीर होगा, वह एकमात्र संतान था अपने माता-पिता की।

उसे प्रतीक्षा करना आता था और वह उसने की; एक नेक युवक था वह जब उसने दाय ग्रहण की। शुरू-शुरू में वह सावधान रहा, वह व्यापारी था और जानता था कि जनता की राय में कितना वजन होता है; परन्तु जहां तक उसकी मां का प्रश्न था, उसके लिए उसने अपना यह मुखौटा उतार फेंका।

रॉबर्ट पैसा लुटाने में लग गया। शानदार होटलों में, जगह कोई भी हो सकती थी, और फिर उसने अपने दोस्तों को घर लाना शुरू कर दिया। फिजूलखर्ची करने की उसे लत सी लग गई थी; माँ शिकायत करती थी, वह उसका मखौल उड़ाता था। पैसा उसका था। मां के आत्मसम्मान ने उसे सह-अपराधिणी बनने पर मजबूर कर दिया; किसी को भी उसके बेटे की बीमारी के बारे में हवा नहीं लगनी चाहिए, परन्तु उसके ऊपर वाले कमरे में जो होता था, वह उसे सह नहीं पा रही थी, और फिर वह ऊपर जा छुपती थी, ऊपरी छत के नीचे वाले सब से अंतिम कमरे में। वह जैसे ज्वरग्रस्त सी वहां बैठी रहती थी, सुबह तक, नफरत से हांफते हुए। जो भी मन में आता था, रॉबर्ट ख़रीदता था, और कीमत चुकाता था। हरजानों ने उसे ऐंठने वालों से मुक्ति नहीं दिलाई, उसकी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा नाकाम धंधों में लग गया और ऐसे गायब हो गया जैसे गधे के सिर से सींग। छोकरों ने उसके धंधे का सत्यानाश कर दिया।

कुछ सालों में उसकी साख जाती रही, बैंक सतर्क हो गये, धंधा चौपट हो गया। जब उसकी नाज़ुक माली हालत ने उसे सौदा करने पर मजबूर किया, तब उसकी उम्र पैंतालीस थी।

एक मित्र के माध्यम से उसने अपना परिचय त्सुमबाख़ परिवार से करवाया, वे करोड़पति थे, उनकी तीनों लड़कियां अभी भी कुंवारी थीं, सब की सब और सब से बड़ी के बारे में कहा जाता था कि वह ख़ूबसूरत थी।

रॉबर्ट का उन्होंने सम्मानपूर्वक, साथ ही संकोचपूर्ण स्वागत किया। उन्हें वह पसंद आया। डॉक्टर-पत्नी ने उसे पुनः आने का निमंत्रण दिया, जब भी वह उधर आये तो। उसकी बदनामी अभी तक बेर्न क्षेत्र तक नहीं पहुंची थी।

शीघ्र ही उसका उस घर में प्रसन्नतापूर्वक स्वागत किया जाने लगा, वह कभी भी ख़ाली हाथ नहीं आता था, महिलाओं के लिए उपहार लाता था। और लिडिया के लिए सफेद गुलाब।

श्रीमती त्सुमबाख़ समझ चुकी थी कि लिडिया ऐसे आदमी को अस्वीकार नहीं कर सकती, इस बार उसकी बेटी को हाँ करनी होगी। उसने स्वीकार किया, मुस्कराहट के साथ, खुशी से पागल होकर। और कोई रास्ता नहीं था, वह रॉबर्ट से प्यार करती थी, पहली बार उसे किसी से प्यार हुआ था।

लिडिया छत्तीस साल की थी।

लगन से पहले के हफ्तों में उसके चेहरे में परिवर्तन आ गया था, वह भर गया था, स्निग्धता आ गई थी उसमें। उसकी सुंदरता में भी एक विशेषता थी; लम्बी, छरहरी, आम ख़ूबसूरती से हट कर। सुस्पष्ट गंडास्थियां उसके असाधारण चेहरे-मोहरे को चार चांद लगाती थीं, आह, उसकी निर्मल आंखें, जिनका आपस में फासला काफी था। जब वह युवती थी तो उसे अपने बालों पर गर्व होता था, उसके घुटनों तक आते थे बाल; बाद में वे उसे बोझ लगने लगे थे। यदि उसकी मां बुरा न मानती तो वह उन्हें काट देती। जब से वह रॉबर्ट से मिली थी, वह फिर से दिन में दो सौ बार कंघी करने के लिए समय निकाल लेती थी। बहनें उसकी तांबे जैसे लाल रंग की चोटियों को दोहरा बांध कर सेहरे की तरह उसके सिर पर सजाने में उसकी मदद करती थीं। यह उसका सबसे ख़ूबसूरत गहना है, रॉबर्ट ने कहा था।

1929 के अक्तूबर के अंतिम रविवार को लगन हुआ था, ओत्सविल में रॉबर्ट के प्रथम प्रवेश के एक वर्ष पश्चात्।

रॉबर्ट ने कंजूसी नहीं की। शादी का जश्न उसने जाने-माने प्रथम श्रेणी के होटलों में मनाया, अपने सामाजिक स्तर के अनुकूल, मित्रों और नये संबंधियों के साथ।

उसकी मां की अनुपस्थिति का एहसास श्रीमती त्सुमबाख़ के अतिरिक्त किसी को नहीं हुआ। उसकी अचानक बीमारी में श्रीमती त्सुमबाख़ को कुछ गड़बड़ नजर आई; ऐसे दिनों पर तो इंसान ख़ुद को संभाल लेता है। और फिर उसका पति आल्बर्ट। क्या कहना चाहता था वह उसे कल रात? अरसे बाद वह कल पहली बार उसके बिस्तर पर आया था, उदास नजरें लिए। उसने उस तस्वीर को बलपूर्वक अपने मन से निकाल दिया था, परन्तु चर्च में वह फिर उसके सामने आ गई थी और अब, खाना खाते हुए। यूरा पर्वत के पीछे सूर्यास्त हो रहा था; उसकी किरणों में गर्मी नहीं थी। परन्तु उसकी दीप्ति चेहरों पर सोना उड़ेल रही थी। प्रकाश जैसे लिडिया के बालों में जा बसा था और एक क्षण के लिए ठहर गया था। उसकी बच्ची कांति से परिपूर्ण प्रतीत हो रही थी, उसकी सुंदर लिडिया। आल्बर्ट ने बिना बात उसकी प्रसन्नता में विघ्न डाला था, उसने भूल की थी; वह अपनी बेटी को निश्चिन्त रॉबर्ट के हवाले कर सकती है।

त्सुमबाख़ परिवार के साथ ही अधिकांश मेहमान विदा हो गये थे, और शीघ्र ही हॉल ख़ाली हो गया। कॉफी के बाद आये युवक-युवतियां ही नवदम्पति के पास बैठे हुए थे। उनका व्यवहार अनौपचारिक था, लिडिया उनमें से किसी को भी नहीं जानती थी। रॉबर्ट ने कहा कि

एक-एक गिलास शैंपेन का वे सब घर जा कर मिल कर पियेंगे- और कार में सब के लिए जगह भी थी।

इस तरह लिडिया ने गृह-प्रवेश अपने पति के दोस्तों के साथ किया।

रॉबर्ट का व्यवहार पहले से भिन्न था, वह ऊंचे स्वर में हंस रहा था। ऐसा करते हुए उसकी भूरी आंखें सिकुड़ जाती थीं, उसके चेहरे की रूपरेखा अभी तक अन्जान रही झुर्रियों में खो जाती थी; केवल पुतलियां स्थिर रहती थीं, किसी आलपीन के सिरे की तरह छोटी।

लिडिया ने अपना गिलास मुट्ठी में जकड़ लिया, अभी उसे गर्मी लग रही थी, अब वह ठिठुर रही थी। लेकिन अचानक रॉबर्ट फिर अपने जैसा हो गया; उसने प्यार से उसके गाल सहलाये और पूछा कि वह थक तो नहीं गई। वह खड़ी हो गई। ''और गुलदस्ता मत भूलना'', उसने कहा।

सीढ़ियों में अंधेरा था, वह बिजली का बटन टटोलने लगी। रॉबर्ट ने सही बताया थाः जरूरत पड़ने पर एक धुंधला सा बल्ब सीढ़ियों पर रोशनी करता है। उसने अपनी मां के बारे में सब कुछ बताया था; कैसे वह कंजूसी की बुरी आदत के मारे छुप कर बल्ब बदल दिया करती है और कैसे उसका जीना हराम कर रखा है उसकी मां ने। उससे गुस्सा करने का कोई फायदा नहीं, उसकी दिमागी हालत ठीक नहीं है। इसी कारण लिडिया शादी से पहले केवल एक बार उसके घर आई थी। वास्तव में ही श्रीमती विंटर का व्यवहार कुछ अजीब था। बेचारा रॉबर्ट। लेकिन अब वह उसकी पत्नी थी; वह उसे दिखा देगी कि सुमबाख़ों की लड़की कैसे घर चलाना जानती है, वह इसमें सफल होगी, रॉबर्ट के लिए।

बेडरूम तीसरी मंजिल पर था, दूसरी पर सास रहती थी। उसे लगा कि दरवाजे के दूधिया कांच के पीछे उसे उसकी परछाई नजर आई है, और वह एकदम से डर गई। उसे वह जरा भयावनी तो लगती थी। अंतिम सीढ़ियां वह भाग कर चढ़ी।

बदहवास वह कमरे में घुसी और उसने तुरंत जूते उतारे। वह नहीं चाहती थी कि बूढ़ी को उसकी आवाज जाये।

उसकी चीजें सुथरे ढंग से, तह लगी, अल्मारी की दराज में पड़ी थीं, दूसरी अल्मारी में कपड़े टंगे हुए थे। अच्छा तो यह उसकी अल्मारी थी। एक और अल्मारी में रॉबर्ट के दर्जी से सिले कपड़े थे और उसमें से कपूर की सुगंध आ रही थी। सब कुछ अपनी जगह पर था, सिर्फ उसका नाइट-गाउन उसे नहीं मिला। वह अपने भीतर पहनने वाले कपड़ों को उलटने-पलटने लगी, और जब उसे यह ख़्याल आया कि अगर रॉबर्ट उसे ऐसा करते देख ले तो उसमें एक सिहरन सी दौड़ गई। अब समझ में आया उसे कि उसे पहले भेज कर रॉबर्ट ने कितना सयानापन दिखाया था।

स्लीपिंग-गाउन ऊंचे पलंगों में से पहले वाले पर बिखरा पड़ा था। वह उसके आने से पहले तैयार होना चाहती थी, परन्तु अल्मारियों के शीशे वाले दरवाजों ने उसे बांध लिया था। वह हर ओर से स्वयं को देख रही थी, अपनी पीठ, अपनी रूपरेखा, स्वयं को हाथों में फूल लिये काली पोशाक में देख रही थी। घड़ी का एक घंटा बजा, फिर बहुत सारे बजे, लिडिया डर गई; समय हो चुका था अब। पहली बार उसने दर्पण के सामने अपने कपड़े उतारे, अपने लंबे, निस्तेज शरीर

के सामने वह लज्जित खड़ी थी। लेकिन जब उसने बाल खोल लिये तो वह स्वयं को देख कर मुस्कराई। अंधकार में रात्रि के स्वर गूंज रहे थे। अपनी सांस के पीछे-पीछे दूसरी सांस आती थी, थकी हुई, परन्तु हर बार जब वह सांस रोकती थी तो उसे अपना लहू सरसराता सुनाई देता था। लिडिया निर्जीव अजनबी बिस्तर पर लेट गई।

वह सरसराहट को सुव्यवस्थित नहीं कर पा रही थी, अभी भी वह उस स्वप्न से पूरी तरह नहीं जागी थी, जो उसके मस्तिष्क में अभी भी बसा हुआ थाः वह घर गई थी, और उसने अपने पिता के लिए कोई वाद्य बजाया था। फिर उसने रॉबर्ट को पहचान लिया।

''सो रही हो?'' उसने पूछा। उसने आंखें बंद किये-किये सर हिलाया, रॉबर्ट ने बत्ती बुझा दी।

बिस्तर पर बिछी कड़क चादर में सरसराहट हुई, फिर सन्नाटा छा गया। कमरे में पूर्ण अंधकार नहीं था, सुबह होने वाली होगी। लिडिया हिली नहीं। समय रूक गया था।

जब अंत में वह समझी कि रॉबर्ट सो रहा था, उसके बगल में ही गहरी नियमित सांस भरते हुए सो रहा था, तो एक पल के लिए उस का दिल धड़कना बंद हो गया। सर्दी पैरों से ऊपर चढ़ने लगी। एक तेजाबी ठंड थी यह, उसकी त्वचा को जला रही थी।

लिडिया सीधी बैठ गई। उससे कोई फायदा नहीं हुआ। पुनः उसने युवक-युवतियों को अपने सामने पाया, उनकी कुछ कहती हुई नजरें और रॉबर्ट, कैसे वह हंस रहा था। उसे अकल्पनीय की कल्पना अंत तक करनी होगीः उसकी मां ने सही कहा था। आने वाली रातें भी ऐसी ही होंगी। लिडिया बिस्तर से उठ गई, रॉबर्ट हिला और उसने नींद में उसांस भरी।

उसने सब से ऊपर से सफाई शुरू की, चौथी मंजिल से, जहां पहली दुछत्ती शुरू होती थी। घुटनों पर, सफेद गाउन में, वह काम करते-करते नीचे उतरती गई। हर मंजिल पर दो बार आठ-आठ सीढ़ियां थी, नीचे की मंजिल से पहले आखिरी हिस्से पर दस थीं। वह धीरे-धीरे नीचे बढ़ रही थी, रो रही थी; हर आंसू को फर्श चमकाने वाली मोम से ढक रही थी। जब वह नीचे पहुँची तो आंसू कहीं नहीं थे; सीढ़ियां सूर्य की पहली किरणों के नीचे दमक रही थीं।

उसकी त्वचा जड़ पड़ चुकी थी, शरीर सुन्न था; तेजाब काफी आगे तक उसे खा गया था भीतर तक। यही जलन अब उसके अस्तित्व का एक हिस्सा होगी।

जब लिडिया लौटी तो रॉबर्ट जाग रहा था। वह मैल से गंदी हो चुकी थी, उसके केश अव्यवस्थित ढंग से उसकी कमीज से चिपके हुए थे, परन्तु वह निर्मल आंखें लिये सर ऊंचा किए वहां खड़ी थी, ऐसी आंखें, जिनमें उसकी व्यथा का कोई चिह्न नहीं था।

रॉबर्ट आंसुओं की अपेक्षा कर रहा था और सोच-समझ कर नपे तुले स्पष्टीकरण देने की तैयारी कर रहा था; उसकी नजरों ने रॉबर्ट के मुंह पर ताला लगा दिया। उसे लिडिया से अंधे प्रेम की उम्मीद थी, इस तिरस्कारयुक्त गर्व की नहीं। वह उसके लिए कोई बखेड़ा नहीं खड़ा करेगी और न ही उसे उससे हमदर्दी चाहिए। उसने लिडिया की कुव्वत कम लगाई थी।

'' जो कुछ भी हालात हैं, उसमें हम खुश रहेंगे'', आख़िर उसने कहा और उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। उसने अपनी आंखें नीचे झुका लीं, ताकि लिडिया को परेशानी महसूस न

हो, और अपने नये पाजामे की भदमैली धारियों को देखने लगा। कमरे में सन्नाटा छाया रहा। जब उसने परेशान हो कर नजर ऊपर उठाई तो लिडिया अल्मारी के सामने खड़ी थी। उसने उसकी ओर पीठ कर ली और जोर से इस्त्री करते हुए उसने एक गहरे रंग के ऐप्रेन को छीज दिया था, फिर वह बाहर निकल गई।

लिडिया एक ही रात में बूढ़ी हो गई थी। उसे मासिक धर्म नहीं हुआ, उसे कोई परवाह नहीं थी। कई महीनों तक वह अपने बालों में सफेद रेशे गिनती रही, फिर उसने वह भी करना छोड़ दिया। परन्तु हर रविवार को उसने सीढ़ियों की सफाई करना कभी नहीं छोड़ा। रॉबर्ट का लाचार गुस्सा उसका एक मात्र पुरस्कार था।

स्लोवाक उपन्यास अंश

बर्लिन की दीवार के इस तरफ जोसेफ बानाश

वाशिंगटन 1968

जोसेफ बानाश **अनुवादः स्वाति यादव**

20 अगस्त को वाशिंगटन में दोपहर बाद 5 बजे का एक गरम दिन था। अमरीकी राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉन्सन अपनी मनपसंद व्हिस्की कट्टी सार्क पी रहा था। अपनी मनपसंद बास्केट बाल की नयी टीम सान दिएगो राकेट्स तथा अमरीका की मनपसंद टीम लोस एन्ज्लेस लेकर्स के मध्य हो रहे मैच को देख रहा था। खेल खास ही रोमांचक था, लेकिन सान दिएगो के छोकरे पहले मध्यांतर के बाद खेल में जरा से आगे थे, इस वजह से राष्ट्रपति का मूड अच्छा था। उसे थोड़ी खीझ लग रही थी कि सोवियत राजदूत को भी इसी वक्त आना था, लेकिन उसके लिए जरूरी था कि टेक्सास के बास्केटबाल के प्रशंसकों से अधिक वरीयता वह अपने सरकारी कामों को दे। उसका सचिव दोब्रिनिन को ओवल ऑफिस में ले कर आया, जहाँ वह पहले भी कई बार आ चुका थाः 6 सालों से वह अमरीका में सोवियत संघ का राजदूत था। राष्ट्रपति ने एक चौड़ी मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया। फिर राष्ट्रपति के सहयोगियों ने भी राजदूत का अभिवादन किया। सान दिएगो में अभी-अभी खेल के दूसरे मध्यांतर के बाद मैच शुरू हुआ था और दोब्रिनिन राष्ट्रपति को तब-तब उखड़ा हुआ महसूस कर रहा था, जब उसे स्वयं पर नियंत्रण नहीं रहता था और नयाचार के नियमों को भंग करते हुए वह टीवी के पर्दे पर नजर मारता था। दोब्रिनिन राष्ट्रपति की बास्केटबाल तथा सिगरेट वाली कमजोरी को जानता था। फिर भी उसे तब ऐसा लग रहा था कि राष्ट्रपति सिगरेटें कुछ ज्यादा ही पी रहा था।

"माफ कीजिये, मैं जरा तनाव में हूँ, हमारी टीम के पास लेकर्स को हराने का अच्छा मौका है। लगता तो ऐसे है कि लेकर्स वाले मैच जीत जायेंगे, लेकिन हमारी टीम यह उनके लिए मुश्किल बना देगी। पर फिर भी काम तो काम है न।" राष्ट्रपति ने खड़े होकर एक उसांस भर कर टीवी बंद कर दिया। "आपका परिचय मैं अपने सहयोगियोंराष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष रोस्टोव और अपने निजी सचिव जैक वैलेंटी से करवाता हूँ।"

दोब्रिनिन यह नहीं जानता था कि राष्ट्रपति के दफ्तर में लंच के दौरान राष्ट्रपति तथा उसके सुरक्षा एवम विदेश नीति के सलाहकारों के मध्य चेकोस्लाविया में रूस के संभावित आक्रमण के विषय पर कोई बात नहीं हुई थी। अमरीकी इस संभावना को कोई ज्यादा महत्व नहीं दे रहे थे। उनके लिए सुरक्षा से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण समस्याएं थीं विएतनाम-युद्ध तथा

निकट पूर्व में तनावपूर्ण स्थिति, जहाँ छः दिन के युद्ध का पहला वर्ष अभी-अभी पूरा हुआ था। उन्होंने विस्तारपूर्वक सोवियत संघ के साथ वार्ता की प्रक्रिया पर विचार-विमर्श किया था, इस लक्ष्य के साथ कि साल्ट (सामरिक शस्त्र सीमांकन) वार्ता में दोनों पक्षों की ओर से सामरिक हथियारों को सीमित रखने पर किसी निर्णय पर पहुंचा जा सके।

सोवियत राजदूत ने 20 अगस्त, 1968 को मध्य यूरोपीय समय के अनुसार रात दस बजे राष्ट्रपति के कमरे में प्रवेश किया था। मास्को से मिले निर्देशों के अनुसार उसने बिल्कुल इसी समय अमरीकी राष्ट्रपति को ''चेकोस्लाविया में कार्रवाई'' के बारे में सूचना देनी थी। उनकी युद्धनीतिक योजनाओं के अनुसार वे यह सोच कर चले थे कि उस समय सोवियत टैंक प्राग में पहुंचे ही होंगे। वे चेक नागरिकों की तरफ से भव्य स्वागत की उम्मीद लगा कर बैठे थे और शायद तुरंत सत्ता-परिवर्तन की, जिसके अंतर्गत अलोइस इन्द्रा के नेतृत्व में किसानोंम्मजदूरों की एक सरकार होगी।

प्रारंभिक औपचारिकताओं तथा उच्चतम सोवियत राजनैतिक प्रतिनिधि की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ दे चुकने के बाद दोब्रिनिन ने कूटनीतिक नोट राष्ट्रपति के सामने रखा।

उस नोट को, जिसमें सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्ष निकोलाई पोदगोर्नी ने अमरीकी राष्ट्रपति को सूचना दी थी कि 20 और 21 अगस्त के बीच की रात को वार्सा-संधि की सेनाओं ने चेकोस्लाविया में समाजवाद के समर्थन में सैनिक कार्रवाई की थी, अंत तक पढ़ लेने के बाद राष्ट्रपति ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, ''सूचना के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, महामहिम!''

राष्ट्रपति ने राजदूत को एक सिगरेट पेश की। राजदूत ने नम्रतापूर्वक धन्यवाद किया। ''जैक, उम्मीद है कि जो कुछ भी राजदूत साहब ने कहा है, आप ने नोट कर लिया है...''। राष्ट्रपति ने वैलेंटी की तरफ रुख किया। जैक के हाथ तनिक काँप रहे थे। उसने हामी भरी। राष्ट्रपति थोड़ी देर कुछ सोचने लगा, पहले रोस्तोव की तरफ देखा और फिर काफी देर सामने शून्य में ताकता रहा। दोब्रिनिन ने उसकी उग्र प्रतिक्रिया की अपेक्षा में माथे पर बल डाल लिए। मास्को की केन्द्रीय समिति से उसे निर्देश मिल चुका था कि अगर अमरीका का सर्वोच्च पदाधिकारी कटु आलोचना पर उतर आता है तो आधिकारिक मत को न प्रकट कर के अमरीका द्वारा विएतनाम में हस्तक्षेप के उदाहरण दे कर प्रतिवाद करे। वर्ना मास्को की सलाह थी कि संयम रखे, क्योंकि वे अमरीका को इससे ज्यादा नहीं उकसाना चाहते थे।

जॉन्सन कोई रस जैसी चीज खा रहा था। दोब्रिनिन उसके कुछ ज्यादा ही मांसल कानों को देख रहा था कि वे कैसे पंखे की तरह हिल रहे हैं।

''क्या रूमेनिया पर हमले का भी खतरा है?'' जॉन्सन ने पूछा।

''नहीं''

''चेकोस्लाविया में जो हुआ है, उसका असर एटमी हथियारों पर सीमा लगाने के लिए होने वाली वार्ता पर नहीं पड़ना चाहिए। हम विदेश नीति में इस पर अधिक वरीयता दे रहे हैं, और मुझे विश्वास है कि दुनिया इस बात को समझेगी...'', दायें-बाएं सर हिलाया उसने, फिर सहमति में सर हिलाया। ''कल सुबह हम डीन रस्क और दूसरे सलाहकारों के साथ आप

द्वारा दी गयी सूचना पर विचार-विमर्श करेंगे। जवाब आपको भेज दिया जायेगा।'' एक घूँट में वह बाकी व्हिस्की पी गया और जैक ने उसके गिलास में और व्हिस्की डाली। वह देख रहा था कि दोब्रिनिन का जाम भी खत्म हो गया था। सोवियत राजदूत ने आँख के इशारे से अगले जाम की स्वीकृति दी।

राष्ट्रपति ने अगली सिगरेट सुलगाई, धुआं छोड़ा और मुस्कराया। ''कल सोवियत संघ की मेरी यात्रा की घोषणा कर दी जायेगी। कल सुबह मैं कुछ मित्रों को नाश्ते पर बुला रहा हूँ, ताकि फिर मैं आपको यह खुशखबरी भेज सकूं। महामहिम, मुझे बड़ी खुशी होगी, अगर सार्वजनिक रूप से मुझ द्वारा यह बात खोलने से पहले आपकी सरकार मेरी यात्रा के बारे में मुझे एक वक्तव्य भेज सके। मेरा यह मत है कि यह यात्रा हम दोनों देशों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आइये, अपने महान और शक्तिशाली देशों के संबंध और भी सुदृढ़ होने पर एक जाम और पियें।'' दोब्रिनिन की आँखें तो फटी की फटी रह गयीं। उसे दुनिया की समझ नहीं आ रही थी। सोवियत-अमरीकी संबंधों के अच्छे से अच्छे विशेषज्ञों की एक पूरी टीम ने मास्को में बैठ कर तर्क-वितर्क करने की तैयारी की थी, जिन्हें वह अपनी पतलून की जेब में डाल कर लाया था। उनकी अब जरूरत नहीं रही थी। राष्ट्रपति ने दूसरी बार फिर उसके साथ जाम लिया। दोब्रिनिन रोस्तोव तथा वैलेंटी की नजरों में भी हैरत पढ़ सकता था। उसे राष्ट्रपति के आचरण से निराश सा होने का एहसास हो रहा था। उसे पहले उम्मीद थी कि हस्तक्षेप के पक्ष में लड़ने के लिए उसके उच्चतम नेता उसकी तारीफों के पुल बांधेंगे। और अब...फुस्स हो गया सब।

''अवश्य, सर। मैं पूरी कोशिश करूँगा कि कल सुबह 9 बजे से पहले वक्तव्य आपकी मेज पर हो। मैं पूरे विश्वास से आपको अभी से कह सकता हूँ कि वक्तव्य सकरात्मक होगा'', जिस यात्रा की योजना बनाई जा रही थी, उस पर राष्ट्रपति द्वारा दिलचस्पी दिखाए जाने के सन्दर्भ में उसका उत्तर था। फिर राष्ट्रपति उसे टेक्सास का एक मजेदार किस्सा सुनाने लगा। दोब्रिनिन एक ही घूँट में अपना व्हिस्की का गिलास गटक गया। अगला जाम राष्ट्रपति ने खुद उसके लिए बनाया। जॉन्सन स्पष्टतः अपने अच्छे मूड को छुपा नहीं पा रहा था। हालाँकि वह जानता था कि सोवियत संघ का सैनिक हस्तक्षेप शस्त्रों को सीमित करने के इकरारनामे को खटाई में डाल सकता था, फिर भी वह मारे खुशी के दोब्रिनिन को गले से लगा लेना चाहता था। दोब्रिनिन ने भी इस बारे में और कुछ नहीं सोचा। वह सोवियत राजनयिक सेवा के मजबूत से मजबूत स्तंभों में से एक था, विदेश सेवा का एक अनुशासित सैनिक, जो अपनी कोई राय होने के बावजूद उसे कभी प्रकट नहीं करता था। संतोषपूर्वक मुस्कराते राष्ट्रपति को देख कर वह सोच रहा था कि वह भी वही सोच रहा है, जो वह स्वयं सोच रहा है। क्रेमलिन में बैठे बेवकूफ अपने जग-जाहिर दुश्मन पर इससे बड़ा कोई एहसान नहीं कर सकते थे। सोवियत हमले के निर्णय के बारे में सुन कर जब उसका सहजबोध जगा था तो वह मन ही मन यह सोच कर मुस्करा रहा था कि कैसे वह अपना पद छोड़ते हुए अपना अंतिम वक्तव्य देगा। अब वह यह कल्पना करके खुश हो रहा था कि वाह, क्या तारीफ होगी उसकी मास्को में। अपनी सफलता पर वह एक नाटकीय रिपोर्ट लिखेगा और दिखाएगा कि कितनी बहादुरी

से वह चेकोस्लोवाकिया में रूसी हस्तक्षेप के पक्ष में लड़ा था।

''आदरणीय श्री कोसिजिन से ग्लास्बोरो में हुई भेंट की भीनी-भीनी यादें अब भी मेरे मन में हैं। उन्हें मेरी ओर से प्रणाम कहियेगा...'' रोस्तोव और भी हताश लग रहा था और राष्ट्रपति को टोकने से खुद को रोक रहा था। सोवियत राजदूत के जाते-जाते भी राष्ट्रपति बार-बार मास्को से जल्दी जवाब मंगवाने का अनुरोध कर रहा था और कह रहा था कि वह मास्को जाने का बड़ी बेकरारी से इंतजार कर रहा था। राजदूत के ओवल-ऑफिस से बाहर निकलते ही राष्ट्रपति ने टीवी फिर चला दिया। मैच खत्म होने को आ रहा था और लेकर्स की जीत के निश्चित आसार थे। फिर भी वह मुस्कराया। दोनों सहयोगियों को भी उसने व्हिस्की पेश की। "कल से पूरी दुनिया में मीडिया की सुर्खियों में हमारे विएतनाम-युद्ध की जगह चेकोस्लोवाकिया पर सोवियत संघ के हमले की खबर होगी। चीयर्स, जेंटलमेन!"

सोवियत दूतावास में पहुंचते ही दोब्रिनिन ने तुरंत गूढ़लेख में सन्देश भेजा, जिसमें उसने राष्ट्रपति के यहाँ अपने जाने के बारे में लिखा और उसकी रूस-यात्रा के सन्दर्भ में एक सकारात्मक वक्तव्य भेजने की सिफारिश की। सकारात्मक वक्तव्य तो वस्तुतः उसे कुछ घंटों में ही मिल गया। अपने सेक्रेटरी को फोन करके उसने उसे कहा कि वह डीन रस्क का नंबर मिलाये। बेसब्री से वह फोन पर इंतजार करता रहा और अपनी खुशी में उसने मास्को से लायी पारदर्शी वोदका का एक जाम पिया। मास्को में उन्होंने सपने में भी राष्ट्रपति की ऐसी सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की थी। जब सेक्रेटरी ने उसे विदेश मंत्रालय का नंबर मिला कर नहीं दिया तो वह तनाव में आ गया। सेक्रेटरी खुद उसके कमरे में आया। "क्या हुआ" दोब्रिनिन ने घबराहट में पूछा। "कामरेड राजदूत, आपको तुरंत विदेश मंत्रालय में बुलाया गया है। अभी-अभी हमें मंत्री रस्क साहब का दस्तखत किया एक नोट मिला है।" दोब्रिनिन ने सोचा कि विदेश मंत्रालय के विशेषज्ञ राष्ट्रपति से भिन्न मत पेश करेंगे। जॉन्सन कभी टेक्सास में एक नातजुर्बेकार किसान होता था और अमरीका की विदेश नीति परंपरागत रूप से कांग्रेस तय करती थी। वह उम्मीद कर रहा था कि वह विदेश मंत्री डीन रस्क को कोई ज्यादा तीखा वक्तव्य न देने के लिए पटा सकेगा। एहतियात के तौर पर उसने वे अनौपचारिक नोट साथ ले लिए, जिनका उसने राष्ट्रपति से बात करते हुए इस्तेमाल नहीं किया था।

डीन रस्क ने देर शाम के वक्त अपने दफ्तर में राजदूत का स्वागत किया। उसने दोब्रिनिन को सूचना दी कि वह उसी समय व्हाइट हॉउस से लौटा था, उसे अमरीकी सरकार का वक्तव्य देने के लिए। रस्क ने शांत स्वर में वक्तव्य पढ़ा, जिसमें लिखा था कि अमरीका के पास चेकोस्लोवाकिया के आधिकारिक प्रतिनिधियों द्वारा वार्सा-संधि की सेनाओं को निमंत्रण देने की कोई सूचना नहीं है। अंत में उसने राजदूत को राय दी कि बेहतर होगा कि दोनों पक्ष राष्ट्रपति की प्रायोजित रूस-यात्रा के मुद्दे पर अच्छी तरह से पुनर्विचार करें। दोब्रिनिन समझ गया कि राष्ट्रपति की यात्रा अभी टल गयी है।

कुछ दिनों बाद जॉन्सन अमरीकी सेनाध्यक्ष से मिला। दोनों का इस पर मतैक्य था कि वे किसी भी हाल में रूस के खिलाफ अपनी सेनाओं का इस्तेमाल नहीं करेंगे। जॉन्सन ने बल्कि आदेश किया कि आक्रमण की सार्वजानिक निंदा बिल्कुल न की जाए। कुछ-कुछ

मजाक में उसने यह भी जोड़ा, "उम्मीद है कि मास्को वाले इस चीज को समझेंगे कि हम अमरीकी लोग हिंसा में यकीन नहीं करते।"

स्वोलन (स्लोवकिया) 1968

कार्पातो-यूक्रेन जिले की वायुसेना का टुपोलेव विमान प्रशासनिक कर्मचारियों के साथ 23 अगस्त को शाम 8 बजे ऊशोगोरोद के फौजी हवाई-अड्डे पर उतरा। ग्रुप में ऊंचे अफ़सर थे और तीन लिपिक थे। उनमें से एक साशा थी। उसने वर्दी पहन रखी थी, जो उस पर खूब फब रही थी। किएव से आई उड़ान के दौरान अफ़सर लड़की से जरा हंसी-मजाक कर रहे थे, लेकिन अधिक समय वे खामोश ही रहे थे। साशा के तो जैसे आंसू टपकने को हो रहे थे। कभी उसके पिता ने चेकोस्लोवाकिया को आजादी दिलाने में मदद की थी और वह भी चेकों और स्लोवाकों की मदद करना चाहती थी। घर पर उसकी बहन ओला भी उसे विदा देने आई थी। उसने उसे एक कविता दी थी, जो उसे समझ नहीं आई थी, जिसे उसके मनपसंद कवि, एक ऐसे इंसान ने लिखा था, जिसने उसे जीने कि शक्ति दी थी, येवगेनी येव्तुशेंको, शीर्षक था, "प्राग में टैंक गश्त लगा रहे हैं।"

"देखो, टैंक सत्य को कुचलते हुए जा रहे हैं, समाचारपत्रों का सत्य नहीं, बल्कि सचमुच का सत्य...भय पर उज्जडता का साम्राज्य, किसी भूखे राक्षस की तरह अंतःकरण को, सम्मान को कुचल रहे हैं...टैंकों के खोलों में भय हिचकोले खा रहा है और उजड्डपन उसे बचा रहा है... कैसे जियूँगा मैं, अगर वे मुझसे मेरा विश्वास ही छीन लेंगे...यहाँ लेटा है रूसी कवि, प्राग में उसे टैंक कुचल गए हैं..." साशा समझी नहीं कि कैसे येव्तुशेंको जैसी शख्सियत वाला एक इंसान ऐसी कविता लिख सकता है, जिसमें वह रूस द्वारा स्नेहपात्र चेकोस्लोवाकिया को दी जा रही मदद की निंदा कर रहा है। जबसे उसे वायुसेना की टुकड़ी के साथ यहाँ भेजा गया है, राजनीतिज्ञों ने चेकोस्लोवाकिया के मामलों में पश्चिम के हस्तक्षेप के कई प्रमाण पेश किये हैं। किएव से प्रस्थान करने से पहले वायुसेनाध्यक्ष, लेफ्टीनेंट जनरल स्तेपानेंको, आया था, जो दो बार सोवियत संघ का हीरो रहा था और एक पुराना तजुर्बेकार आदमी था। उसके बारे में एक आम राय थी कि वह चेकों तथा स्लोवकों का एक सच्चा दोस्त था। अपने कानों से उसने उसे पंक्ति में खड़े एक सैनिक को कहते सुना था कि हमारे भाइयों को अब मदद की जरूरत थी। लेकिन फिर येव्तुशेंको की यह कविता क्यों?

ओला का कोक्टेबेल के डाकखाने में काम करते हुए यह पांचवां साल था। अपना तलाक होने के बाद वह अपनी बहन साशा को अक्सर मिलने आया करती थी। पहले ओला फेओदोसिया के डाकखाने में काम किया करती थी, लेकिन बाद में वह इस शांत कस्बे कोक्टेबेल में आ गयी थी। उसकी बहन को श्रेय जाता था कि साशा का सोवियत संघ के सभी महान साहित्यकारों से परिचय था। येव्तुशेंको उसे सबसे ज्यादा पसंद था। बहुत सारे रूसियों तथा यूक्रेनियों की तरह वह उसके प्रति अपार श्रद्धा रखती थी। येव्तुशेंको ओला के परिवार को जानता था और साशा उसका लिखा सब कुछ पढ़ती थी। वह ओला से बहुत स्नेह करता था और

उसके लिए मास्को से इत्र भी ले कर आता था। लेकिन यह जो हुआ था, उसकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थीः येव्तुशेंको द्वारा ब्रेजनेव को लिखे गए एक तार भेजने की वजह से ओला को नौकरी से निकाल दिया गया था। उसमें उसने चेकोस्लोवाकिया को रूसी मदद की आलोचना की थी। यह हो सकता है क्या कि यह इंसान साम्राज्यवादी प्रचार के झांसे में आ गया है? एक आदमी गलती कर सकता है, ज्यादा आदमी भी कर सकते हैं, लेकिन हजारों? सोवियत कूटनीति, गुप्तचर सेवा, चेकोस्लोवाकी मित्र, चेकोस्लोवाकिया से आती सूचनाएँः सभी से मालूम पड़ता था कि जो कुछ भी किया जा रहा था, सही किया जा रहा था और येव्तुशेंको विरोध कर रहा है! साशा को महसूस हुआ की इस कवि से उसका आंतरिक बंधन टूटना शुरू हो चुका था। जिस येव्तुशेंको की वह पूजा करती थी, वह नहीं चाहता था कि वह अपने प्रिय जोसेफ की मदद करे। खुदा का शुक्र है कि येव्तुशेंको ने एक अच्छे आदमी जैसा आचरण किया था और लेफ्टीनेंट जनरल रूबिन्स्कीय की सहायता से ओला बर्खास्तगी रद्द करवाने में सफल हुई थी। उसे अपनी नौकरी फिर से मिल गयी थी। येव्तुशेंको शायद समझ गया था कि उसने बहुत ज्यादा पी ली थी और इस वजह से गड़बड़ कर गया था। लेखक अक्सर ज्यादा पी जाते हैं। साशा सोच रही थी और उसे सबसे बुरी यह बात लगी कि कोई ऐसा नहीं था, जिससे वह बात कर सकती। जल्द ही वे स्लिआक के विमानस्थल पर उतरेंगे और उन्हें प्राप्त सूचनाओं के अनुसार, वहाँ युद्ध की तैयारियां उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। मेजर कुलिकिन उसे कह रहा था कि उसे डरने की जरूरत नहीं है, उन्हें सीधे आला कमान के अफसर के सहयोगी अफसर के पास ले जाया जायेगा। सेना को पहले गोली न चलाने का आदेश था।

"देखो, टैंकों में बैठे सैनिकों के ऊपर से टैंक निकल रहे हैं...देखो, टैंकों में बैठे सैनिकों के ऊपर से टैंक निकल रहे हैं..." येव्तुशेंको की कविताएँ उसके मस्तिष्क में गूँज रही थीं।

यह कल्पना करके वह मुस्करा पड़ी कि वह जोसेफ से मिल सकेगी। वह जानती थी कि वह ब्राटीस्लावा में रहता है, स्वोलेन से सिर्फ दो सौ किलोमीटर दूर, जहाँ उन्हें ठहराया जायेगा। "जिंदगी में कभी-कभी चमत्कार भी होते हैं..."

कुर्सी पर सोवियत अखबार पड़े थे, जो उन क्रांति-विरोधियों की खबरों से भरे पड़े थे, जो चेकोस्लावाकों को पूंजीवादियों की गोद में बिठाना चाहते थे। तास समाचार एजेंसी की एक रिपोर्ट के अनुसार पश्चिम चेकोस्लोवाकिया में एक भीड़ ने एक कम्युनिस्ट कार्यकर्ता को पीट-पीट कर मार डाला था, क्योंकि उसने पिए हुए कुछ लड़कों को घर के बाहर अमरीकी झंडा नहीं लहराने दिया था। हालाँकि खबरें बहुत ड्रामाई लग रही थीं, उनमें कुछ अजीब भी था। बाकी सहयोगियों ने भी देखा कि ऐसा कहीं भी नहीं लिखा था कि चेक या स्लोवाक जनता ने क्रांति-विरोधियों का विरोध किया हो। खबरें कुछ ऐसे मुठ्ठी भर गैर-जिम्मेदार लोगों के बारे में थीं, जिन्हें सीआईए से पैसा मिल रहा था। उसे अजीब लगा कि चेकोस्लोवाक खुद को थोड़े से लोगों से नहीं बचा पा रहे थे। अखबारों में उन सोवियत सैनिकों के उत्साहपूर्ण स्वागत के चित्र थे, जो दो दिन पहले सीमा लाँघ कर यहाँ आये थे। दो-चार क्रांति-विरोधियों के खिलाफ एलीट डिवीजन गार्डों, और खुदा जाने और कितनी डिवीजनों, टैंकों, हवाई जहाजों और इतनी सारी तकनीक और सैनिकों की जरूरत तो नहीं होती। इस तथ्य को दृष्टिगत

रखते हुए कि हस्तक्षेप शुरू होने के तीन दिन बाद ही प्रशासकीय बल भी चेकोस्लोवाकिया भेज दिया गया था, इस ओर संकेत करता था कि कब्जा लंबे समय तक रहेगा।

24 अगस्त को 11 बजे वे स्लिआक पहुंचे थे। हवाई अड्डे पर सिर्फ सोवियत मिग, कुछ परिवहन विमान और एक टुपोलेव खड़े थे। वे तैयार खड़े हथियारबंद ट्रकों में चढ़ गए और लगभग 12 मिनटों बाद वे स्वोलन की मिलिटरी बैरकों में थे। साशा लातिन की इबारत को पढ़ सकती थी और इमारत की दीवार पर लिखा था "येगोरोव की बैरकें"। उसे याद आया कि येगोरोव आजादी के लिए लड़ने वाले गुरिल्ला दल का नेता था। तीनों लड़कियों ने मिल कर एक कमरा ले लिया। फ्लाइट कमांडर मेर कुजनेकोव ने उन्हें बताया कि जब तक उन्हें बुलाया न जाये वे कहीं जा नहीं सकतीं। समय गुजरता गया, शाम हो चुकी थी और कोई भी उनमें दिलचस्पी नहीं ले रहा था। उन्हें कोई इल्म नहीं था कि वे कहाँ थीं। बाहर शांति थी, गोलियाँ नहीं चल रही थीं, एक विमान का अजीब शोर, जो स्टार्ट हो रहा था या उतर रहा था। किस्मत से वे डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ ले कर आयीं थीं और उन्हें खाने की कोई तकलीफ नहीं हुई। नल से आता पानी स्वादिष्ट था। मेर कुजनेकोव ने आकर साशा को अपने पास आने को कहा। वह एक कामचलाऊ दफ्तर में बैठा था, जिस की दीवारों पर अब भी चेकोस्लोवाकी नेताओं के फटे हुए फोटो लटके हुए थे।

"अलेग्जान्द्रा जोसेफोव्ना, आपको स्लोवाकी तो आती होगी?", वह बोला।

"थोड़ी-थोड़ी, लेकिन बोलनी इतनी अच्छी नहीं आती।"

"कोई बात नहीं। यह कैप्टेन युर्सिनोव है", उसने वर्दी में सजे एक अफसर का परिचय दिया। "आप इनके साथ शहर जाएँगी। हमें खाने-पीने के सामान का इंतजाम करना होगा।"

"जो हुक्म, कामरेड मेजर", साशा खड़ी हो गयी, युर्सिनोव से हाथ मिला कर वह उसके साथ बाहर निकल गयी।

वह तनिक घबराई थी। वे एक बख्तरबंद गाड़ी में बैठ गए, जिसमें 6 बंदूकची बैठे थे।

"मामला क्या इतना खतरनाक है कि हमें बख्तरबंद गाड़ी की जरूरत है?", उसने पूछा।

"इतना तो नहीं है, पर न जाने कब क्या हो जाये। पहले तीन दिन अच्छे नहीं रहे। हम पर पत्थर फेंके गए हैं, पेट्रोल भरी बोतलें फेंकी गयी हैं, पर इससे ज्यादा कुछ नहीं हुआ", कैप्टेन ने सिगरेट का धुआं फेंकते हुए कहा। बंद गाड़ी में धुएँ से उसे परेशानी हो रही थी। उसकी तबियत खराब हो रही थी। कैप्टेन ने यह देख लिया और सिगरेट मसल कर फेंक दी।

"शुक्रिया, क्रांति-विरोधियों पर क्या आपने काबू पा लिया है?", उसने पूछा।

"अब तक तो कोई नजर नहीं आये। लेकिन हम हर चीज के लिए तैयार हैं।"

वह सबसे पहले मिलने वाले स्लोवाकों का बेसब्री से इंतजार कर रही थी। मन ही मन उसने वे स्लोवाकी शब्द सोच कर रख लिए थे, जो वह मिलने पर उनसे बोलेगी।

"कैप्टेन, हम यहाँ हैं", चालक ने घोषणा की। गाड़ी खड़ी हो गई, पैदल सैनिक उठी हुई बन्दूकें लिए पहले उतरे।

"हम गल्ले की थोक की दुकान में जायेंगे। स्लोवाकी कामरेड तब तक हमें खाने का जरूरी सामान देंगे, जब तक हमारी अपनी सप्लाई नहीं आ जाती।" उसने चारों तरफ देखा और जब उसने पाया कि स्थिति सामान्य है तो उसने साशा को इशारा किया। वह चेहरे पर मुस्कान लिए नीचे उतरी, वह एक सुन्दर शहर के केन्द्र में उतरे थे और बाईं तरफ एक कैथोलिक चर्च था। लेकिन एक पल बाद ही वह संजीदा हो गई, क्योंकि दाहिनी ओर पैदल चल रहे लोग उन्हें मैत्रीभाव से नहीं देख रहे थे। दीवारों पर पोस्टर चिपके हुए थे, उनमें से ज्यादातर रूसी में थे। "ईवान, जा अपने घर", "घर जाओ अपनी बीवियों के पास", "सब बेड़ागर्क क्यों कर दिया तुम लोगों ने?," ब्रेजनेव पागल हो गया है। साशा ऐसे चल रही थी, मानो उस पर किसी ने वशीकरण मन्त्र पढ़ दिया हो, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। गले लगाने तथा नमक और रोटी के साथ स्वागत करने के बजाय, जैसा कि वह मास्को के प्रावदा अखबार में देखा करती थी, वह इस समय उदास, गुस्से से भरे लोगों के बीच थी। जब वे बाजार में थोक की दुकान के पिछले दरवाजे पर पहुंच रहे तो उत्तेजित लोगों की भीड़ से होते हुए गुज़र रहे थे।

"घर जाओ अपने। हमारा खाने-पीने का सामान मत चुराओ। चोरो!"

"हम तुम्हारे भाई हैं...", साशा ने तब प्रतिवाद करने की कोशिश की, जब उसे कोई भोथरी सी चीज, शायद कोई छतरी, चेहरे पर आ कर लगी। "घर को भाग, रूसी सुअरिया। तुम लोग हमारे भाई नहीं हो!" छतरी उसके चश्मे पर लगी थी, जो नीचे गिर कर टूट गया था। हतप्रभ होकर उसने उसे नीचे से उठाया। "यह तुम्हारा ही है, स्लोवाकी...", घबराये हुए उसने उसे हाथ में पकड़ रखा था। उसके साथ आये सैनिकों में से एक ने बन्दूक का कुन्दा उसके कंधे पर मारा। दर्द से चिल्लाते हुए वह भागा और मुठ्ठी बाँध कर उन्हें धमकाता गया।

"आइये, अलेग्जान्द्रा जोसेफोव्ना, तेजी से।" वे स्टोर में घुस गए, जहाँ शांति थी। बाहर आवाजें ऊंची होती जा रहीं थीं। लोग चिल्ला रहे थे कि वे लोग अपने घर जाएँ। साशा नीचे बैठ गई। उसका पूरा बदन कांप रहा था। उसकी तबियत खराब हो रही थी। घबराहट में उसने उलटी कर दी। कैप्टेन उसे गोदाम के दफ्तर में ले गया। एक बूढ़ी औरत से मुखातिब हुआ, जो कमरे की सफाई कर रही थी। "इसे दें, प्लीज, पानी।" औरत एक गिलास पानी ले आई। साशा ने एक घूँट पिया। औरत ने उसकी फौजी टोपी लेकर उसके बालों पर से पसीना पोंछा। उसने आभारयुक्त दृष्टि से औरत को देखा।

"लड़की, तू कहाँ से आई है?", उसने पूछा।

"कार्पातो-यूक्रेन से।"

"और तुम लोग यहाँ क्या लेने आये हो?"

"हम तुम्हारी मदद करना चाहते हैं।" औरत सुन कर हैरान हो गयी।

"तुझे स्लोवाकी आती है?"

"हाँ, मेरे माता-पिता स्लोवाकिया से हैं।"

"तेरा नाम क्या है?"

"अलेग्जान्द्रा"

"सुन्दर नाम है। और मेरा नाम है सोफिया। सोफिया। सोफिया से, जैसे लोरेन [1], जानती है?" बाहर लोग आवाजें मार रहे थे और टीन के दरवाजे को हथौड़े से पीट रहे थे। अचानक गोली चलने की आवाज आई। एकदम सन्नाटा छा गया। एक रूसी सैनिक ने हवा में गोली चलाई थी और लोग हर दिशा में भागने लगे थे। वह फिर से बैठ गयी।

"ये लोग हमें पसंद क्यों नहीं करते?" औरत उसकी बगल में बैठ गई और स्नेहपूर्वक उसने उसके हाथ अपने हाथों में ले लिए। साशा भी सहजभाव से उसके हाथ सहलाने लगी। वे उसकी माँ के हाथों की तरह झुर्रियों भरे तथा खुरदरे थे। औरत ने बोलना शुरू कर दिया। उसने बताया कि कैसे 1945 में येगोरोव सैन्यदल के एक रूसी गुरिल्ला सैनिक ने उसके पति की जान बचाई थी। खास कर इसीलिए वह सभी रूसियों को पसंद करती थी। लेकिन जब से चेकोस्लोवाकिया पर हमला हुआ है तब से उसका कलेजा जख्मी है।

"हां हां मेरी बच्ची, मेरे दिल को जख्म लगे हैं। तुम्हें हमारे साथ यह नहीं करना चाहिए था! सच में नहीं।" साशा सुनती रही। औरत सुनाती गयी, सुनाती गई और साशा ने रोना शुरू कर दिया। बैरकों में लौटने पर वह अपने फौजी झोले पर लेट कर रोने लगी। दूसरी लड़कियां उसे ऐसे देख रहीं थीं, मानो वह पागल हो गई हो। कांपते हुए हाथों से उसने "प्रावदा" वाली वे फोटो निकालीं, जिनमें चेकोस्लोवाकिया में लोग सोवियत सैनिकों का हार्दिक स्वागत कर रहे थे। काफी देर तक वह ध्यान से उन फोटुओं को देखती रही। सड़क पर दिखाई दे रहे लोगों की पोशाक भिन्न थी, औरतों का केश-विन्यास दूसरा था। अब उसे समझ में आया, ये 1945 में खींची गयी फोटुएं थीं। बिस्तर पर लेट कर वह येव्तुशेंको की कविता पढ़ने लगी। वह देख रही थी कि लड़कियां उसे घूर रही थीं, वह कविता को छुपाना चाहती थी, परन्तु अंततः उसने उसे मेज पर रख दिया। फिर उसकी तबियत खराब होने लगी। वह टायलेट में गई। लौटी तो उसने देखा कि कविता वाला कागज दूसरी जगह पर पड़ा था।

वह बिस्तर के सिरे पर बैठ गयी। एक ही मिनट में उसने फैसला ले लिया कि वह मेजर कुस्नेकोव को जाकर कहेगी कि वह इस छल का हिस्सा नहीं बन सकती। वह सैनिक सेवा से बर्खास्त किये जाने की अर्जी देगी। लेकिन फिर उसने इस निर्णय के संभावित परिणामों के बारे में सोचा। हे भगवन, काश हमें यह सब तब पता होता, जब हमने ऊश्गोरोड की बैरकों में सोवियत संघ के प्रति निष्ठा की शपथ ली थी। उनके सामने लेफ्टिनेंट जनरल स्तेपनेंको राजनैतिक प्रतिनिधि के साथ खड़ा था और उसने सबको इसके लिए दो मिनट का वक्त दिया था कि जिस के पास भी इस अन्तर्राष्ट्रीय सहायता अभियान में भाग न लेने की कोई वजह हो वह आगे आ जाये। कोई भी आगे नहीं आया। और अगर कोई आगे आ जाता तो इसे शपथ का उल्लंघन माना जाता और सब जानते थे कि इसकी सजा होती कारावास। लेकिन वह तो आगे आना ही नहीं चाहती थी, उसे पूरा विश्वास था कि वह जो कर रही है

---

1. यहां मशहूर इतालवी अभिनेत्री सोफिया लॉरेन का जिक्र है।

सही कर रही है। काश मुझे मालूम होता, उसने ठंडी सांस भरी। लेकिन मुझे अगर मालूम होता तो क्या मैं तब भी आगे आती? यह प्रश्न उसे कचोट रहा था और उसकी आँखों से बेबसी के अश्क गालों पर गिर रहे थेः हे ईश्वर, कुछ ऐसा कर कि मैं घायल हो जाऊँ, या कुछ और ऐसा हो जाये कि ये मुझे घर भेज दें। मैं इनकी करनी में शामिल नहीं होना चाहती।

मास्को 1989-91

1989 की पतझड़ में सोविएत गुप्तचर संस्था के. जी. बी. के प्रधान व्लादिमीर क्रुत्स्कोव ने, जिसे गोर्बाचोव ने इस पद पर नियुक्त किया था, क्रेमलिन के प्रमुख का ध्यान पूर्वी जर्मनी में बनते खराब हालात की ओर आकर्षित किया, जहाँ पुनरेकन के पक्ष में आवाजें दिन पर दिन ऊंची होती जा रही थीं। गोर्बाचोव समझता था कि जर्मनी को एक करने के अलावा और कोई चारा ही नहीं था और फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका के नकारात्मक रुख के बावजूद उसने जर्मन जनता की आवाज दबाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। दूसरी तरफ वह अमरीका से कोई टकराव भी नहीं चाहता था और अगर इस पुनरेकन को कोई रोक सकता था तो वह थी पूर्वी जर्मनी में तैनात सशस्त्र रूसी सेना।

केजीबी प्रमुख तथा प्रमुख सोविएत रूढ़िवादी नेता ईराक-युद्ध में गोर्बाचोव तथा विदेश मंत्री शेवारनाद्जे द्वारा अमरीका को दिए गए कूटनीतिक समर्थन को सोविएत संघ के लिए एक अपमान का विषय समझते थे। वे गोर्बाचोव को इस लिए भी माफ नहीं कर सकते थे कि उसने बड़े ओछेपन से पूर्वी जर्मनी को पश्चिम के हवाले कर दिया था। यहाँ तक कि जर्मन चांसलर हेल्मुट कोल भी स्वयं को लंबी, मुश्किल सौदेबाजी के लिए तैयार कर रहा था और हैरान था देखकर कि कितनी आसानी से गोर्बाचोव पूर्व तथा पश्चिम जर्मनी की नाटो की सदस्यता के लिए भी सहमत हो गया था।

इस दौरान गोर्बाचोव रूसी संघ की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्ष येल्स्तीन के, जिसने कम्युनिसट पार्टी से इस्तीफा दे दिया था, सुधारों के विरुद्ध आंदोलन पर नजर रखे हुए था। येल्स्तीन समझता था कि सोविएत संघ का सितारा डूब रहा था और रूस का सितारा चढ़ रहा था। तिरछे कंधे और आम जनता जैसे तौर-तरीकों वाला भूतपूर्व वालीबॉल खिलाडी जल्दी ही रूस में बहुत लोकप्रिय बन गया था। पार्टी के रूढ़िवादी सदस्य केजीबी के साथ मिल कर गोर्बाचोव पर दबाव डाल रहे थे कि वह सुधार लाने की कोशिशों के खिलाफ काम करे।

बाल्टिक देशों में, बल्कि यूक्रेन, जार्जिया, आर्मेनिया और अजरबेजान में भी, रूस-विरोधी भावनाएं बढ़ती जा रही थीं। येल्स्तीन जानता था कि इस प्रक्रिया पर रोक नहीं लगाई जा सकती और वह सोविएत संघ के विघटन के पक्ष में बोल रहा था, जिससे बाजार-व्यवस्था लागू करने कि प्रक्रिया में तेजी आती। सबसे पहला धक्का गोर्बाचोव को अपने निकटतम सहयोगी विदेश मंत्री शेवरनाद्जे के इस्तीफे से लगा, जो दो साल बाद स्वाधीन जार्जिया का प्रथम राष्ट्रपति बना था। जब उसने संसद में अपने भाषण में आने वाली तानाशाही के बारे में ये शब्द कहे थेः "मैं आने वाली तानाशाही से सहमत नहीं हूँ। कोई नहीं जानता कि कौन तानाशाह बनने वाला है।", तो तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उसके कथन का स्वागत किया गया था।

केजीबी गोर्बाचोव पर आपातकालीन स्थिति की घोषणा करने का और किसी भी खिलाफत को कुचलने का दबाव डाल रही थी। मिखाइल सेर्गेविच क्रेमलिन के गलियारों में व्यथित होकर घूम रहा था और खुद से कह रहा था, "मैं एक बुरा जार हूँ। अच्छे जार को हत्या करने में कोई तकलीफ नहीं होती! मैं तानाशाह नहीं हूँ!"

और उधर केजीबी आल्फा के फौजी एजेंट जनवरी के मध्य में लिथुआनिया, लाटविया तथा एस्टोनिया की स्वतंत्र सरकारों को गिराने का प्रयास कर रहे थे। गोर्बाचोव जब इधर उनकी कोशिशों में शामिल थे तो उधर येल्स्तीन ने लाटविया जा कर उनकी आजादी के लिए अपना समर्थन प्रकट किया। 12 जून, 1991 को येल्स्तीन रूस का राष्ट्रपति चुन लिया गया। पोलिटब्यूरो के भूतपूर्व सदस्य तथा सोविएत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के मास्को संगठन के अध्यक्ष ने राष्ट्रपति पद की शपथ ग्लिंका के ओपेरा गीत "जीवन जार का" की धुन के साथ ली। सोविएत संघ के विघटन का वक्त नजदीक आ रहा था। केजीबी का सब्र खत्म हो गया था। 5 अगस्त को, गोर्बाचोव के क्रीमिया जाने के एक दिन बाद, जहाँ वह अक्सर छुट्टियों में जाया करता था, उसका बॉस क्रुत्स्कोव और गृह मंत्री बोरिस पूगो मास्को नगर की सीमा पर स्थित केजीबी के सैनिटोरियम में आपस में मिले। केजीबी-प्रमुख ने लेफोर्तोवो की जेल में तभी-तभी गिरफ्तार किए गए सरकार के उच्चतम प्रतिनिधि के लिए दो मंजिलें खाली करवा ली थीं।

18 अगस्त को गोर्बाचोव के सहयोगी उससे यह कहने के लिए गए कि वह अपने सारे अधिकार समिति के हाथ में दे दे। वर्ना... उसे क्रीमिया में ही नजरबंद रखा गया और उसका स्वास्थ्य ठीक न होने के नाम पर उसे उसके पद के लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया। षड्यंत्रकारियों के अगुआ क्रेमलिन के दफ्तर-नं. 49 में मिले, जिसमें उप राष्ट्रपति यानायेव रहता था, जो कामचलाऊ समिति के शीर्ष पर था। विधि का विधान देखिये कि स्टालिन के राज में इस दफ्तर में खुफिया पुलिस का प्रमुख बेरिया बैठता था। यानायेव एक कमजोर किस्म का बंदा था, ज्यादातर टुन्न रहता था। सिगरेटों और वोदका की बोतलों के बीच उसने गोर्बाचोव के अधिकार छीनने की डिक्री पर दस्तखत किये। बाद में इन रुढ़िवादियों ने साबित किया कि वे महज ऐसे नालायक बुड्ढों के एक गिरोह से बढ़ कर नहीं थे, जो कोई आमूल परिवर्तन लाने योग्य कार्रवाई करने के काबिल होते। केजीबी के अधिकतर अफसर उनका समर्थन नहीं कर रहे थे।

बोरिस येल्स्तीन के दृढ़ रहने के कारण बलपूर्वक सत्ता-परिवर्तन का प्रयास असफल हो गया। वह सीधा संसद में आया, जहाँ से उसने विद्रोहियों तथा उनके समर्थकों के विरुद्ध कड़े कदम उठाने की घोषणा की। एक टैंक में खड़े होकर उसने जनता के समक्ष एक जोरदार भाषण दिया। फिर वोदका के दो गिलासों के बीच उसने केजीबी के क्षेत्रीय प्रमुखों को फोन किया। शुरुआत उसने सेंट पीटर्सबर्ग से की, जहाँ व्लादिमीर पूटिन पदासीन था, जिसने सत्ता-परिवर्तन के प्रयासों का एक हिस्सा बनने से इंकार कर दिया। गडबड़ी के इस वक्त का

फायदा उठाते हुए लाटविया तथा एस्टोनिया ने अपनी स्वाधीनता की घोषणा कर दी। गृहमंत्री पूगो ने आत्महत्या कर ली। दो दिन बाद येल्स्तीन ने रूस की धरती पर कम्युनिस्ट पार्टी की गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। अगले दिन गोर्बाचोव ने पार्टी के महासचिव के पद से भी इस्तीफा दे दिया।

मास्को की जोश से भरी जनता ने तख्ता पलटने की इस नाकामयाब कोशिश के बाद लुब्यांका चौक पर केजीबी के केन्द्रीय कार्यालय के सामने भीड़ लगा दी और केजीबी के संस्थापक फेलिक्स जेर्शिन्सकी की प्रतिमा को उखाड़ कर नीचे फेंक दिया।

चार माह बाद यह महाशक्ति जिंदगी और मौत की लड़ाई लड़ रही थी। 6 सितम्बर, 1991 को मास्को ने लाटविया, लिथुआनिया तथा एस्टोनिया की आजादी पर मुहर लगा दी। यूक्रेनियों ने भी एक जनमतसंग्रह करवा कर सोविएत संघ से आजाद होने का फैसला ले लिया। 25 दिसंबर, क्रिसमिस के पहले दिन गोर्बाचोव ने सोविएत संघ के राष्ट्रपति के पद से त्यागपत्र दे दिया। 26 दिसंबर को सोविएत संघ की सुप्रीम सोविएत की अंतिम बैठक में सिर्फ एक ही मुद्दे पर फैसला होना था और वह था सोविएत संघ के छिन्न-भिन्न हो जाने को स्वीकृति देना। 374 सांसदों में से सिर्फ 42 ही वहां उपस्थित थे, जिन्होंने यह फैसला लिया। इस दिन से क्रेमलिन पर लाल सोविएत झंडे की बजाय रूसी झंडा लहर रहा है। कम्युनिस्ट पार्टी के शासन के 74 सालों का अंत हो चुका है।